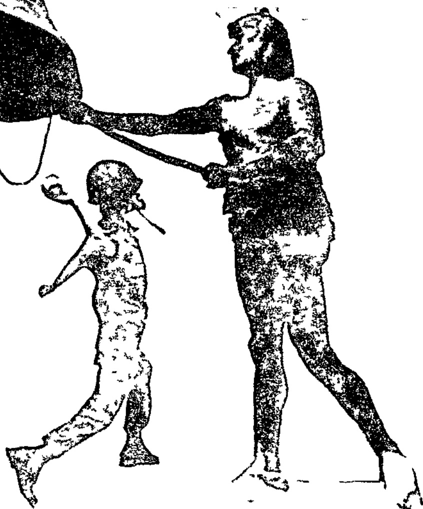
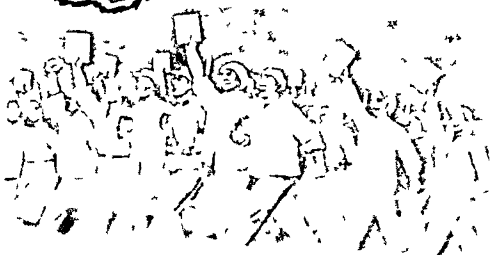
विश्व-प्रसिद्ध

जन-क्रांतियाँ





विश्व-प्रसिद्ध
जन-क्रांतियाँ

लेखक
अभय कुमार दुबे

प्रकाशक

फैमिली बुक्स प्रा लिमिटेड
F 2/16 अंसारी रोड, दरियागंज नई दिल्ली 110002.

वितरक

पुस्तक महल खारी बावली, दिल्ली 110006



प्रकाशक

फैमिली बुक्स प्राइवेट लिमिटेड

F 2/16 अंसारी रोड दरियागंज, नई दिल्ली 110002

वितरक

पुस्तक महल, दिल्ली-110006

विक्रय केन्द्र

1 6686 खारी बावली दिल्ली 110006 ——————— फोन 239314 2911979

2 10 B नेताजी सुभाष मार्ग दरियागंज नई दिल्ली 110002 ——फोन 3268292 93 3279900

प्रशासनिक कार्यालय

F 2/16 अंसारी रोड दरियागंज नई दिल्ली 110002

फोन 3276539 3272783 84

शाखा कार्यालय

22/2 मिशन रोड (शामा राव कम्पाउंड) बंगलौर 560027 फोन 234025

तृतीय संस्करण अक्तूबर 1991

सजिल्द लायब्रेरी संस्करण 36/-

मुद्रक क्वालिटी ऑफसैट प्रैस नई दिल्ली

प्रकाशकीय

आज की दुनिया तेजी से दौड रही है। आज के पाठक को ऐसे साहित्य की आवश्यकता है जो न केवल उसका मनोरजन करे अपितु उसकी ज्ञान-पिपासा को भी शात करे। हमारे प्रकाशनों मे इन्ही दोनो का सगम मिलता है। सुरुचिपूर्ण, कलात्मक एव ज्ञान-विज्ञान से युक्त हमारी पुस्तकों की प्रामाणिक सामग्री की लेखन-शैली ऐसी होती है कि एक बार उन्हें कोई पढ़ना शुरू कर दे तो पढ़ता ही चला जाये और दूसरी ओर दाम इतने वाजिब हाते हैं कि साधारणतम आय वर्ग का पाठक भी उसे खरीद पाये। यही कारण है कि आज हमारी पुस्तकें पॉकेट बुक्स से बाजी लेती हुई लोकप्रियता एव विक्रय के नये प्रतिमान स्थापित करती जा रही हैं।

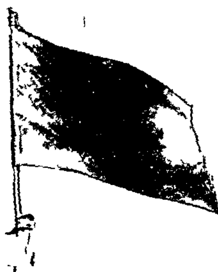
कुछ वर्ष पूर्व ज्ञान एव चिंतन के धरातल पर एक औसत पाठक को अतर्राष्ट्रीय घटनाचक्र से जोडकर उसकी चेतना को प्रबुद्ध करते हुए, उसके ज्ञानक्षेत्र का चहुमुखी विस्तार करने के उद्देश्य से प्रारभ की गयी ***विश्व-प्रसिद्ध शृखला*** अब निर्विवाद रूप से स्थापित हो चुकी है। लाखों-लाख पाठकों द्वारा इसे अब तक पढ़ा एव सराहा जा चुका है और उनमें जैसे इस शृखला की प्रत्येक पुस्तक को सग्रह करने की होड-सी लग चुकी है। दरअसल इस शृखला में प्रकाशित प्रत्येक पुस्तक अपन क्षेत्र से सबधित सभी उल्लेखनीय पक्षा का पूणरूप से उजागर करने वाला एक सचित्र ***मिनि एनसाइक्लोपीडिया*** है।

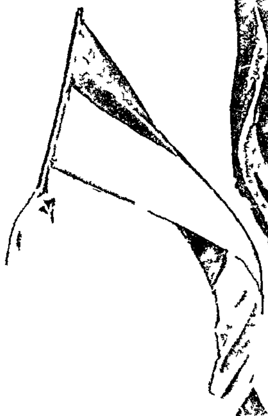
प्रस्तुत पुस्तक ***विश्व-प्रसिद्ध जन-क्रातिया*** इस शृखला की 25वी कडी है। पुस्तक मे 73 ईस्वी पूर्व **रोम** मे स्पार्टाकस नामक दास के नतत्व में हुए गुलाम-विद्रोह से लेकर **इग्लैंड, अमरीका, फ्रास, यूनान, भारत, इटली, सोवियत रूस, तुर्की, चीन, क्यूबा, वियतनाम** सहित 20वी शताब्दी तक की अनेक महान जन-क्रातियो की अमर-गाथाए प्रस्तुत की गयी हें। लगभग 200 दुर्लभ चित्रो एव प्रामाणिक पाठ्य-सामग्री से युक्त यह पुस्तक एक साधारण पुस्तक न होकर महान क्रातियो पर विशेष रूप से तैयार कराया गया एक अनूठा ऐतिहासिक दस्तावेज है।

इस पुस्तक की रचना में विशेषकर चित्रों एव नक्शो आदि के लिए सदर्भ ग्रन्था के रूप में जिन विभिन्न देशी-विदेशी पुस्तकों की सहायता ली गयी है, उन सभी के लेखको एव प्रकाशका के हम हार्दिक आभारी हैं। कृपया पुस्तक के सबध में अपनी सम्मति अवश्य भेजे।

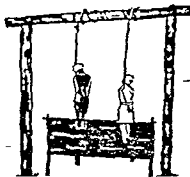
—प्रकाशक

क्रांति-क्रम









गुलाम-विद्रोह
(ईसा से 73 वर्ष पूर्व)

गृह-युद्ध में घिरे हुए पतनशील रोमन साम्राज्य के खिलाफ स्पार्टाकस नामक एक थ्रेसियन गुलाम के नेतृत्व में तीसरा गुलाम-विद्रोह दुनिया में जन-क्रांति की पहली मिसाल मानी जाती है। स्पार्टाकस ने रोमन सेनाओं को बुरी तरह शिकस्त देकर लाखों गुलामों की परतंत्रता की बेड़ियां काट डालीं। सेनापति क्रैसस के हाथों एल्पाइन दर्रों के मैदान में स्पार्टाकस को मात खानी पड़ी और छह हजार गुलाम योद्धा नृशंसतापूर्वक रोम से कापुआ जाने वाली सड़क के दोनों ओर सलीबों पर लटका दिये गये। अपनी नाकामयाबी के बावजूद स्पार्टाकस की विद्रोह की कहानी आज तक अमर है।

शोषण, अन्याय और दमन के खिलाफ बगावत और युद्ध की शुरुआत गुलामों के विद्रोह से होती है। गुलाम—जो रोमन साम्राज्य की सारी ताकत और वैभव के आधार थे। गुलाम—जो दास-मालिकों के लिए उत्पादन के बोलने वाले औजार थे। गुलाम—जिनकी जिंदगी का एकमात्र मकसद मंडी में बिकना और अपने मालिक की आज्ञा का पालन करते हुए मर जाना मात्र था। गुलामों ने अपनी इस दारुण दशा से उबरने के लिए तीन बड़े विद्रोह किये जिनमें सबसे प्रभावशाली तीसरा विद्रोह ईसा के जन्म से 73 वर्ष पहले हुआ था। इस विद्रोह का नेता था थ्रेसियन ग्लैडिएटर गुलाम—स्पार्टाकस। स्पार्टाकस के नेतृत्व में लगभग चार साल तक गुलाम-सेनाओं ने उस समय दुनिया की सबसे शक्तिशाली मानी जाने वाली रोमन सेनाओं को पराजित कर एकबारगी तो जैसे पूरे साम्राज्य की नींव ही हिला डाली।

गुलाम-विद्रोह की पृष्ठभूमि समझने के लिए तत्कालीन रोमन साम्राज्य के चरित्र को जानना बहुत जरूरी है। ईसा के जन्म से पांच सदी पूर्व रोम के अंतिम राजा टार्क्विन द प्राउड (Tarquin the Proud) को उसके घिनौने कुकृत्यों के कारण गद्दी से उतार दिया गया। रोमनों ने तय किया कि वे राजशाही चलने ही नहीं देंगे। इसी विचारधारा के फलस्वरूप रोम



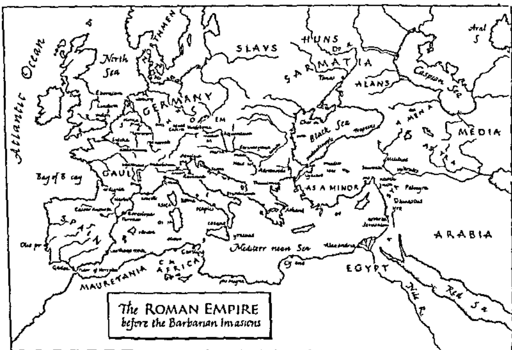
पोम्पी



तिबेरिअस व गेइअस

गणराज्य का गठन हुआ। रोमन घरानो के उन मखियाओ ने, जिन्होने राजा के खिलाफ विद्रोह का नेतृत्व किया था एक सीनेट बनायी जिसके दो सदस्य कौंसुल (Consul) कहलाये। ये कौंसुल रोम के शासक तो थे पर उन्हें हर साल बाद बदल दिया जाता था। रोम दो भागों में बट गया। एक भाग पर पेट्रीशियस (Petricians) अर्थात सामंतो का वर्चस्व था तो दूसरा भाग बहुमत वाले प्लेबियस (Plebeians) अर्थात् स्वतंत्र नागरिको के अधिकार में था। प्लेबियस अपने प्रतिनिधि खुद चुनते थे। इन दोनो के अतिरिक्त रोम में एक तीसरा वर्ग भी था—गुलाम वर्ग। दरअसल यह वर्ग ही पूरे रोमन साम्राज्य के सुख और सम्पदा का आधार था पर इसे कोई अधिकार प्राप्त नही था। इस तरह रोमन प्रजातन्त्र हर तरह से दास मालिको के कुरूप समीकरणो पर टिका एक घिनौना प्रजातंत्र था। रोमन साम्राज्य ने प्यूनिक युद्धो (Punic wars) को जीतकर अपनी ताकत काफी बढ़ा ली थी। ईसा से 133 साल पहले दो रोमन भाइयों तिबेरियस (Tiberius) और गेइअस (Gaius) ने कुछ समाज-सुधार करने चाहे। इन दोनो का कहना था कि अमीरों को बडी-बडी जायदादे नहीं रखनी चाहिए। इसके पक्ष मे दोनो भाइ प्राचीन नियमों का हवाला देते। इस तरह की विद्रोही विचारधारा का भला कौन सहन करता। नतीजतन दोनों भाई अमीरो की साजिश से कत्ल कर डाल गये। इसी के साथ रोम में गृह-युद्ध छिडा जिससे रोम का सारा ढाचा चरमरा उठा। इसी जमाने में गुलामो ने एक के बाद एक—तीन विद्रोह किये। दरअसल इन विद्रोहो के रूप में रोमन समाज की आतंरिक टूटन और पतनशीलता को अभिव्यक्ति मिली।

साम्राज्य-लिप्सा शक्ति के मद दासों के मालिक होने के अमानवीय दंभ और हर कीमत पर आनंद भोगने की जिद ने विलासी रोमनों को पूरी तरह से निकम्मा, आलसी काहिल थुलथुल और लम्पट बना दिया था। अप्राकृतिक मैथुन, पशु मैथुन अजीब अजीब तरह के भोजनों के चाव और खून में तरबतर गुलाम-योद्धाओ को अखाडे मे दहशत देखकर रोमांचित होना उस जमाने के रोमनो की जीवन-शैली बन चुकी थी। इस बर्बर शैली की रीढ़ पर सबसे कडी चोट स्पार्टाकस के विद्रोह ने की थी। दो गुलाम विद्रोह हो चुके थे। पहला गुलाम विद्रोह बडी आसानी से कुचला जा चुका था। दूसरे गुलाम विद्रोह को कुचलने के लिए पोम्पियस मगनस (पोम्पी) (Pompeius Magnus) जैसे जनरल को सेनाए लेकर



तत्कालीन रोमन साम्राज्य का मानचित्र

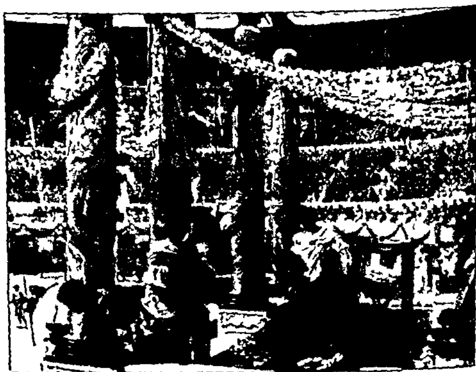
जाना पड़ा था। उसी समय तीसरा गुलाम-विद्रोह भी रोम साम्राज्य के शरीर में भीतर-ही-भीतर विषैली गाठ की तरह पक रहा था।

एक तरह से खुद रोमनों ने ही गुलामों को लड़ना सिखाया था। उन दिनों रोमनों का प्रिय मनोरंजन युद्ध-कला मे प्रशिक्षित गुलाम ग्लैडिएटरों (Gladiators) का द्वंद्व होता था। इन गुलामों को खूब अच्छा खिलाया-पिलाया जाता, कसरत करवाई जाती और गुलामी के दूसरे काम नही करवाये जाते। उन्हें संतुष्ट रखने के लिए उनके मालिक औरतें तक मुहैया कराते। गुलामों को प्रशिक्षित करने वाले प्रशिक्षक लानिस्ता (Lanista) कहलाते थे। रोम में जगह-जगह अखाड़े बन गये थे, जहा दास-मालिक भारी कीमत चुकाकर मनचाहे जोड़ों का द्वंद्व देखते थे। लानिस्ता रोमनों की रक्त-लिप्सावृत्ति का लाभ उठाकर बेशुमार दौलत कमा रहे थे। उन्होंने गुलामों के द्वंद्व-युद्धों का रोमांच की चरम सीमाओं पर पहुंचा दिया था। थ्रेस (Thrace) के रहने वाले गुलाम एक छोटा-सा मुड़ा हुआ छुरा चलाने में बड़े प्रवीण होते थे तो अफ्रीका के नीग्रो मछली पकड़ने के जाल व त्रिशूल से लड़ने में। एक थ्रेसियन के छुरे व अफ्रीकन हब्शी के त्रिशूल व जाल की टक्कर देखने के लिए सारे रोमन व्याकुल रहते थे। गुलामों के द्वंद्व के लिए कापुआ (Capua) नगर में पत्थरों से एक वृहद शानदार अखाड़े का निर्माण किया गया था। इसी अखाड़े के पास लानिस्ता लेण्टुलस बाटियाटस (Lantulas Batiatus) ने गुलामों को द्वंद्व सिखाने का स्कूल खोला हुआ था जो उस जमाने का अपनी तरह का सबसे बड़ा स्कूल था।

देखने में मोटे और थुलथुल लानिस्ता बाटियाटस की नजर गुलामों को चुनने में काफी

तज थी। वह उन्हे दूर-दूर से खरीद लाता। रोम की गलिया मे गुडागर्दी से अपना करियर शुरू करने वाले बाटियाटस ने इस अखाडेबाजी स इतना धन बटारा कि वह राम के चार सबस बडे मकाना का मालिक बन बैठा। बाटियाटस अपन काम क गुलाम खाना म ढूढता। खान के दरागाआ को रिश्वत खिलाकर वह एस गुलामा का पता लगा लेता, जा विद्राही स्वभाव क होते। फिर बाटियाटस उन्हे खरीद लता। खानो का काम सबसे कडी महनत मागता था। बाटियाटस के अनुसार जा गुलाम उस कडी महनत को झलकर भी लगातार बगावत क मूड मे रहता हा उसके अच्छा याद्धा साबित हाने की सभावनाए ज्यादा रहती थी। बाटियाटस इन गुलामा को द्वद्व युद्ध का प्रशिक्षण देकर एक दिन उनकी जजीरे खोलकर अखाडे म धकेल देता। याद्धा गुलामो को ऐसा लगता कि मानो वे थोडी दर के लिए दमघाटू कैद मे आजाद हो गय हैं। वे इस लालच मे जी-जान से लडत कि अगर जीत गय तो अगली लडाई मे उन्हे फिर आजाद होने का मौका मिलेगा। तीसरे गुलाम युद्ध की जड म ग्लैडिएटरो क मन मे आजाद होने की यही भावना चिगारी के रूप म विद्यमान थी।

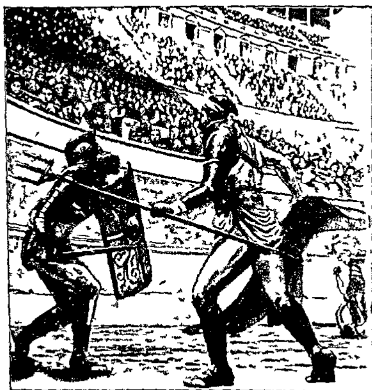
बाटियाटस न नूबिया (मिस्र) की खाना से स्पार्टाकस को खरीदा था। घुघराले बालो टूटी हुई नाक, सामान्य कद-काठी ओर गहरी काली आखो वाला यह गुलाम स्वभाव से बेहद विनम्र गभीर और नेतत्व के प्राकतिक गुणो स युक्त था। अन्य थ्रेसियन गुलाम उस उम्र म छोटा होने पर भी 'पिता कहकर सबाधित करते। स्पार्टाक्स आदतन कम बालता। पर गुलामो के बीच उसके आदेश बिना किसी जोर-दबाव के माने जात।



अखाड़े में द्वंद्व युद्धों का आनंद लेते रोमन

कापुआ म अपन म्कूल के अदर बाटियाटस ने स्पार्टाकस समत दो सौ ग्लैडिएटरा को पाल' रखा था। इनम से अधिकाश यहूदी, नीग्रा ओर थ्रेसियन गुलाम थे। कई युद्ध-क्लाओ म निष्णात और शरीर स मजबूत इन ग्लैडिएटरो के दिला मे दास मालिका के प्रति गहरी घृणा भरी थी। इसी अखाडे म बाटियाटम ने स्पार्टाकिस का मनारजनार्थ एक जर्मन औरत सौंपी, जिसका नाम वारीनिया था। वारीनिया ने स्पार्टाकस को अपना पति माना और अत तक उसक कधे स कधा मिलाकर लडी।

एक दिन दा रोमन नौजवान द्वद्व-युद्ध दखने की लालसा म कापुआ आय और बाटियाटस से 25 हजार दीनार म दा जाडा का आमरण द्वद्व दखने का सोदा किया। ब्रेकस और कैमस नामक इन रोमना ने ग्लैडिएटरा म स खुद स्पाटाकस, डावा नामक एक नीग्रा और डेविड नामक एक यहूदी और एक अन्य नस्ल के गुलाम का चयन किया। पहला द्वद्व यहूदी और चोथे ग्लैडिएटर म हुआ। यहूदी विजयी रहा पर उसन पराजित ग्लेडिएटर का क्त्ल करन स इकार कर दिया। यह विद्रोह की पहली चिगारी थी। फिर बारी आयी स्पाटाकस और डाबा के युद्ध की। इससे पहल कि रफ्री की सीटी बजती डाबा ने स्पार्टाकस से लडन क बजाय अपना त्रिशूल ताना और भूख भडिय की तरह रामना पर झपट पडा। सैनिका न डाबा को फुर्ती से बिना चूक तत्काल भालो स गाद डाला। पर विद्राह की बुनियाद पड चुकी थी। बाटियाटस न सजा देने और गुलामा पर अपना आतक जमाने के उद्देश्य स डाबा क बाद एक और बकसूर नीग्रो गुलाम का अन्य गुलामा के सामने बल्लमा से छद डाला पर इसके



ग्लैडिएटर-गुलामो का द्वद्व

बावजूद विद्राह न रुका। स्पार्टाकस ने उस विद्राह की कमान सभाली। क्रिक्सस और गानिक्स नामक दो गुलाम इस विद्राह की अगुआई म उसके दाय और बाय बाजू बन।

डाबा और दूसर नीग्रा गुलाम की लाश ग्लैडिएटरा का सबक सिखाने के लिए उनक सामन सलीब पर टाग दी गयी पर स्पार्टाकस ने ता इन लाशा स कुछ और ही सबक सीखा। उसने तय किया कि वह अब किसी ग्लैडिएटर से नही लडेगा। जैस ही उसने साथी याद्धाआ को अपना निर्णय सुनाया सभी विद्रोह करने के लिए मचल उठ। सुबह की कसरत क बाद व खान क कमर म जमा हुए। स्पार्टाकस न उन्ह एक छोटा सा भाषण दिया। सबसे पहल गुलाम याद्धाआ न अपने कोडाधारी दरागाआ और उस्तादा का सफाया किया। तीन पीढ़ी की गुलामी का जुआ अपन कधा पर ढान वाल स्पार्टाक्स ने पहली बार गुलामा के साथ आजादी का अमत चखा। फिर गुलाम ग्लैडिएटर अखाड म तैनात चालीस सैनिको पर टूट पडे। भरपूर नफरत मे भरी गयी इस पत्थरा ओर डडा की मार के सामन य सैनिक थोडी दर भी न टिक सक।

स्पार्टाकस न अब बाकायदा ग्लेडिएटरो का नेतत्व सभाल लिया। बाटियाटस के शस्त्रागार स हथियार लकर उसन व्यूह-रचना की और कापुआ स आने वाली सैनिक टुकडियों को ध्वस्त किया। उन्हाने सबसे पहले माउट वसुविअस (Mt Vesuvius) का अपने अधिकार म लिया। रोम की सीनेट न विद्राह की खबर सनने पर ज्यादा गभीरता नही दिखायी और 'मुट्ठी भर बागिया' का कुचलने क लिए बारिनियस के नतत्व मे तीन हजार सैनिक भज। रोमन सेना रास्ते मे मिलने वाल गुलामा पर जुल्म-अत्याचार करती हुई आगे बढ़ी। गुलाम सेना ने उस पर रात मे हमला किया। रोमन उस समय आमोद-प्रमोद से थके हुए सो रहे थे। एक एक रोमन बीन-बीनकर मार डाला गया। स्पार्टाक्स ने पोर्थुस नामक एक सैनिक का राम का राजल्ड देकर कहा, 'जाओ, सीनट से कहो अब कोडो का सगीत सुनत-सुनते हम तग आ चके है अब हम गुलाम नही रहना चाहत।

स्पार्टाकस की फौज जहा-जहा से गुजरती गुलामा क हुजूम के हुजूम उसमे मिलत जाते। धीरे-धीर उसकी फौज में एक लाख आदमी हो गय।

रामनो ने स्पार्टाकस के दमनार्थ पुब्लियस के नेतृत्व म एक बडी सेना भेजी। स्पार्टाक्स ने इसके खिलाफ एल्पाइन के दर्रो मे कामयाब छापामार युद्ध लडा और जीत हासिल की। स्पार्टाकस की चौथी जीत ममियस नामक अनुभवी सेनापति के खिलाफ थी। रोमन फौज खदेड दी गयी। इतिहास मे रामन फौज म कभी ऐसी भगदड न मची थी। वापस आये हर दस भगोडो मे से एक का कायरता के अपराध में मौत की सजा दी गयी। बाद मे स्पार्टाकस ने ममियस और सवियस नाम के दो रामन सैनापतियो को गिरफ्तार करके ग्लैडिएटरो की तरह आपस मे लडवाकर अपनी बदले की आग को ठडा किया। गुलामो न लडने का एक खास तरीका खाज निकाला था। वे नक्शा बनाकर अपनी रणनीति तय करते और अपने इच्छित मैदान म लडते। रोमन सेनाए अति आत्म-विश्वास के कारण अपनी व्यूह-रचना तोड देती और हार जाती। एक बडी लडाई मे तो दस हजार गुलाम मारे गये पर उनमें से एक की भी पीठ पर घाव नही था। रोमना क दिलो दिमाग म गुलामो की बहादुरी की दहशत बैठ गयी।

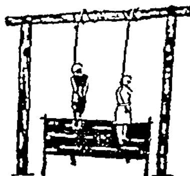
आखिर म रामन सेनापति मार्कुस लिसीनियस क्रैसस (Marcus Licinius Crassus) क नतत्व म सबस बडी सना गुलामा म लडन गयी और उन्ह परास्त कर दिया। स्पार्टाक्स लडता हुआ मारा गया। 6 872 गुलामा को गिरफ्तार कर राम स कापुआ जान



किर्क डगलस की फिल्म स्पार्टाकस का एक दृश्य

वाले मार्ग के दोनो ओर लाइन से सलीबा पर लटका दिया गया। वे वही लटके-लटके मर गये। किवदती है कि स्पार्टाकस की बीवी वारीनिया किसी तरह स्पार्टाकस के बच्चे के साथ भाग निकली। स्पार्टाकस की नाकामयाबी गुलाम-विद्रोहों का अत नही था। उसके बाद भी कई गुलाम-विद्रोह हुए।

आदि विद्रोही स्पार्टाकस की महान स्मृति मे हावर्ड फास्ट ने 'स्पार्टाकस' नामक अमर उपन्यास लिखा और किर्क डगलस ने इसी नाम की अमर फिल्म बनायी। पर स्पार्टाकस को इससे भी बडी श्रद्धाजलि तो आने वाली उन पीढ़ियो ने दी जिन्होंने मानवीय आजादी के लिए सघर्ष किया और कुर्बानिया दी। ■■



इग्लैड की क्राति
(1628 1658)

ओलीयर क्रॉमवेल के नेतृत्व मे हुई इग्लैड की क्राति ने राजशाही के उस युग मे पहली बार नागरिक सरकार की धारणा को सामने रखा। धार्मिक असहिष्णुता के युग मे इस क्राति ने उपासना-पद्धति की आजादी को अपना ध्येय बनाया। राजशाही की निरकुशता और ससद के दुसमुसपन के खिलाफ किसानो के बेटे तलवार लेकर लडे। क्राति का पतन क्रॉमवेल की फौजी तानाशाही मे हुआ और इग्लैड ने फिर एक बार राजा को स्वीकार कर लिया। पर इस क्राति के गर्भ मे भविष्य के ससदीय लोकतत्र के बीज छिपे थे।

17वीं शताब्दी इग्लैंड की राजशाही क खिलाफ एक क्रातिकारी बेचैनी लेकर आयी। लगता था कि जैसे पूरा दश दा भागो म बट गया है। एक तरफ पुराने इग्लैंड के समर्थक थ, जा चर्च, राजा और परपरागत समाज व्यवस्था म विश्वास करते थे। दूसरी ओर धार्मिक सहिष्णुता और बाइबिल के पवित्र सूत्रो मे उद्घोषित आजादी क समर्थक थे। ऐसा होना ही था। यूरप मे विज्ञान के विभिन्न क्षत्रो म काफी तर्कसगत अनुसधान हो रहे थे। इस वैज्ञानिक एव बौद्धिक चतना को सामाजिक अभिव्यक्ति धार्मिक कट्टरता के विरोध मे मिली। सघर्ष पहले राजशाही और ससद के बीच शुरू हुआ। फिर इसने गृह-युद्ध का रूप ले लिया।

ससदीय सेनाओ का नेतृत्व ओलीवर क्रॉमवल (Oliver Cromwell) क हाथो म था। इस फौज मे किसानो के बेटे लड रहे थे। मुकाबले म शाही सना थी जा पराजित हुई और किग चार्ल्स-प्रथम को गिरफ्तार कर लिया गया। इस गृह-युद्ध का अत चार्ल्स के मृत्यु दड और इग्लैंड से राजशाही के सफाये के रूप म हुआ। क्रॉमवल की मृत्यु के बाद इग्लैंड की जनता ने फिर से राजशाही मे पनाह ढूढी लेकिन इस क्राति की विरासत के रूप म सहिष्णुता, दास-प्रथा विरोध नारी-मुक्ति आदि विचारों को इग्लैंड क समाज म मान्यता मिल गयी। इस वैचारिक आधार पर भविष्य के इग्लैंड की नींव पडने वाली थी।



ओलीवर क्रॉमवेल और इग्लैड का मानचित्र

सन् 1628 से लेकर सन् 1658 तक चलने वाली इस सामाजिक और राजनीतिक उथल-पुथल की पृष्ठभूमि मे फ्रास मे हुई घटनाए थी। फ्रास की जनता ने उन दिना सामाजिक और आर्थिक जीवन पर राजा का पूरा अधिपत्य स्वीकार कर लिया था। इग्लैंड क राजा ने भी इसी तर्ज पर फ्रास के नक्शे-कदम पर अपनी जनता का चलाना चाहा। पर दोना देशो की परिस्थितियो मे काफी अतर था। अग्रेज समाज ने इसे हजम करने से इकार कर दिया। ससद ने सन् 1628 मे चार्ल्स-प्रथम को याद दिलाया कि परपरागत अग्रज स्वतत्रताओ का उल्लघन नही किया जाना चाहिए। पर चार्ल्स ने इस 'पिटीशन ऑफ राइट्स' (Petition of Rights) पर कान नही धरा। उसन निरकुश भाव से ससद को भग कर दिया और अगल ग्यारह साल तक एक बार भी ससद को बुलाने की जहमत नही उठायी। इस तरह राजशाही पूरी तरह से तानाशाही मे बदल गयी। चार्ल्स का मुख्यमत्री थॉमस वेंटवर्थ (Thomas Wentworth) स्ट्रैफोर्ड का अर्ल (Earl of Strafford) था। उसने इग्लैंड मे भी वही नीतिया अपनायी, जो फ्रास म कामयाब हा चुकी थी। जनता पर से उठाये गय पुराने टैक्स फिर लगा दिये गये।

इसी समय धार्मिक क्षेत्र म एक बडी विस्फोटक घटना हुई। केंटरबरी (Canterbury) के आर्कबिशप विलियम लोड (William Laud) न अग्रेज उपासना-पद्धति (Anglican Liturgy) मे कुछ सुधार कर डाले। 23 जुलाई, 1637 को सेंट जाइल्स एडिनबरा के चर्च म नयी प्रार्थना पुस्तक पहली बार पढ़ी गयी। रूढ़िवाद के समर्थक तो पहले से बेहद नाराज थे। चर्च मे ही एक महिला ने पूरी ताकत से कुर्सी उठाकर आर्कबिशप के सिर पर दे मारी। स्कॉटलैंड की जनता ने एडिनबरा के किले की प्राचीरो के नीचे भारी सख्या मे जमा होकर राष्ट्रीय प्रतिज्ञापत्र (National Convenent) पर



क्रॉमवेल द्वारा लाग पार्लियामेंट का अत

हस्ताक्षर किये। जिसका अर्थ था कि उन्ह इन धार्मिक सुधारो में आस्था है। कुछ लोगों ने तो जोश म भरकर अपने खून से दस्तखत किये थे। इस घटना स जिस युद्ध की शुरुआत हुई, उसने चार्ल्स को ससद बैठाने के लिए मजबूर कर दिया। सन् 1640 म पहली ससद बुलायी गयी, जो थोडे दिन ही चली। फिर सन् 1640 से सन् 1653 तक चलने वाली ससद बैठायी गयी, जिसे लाग पार्लियामेंट (Long Parliament) के नाम से जाना जाता है।

ससद ने राजा को मजबूर किया कि वह 'एक्ट आफ अटेण्डर' (Act of Attainder) को मजूरी द जिसके तहत मुख्यमत्री अर्ल ऑफ स्ट्रैफोर्ड को मृत्यु दड दिया जाना था। ससद मे सरकार-विरोधी वक्ताओ ने राजशाही की धज्जिया उडा दी। दो साल बाद राजशाही ने फिर अपना रुतबा जमाना चाहा। चार्ल्स ने ससदीय नेताओ को गिरफ्तार करना चाहा पर नाकामयाब रहा। ससदीय नेताओं को लदन शहर मे पनाह मिली। इस पर चार्ल्स न लदन पर हमले का फैसला किया और वह राजधानी छोड नार्टिघम (Nottingham) मे सेना तैनात करने चला गया।

यही से एक लबे गृह-युद्ध की शुरुआत हुई। उन दिना 42 वर्षीय ओलीवर क्रॉमवेल ससद में कैम्ब्रिज (Cambridge) की नुमाइदगी करते थे। क्रॉमवेल ने बाइबिल की मूल पवित्रता मे विश्वास करने वालो और पादरियो के कर्मकाण्डा व रूढ़िग्रस्तता का विरोध करने वालो के बीच खासी प्रतिष्ठा अर्जित कर ली थी। सन् 1641 मे राजा की अनियमितताओं और ससद के उद्देश्या को लेकर ससद में इतनी उत्तेजक बहस हुई कि सदन मे ही तलवारें खिच गयी। रक्तपात हाते होते बचा। राजा के खिलाफ ग्राड



सैनिकों को संबोधित करते हुए क्रॉमवेल

रिमास्ट्रस (Grand Remonstrance) यानी घोषणा-पत्र पारित हो गया। चार्ल्स ने इसे अपने लिए निर्णायक चुनौती माना। उसने व्हाइट हॉल (White Hall) छोड दिया ताकि लडाई के लिए फौज तैयार की जा सके। क्रॉमवेल ने ससद की रक्षा के लिए 500 पौण्ड दान किये और कैम्ब्रिज मे जाकर किसानो की सेना बनायी जिसके लडाके आइरनसाइड्स (Ironsides) के नाम से जाने गये।

आइरनसाइड्स ससदीय सेना के हरावल मे लडे। उन्होने बेमिसाल बहादुरी और अनुशासन का परिचय दिया। पेशे से किसान आलीवर क्रॉमवेल ने अपनी घुडसवार सेना का नेतृत्व करने मे अद्भुत सैन्य-कुशलता दिखायी। क्रॉमवेल के सैनिक अपने को बाइबिल के सिपाही समझते। उन्हे लडाई के मैदान मे ही बाइबिल द्वारा प्रदत्त सामाजिक आजादी के ऊपर लबे-लबे प्रवचन सुनाये जाते। एजहिल (Edgehill) की पहली लडाई से क्रॉमवेल ने जो सबक सीखा उसने ससदीय सेना की अगली जीतो का रास्ता खोला। सन् 1644 मे लफ्टीनेट जनरल बन चुके क्रॉमवेल ने मार्स्टन मूर (Marston Moor) के मैदान मे प्रिंस रूपर्ट (Prince Rupert) की शाही सेना को करारी शिकस्त दी। इस मुठभेड मे क्रॉमवेल ने अपने घुडसवारो के साथ निर्णायक भूमिका निभायी। उन्होने शाही फौज के पिछले हिस्से पर हमला किया और कुछ ही देर मे उसे मैदान मे बिछा दिया। क्रॉमवेल का दूसरा हमला राजा की सेना के केन्द्र पर हुआ और जीत हासिल कर ली गयी। सन् 1645 मे क्रॉमवेल, फेयरफैक्स (Fairfax) और आइरेटन (Ireton) जैसे तीन सेनापतियो के मिले-जुले नेतृत्व मे न्यू मॉडल आर्मी (New Model Army) ने जीतो का सिलसिला शुरू किया। उसने किलो, काउटियो और रेजीमटों को अपने सामने झुकने के लिए विवश कर दिया।

अगले तीन साल राजा ससद और न्यू मॉडल आर्मी के बीच त्रिकोणात्मक सघर्ष के साल थे। ससदीय नेता ढुलमुल रवैया अख्तियार कर रहे थे। फौज चाहती थी कि धार्मिक सहिष्णुता का शासन हो क्योंकि इसी धार्मिक मुद्दे पर तो किसानो के बेटे अपना खून बहाने



30 जनवरी, 1649 को चार्ल्स प्रथम की जीवन लीला समाप्त कर दी गयी।

को तैयार हुए थे। संसद ने आदेश दिया कि सेना भंग कर दी जाये, पर सेना ने अपनी तनख्वाह की मांग की और भंग होने से इंकार कर दिया। इस पर संसद ने क्रॉमवेल को समझौता-वार्ता के लिए भेजा।

क्रॉमवेल सेना को समझाने के बजाय उनके साथ हो गये। पर सेना और संसद के विवाद ने चार्ल्स को एक बार फिर महत्त्वपूर्ण बना दिया। सन् 1647 में स्कॉटलैंड वालों ने अपनी पनाह में छिपे हुए चार्ल्स को संसदीय कमिश्नरों के हवाले कर दिया और राजा ने अपनी चालें खेलनी शुरू कर दी। जनरल फेयरफैक्स की हिरासत में चार्ल्स को हर तरह की सुविधाएं मिल रही थीं। चार्ल्स ने पूरी कोशिश की कि वह फौज को सीधे प्रेसबिटेरियंस (Presbyterians) से लड़ा दे। वेल्स (Wales) में राजा के समर्थकों ने विद्रोह किया पर क्रॉमवेल ने सख्ती से इस विद्रोह को दबा दिया। क्रॉमवेल के नेतृत्व में फौज ने राजा के ऊपर मुकद्दमा चलाने का फैसला किया। एक क्रांतिकारी न्यायाधिकरण बनाया गया जिसका नाम 'हाई कोर्ट ऑफ जस्टिस' था। 27 जनवरी, 1649 को इस अदालत ने चार्ल्स की मौत के वारंट पर दस्तखत कर दिये।

क्रॉमवेल की फौजों ने आइरलैंड और स्कॉटलैंड में भारी जीतें हासिल कीं। सन् 1650 आते-आते दक्षिण इंग्लैंड पूरी तरह क्रॉमवेल के शासन की गिरफ्त में आ गया। फिर चार्ल्स द्वितीय ने बगावत करने की कोशिश की। चार्ल्स प्रथम की मृत्यु के बाद संसद

न फोज का आग्रह मान लिया था। क्रॉमवेल न इस बगावत का वर्सेस्टर (Worcester) की लडाई म कुचल डाला। ससद न क्रॉमवल का राजनतिक शासक ता मान लिया पर धार्मिक मसल का लकर समद और क्रॉमवल क बीच कभी नही पटी। क्रॉमवल उपासना-पद्धति की आजादी म आर ससद पुरान कर्मकाडा म विश्वास रखती थी। क्रामवल यह भी चाहत थ कि सरकार चुनी हुई नागरिक सरकार हा। ससद ही कर लगाय आर कानून बनाये। कायपालिका कानूनी दायर म रहकर काम करे। मोजूदा ससद यह मब मानन का तेयार नही थी।

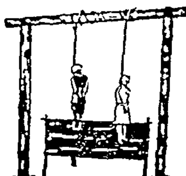
अप्रेल, 1653 म ससद को अपन आग झकान के लिए क्रॉमवल न अचानक सदन म प्रवश किया। हाउस ऑफ कामस म क्रॉमवल न अपन विराधी सासदा का शराबी, वश्यागामी ओर भ्रष्ट करार दिया। क्रॉमवल क तिलगा न अदर घुसकर सभी का जबरन निकाल दिया। ससद क दरवाज पर ताला लगाकर लिख दिया गया 'दिस हाउस इज ट लट" (यह स्थान किराय क लिए खाली हे)। फिर क्रॉमवेल न अपनी ससद बनान की नाकाम काशिश की आर आखिर म व 'लाड प्राटक्टर ऑफ इग्लेंड हा गय।



मई, 1660 को चार्ल्स द्वितीय गद्दी पर बैठा।

यही स क्राति की असफलता की शुरुआत हुइ। क्रॉमवल एक नागरिक मरकार स्थापित करन क बजाय फौजी तानाशाही स्थापित कर बठ। उन्हान इस कदर किफायती रवैया अपनाया कि जनता परशान हा गयी। इग्लेंड म होन वाल परपरागत आमाद-प्रमाद बद हा गय। इन्ही परिस्थितिया मे राजशाही के समथन की भावनाय उभरनी शुरू हुइ।

सन् 1658 म बीमारी स क्रॉमवल का निधन हा गया। एक बार फिर राजशाही ओर ससद की स्थापना हुइ क्याकि क्रॉमवेल क बटे रिचर्ड के पास न ता अपन पिता की क्रातिकारी विरासत थी आर न ही राजकीय कुशलता। मई, 1660 म चार्ल्स-द्वितीय को गद्दी पर बैठाया गया। लगातार उथल-पुथल और युद्ध से जनता ऊब चुकी थी। लकिन इग्लैंड की राजनीति स जुड लागो मे अपन अधिकारो का कायम रखन की प्रवत्ति भी जार पकड चुकी थी। इसी प्रवत्ति ने बाद मे पश्चिमी किस्म के लोकतत्र को जन्म दिया। ■■



ससदीय क्राति

(1688 1689)

पहली बार 17वीं शताब्दी मे ससद ने राजा को उसके दैवी अधिकारो से वचित कर दिया। आश्चर्य की बात तो यह थी कि इतने बडे सामाजिक-राजनैतिक परिवर्तन मे खून की एक बूद भी नहीं बही। ऊपर से देखने म यह कैथोलिको और प्रोटेस्टेटो का झगडा भले ही दिखायी दे, पर यह धार्मिक विवाद परिवर्तनकामी गतिशीलता का मिजाज रखता था। जेम्स की सत्ता के बाद विलियम और मैरी को सिहासन तो मिला लेकिन न तो वे कर लगा सकते थे और न ही सेना रख सकते थे। ससदीय क्राति ने ब्रिटेन को दुनियाभर मे व्यापार करने की दिशा मे धकेला और लोकतत्र की आधारशिला रखी।

ओलीवर क्रॉमवेल की क्राति ने इग्लैंड का एक एस रास्त पर डाल दिया था जिस पर राजशाही न अधिकारो का कम हात जाना एक ऐतिहासिक आवश्यकता बन गयी थी। विज्ञान क आविष्कार युराप म पूर मानवीय चितन पर असर डाल रह थ। कॉस्मिक फर्नेस (Cosmic Furnace) का निर्माण करक ओद्योगिक क्राति की दिशा म एक कदम और बढ़ाया जा चुका था। हालाकि मजिल अभी दूर थी पर कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय म सन् 1687 म एक युवक गणितज्ञ आइजक न्यूटन (Issac Newton) न अपनी पुस्तक प्रिसिपिया (Principia) का प्रकाशन किया था, जिसम गुरुत्वाकर्षण का सिद्धात पश किया गया था। भविष्य के विज्ञान ओर समाज पर इस महान पुस्तक का प्रभाव पडना ही था। जाहिर था कि युराप का आदमी धार्मिक परमवाद (Religeous Absolutism) हाकर अपन अधिकारा क प्रति सजग हा रहा था।

राजनैतिक रूप स युराप उस समय फ्रास क राजा लुई चौदहवे (Louis XIV) की साम्राज्यवादी महत्त्वाकाक्षाआ क खिलाफ सघर्ष कर रहा था। लुई पूरे युराप का तानाशाही बनने का सपना बुन रहा था। उसने मैडम डि मटनन (Madame de Maintenon) से गुप्त विवाह भी रचा लिया था। इस पत्नी न लुई का कैथोलिका क

समर्थन की प्ररणा दी। प्राटेस्टटा की ता जैस आफत ही आ गयी। उन्ह जबरन केथालिक बनाया जान लगा। जेसे ही लूई का लगा कि सभी प्रोटेस्टट कैथालिक बनाये जा चुके हैं उसन नाटस की राजाज्ञा (Edict of Nantes) का दाबारा लागू कर दिया। बच हुए प्राटस्टटा का केथालिक बनने क लिए कवल 15 दिन दिय गये। करीब दो लाख प्रोटस्टट अपने धम की आन पर अपना सब कुछ छाडकर चल दिय। पिलिग्रिम फादर्स के नाम स विख्यात इन शरणार्थिया का इग्लेंड यूनाइटेड प्रोविंस ओर ब्रेडनवर्ग म पनाह मिली। इन वंचित शरणार्थिया न हर जगह कैथालिक्वाद क प्रति नफरत फलायी जिसस लागा के दिमागा म उथल-पुथल मच गयी और व सरकार क खिलाफ विद्राह की बात करन लग।

इमी पृष्ठभूमि म इग्लेंड म ससदीय क्राति का जन्म हआ। क्रॉमवल की मृत्यु क बाद गद्दी पर बठ चार्ल्स द्वितीय का निधन 6 फरवरी 1685 का हुआ ओर ड्यूक आफ यार्क जम्स-द्वितीय का सिहासन मिला। जम्स का अपनी गद्दी सदढ़ रखन क लिए यद्ध लडना पडा। उसक भतीज ड्यूक ऑफ मनमाउथ (Duke of Monmouth) क विद्राह का दबान क लिए सजमूर (Sedgemoor) की लडाई हुइ जिसम हारकर मनमाउथ भागा पर मत्यु-दड स नही बच पाया। उसक समथका का भी मख्य न्यायाधीश जफरीज



दो लाख प्रोटेस्टेट अपना सब कुछ छोडकर चल दिये।

(Jeffreys) न कडी सजाए दी। य मुकदम बहद बदनाम हुए। जफरीज पहल भी अपने रवैय क कारण एक क्रूर जज क रूप म कुख्यात हा चुका था। इसी तरह क सलाहकारा ओर अधिकारिया न जम्स द्वितीय का उद्दण्ड ओर जिद्दी बना दिया।

जेम्स क अदर कइ गुण भी थे। वह एक बहेतरीन नाविक था पर राजकाज क मामल म बहद कच्चा था। तिस पर उसके ऊपर कैथालिकवाद का भूत सवार था। पाप



जेम्स द्वितीय का राज्यारोहण समारोह

की राय के खिलाफ उसने कदम-कदम पर अपने कट्टर धार्मिक विश्वास को प्रोटेस्टेंट जनता पर थोपने की कोशिश की। प्रोटेस्टेंट शरणार्थियों ने पहले ही कैथोलिकवाद के प्रति गुस्से का माहौल बना रखा था। इसलिए व्हाइट हॉल में खुले आम प्रार्थना सभाएं होने लगीं और जगह-जगह जिसुआइटस (Jesuits) दिखायी देने लगे। स्कॉटलैंड में तो और भी खराब स्थिति थी। क्रॉमवेल के जमाने में प्रमुखता पाये प्यूरिटनों (Puritons) को यातनायें दी जाने लगीं। इस तरह राजशाही की ज्यादतियों का घड़ा भरने लगा। अप्रैल 1687 में राजा ने दंडमोचन की घोषणा (Declaration of Indulgence) की। इसका मकसद था कैथोलिकों और प्रोटेस्टेंटों को उपासना की आजादी देना। जेम्स चाहता था कि प्रोटेस्टेंट एंग्लिकन चर्च से अलग हो जाये। प्रोटेस्टेंट शायद एक बार संतुष्ट भी हो जाते अगर उन्हें विश्वास होता कि जेम्स अपनी लड़की मैरी को उत्तराधिकारी बनायेगा।

मैरी का विवाह विलियम ऑफ ऑरेंज (William of Orange) से हुआ था। विलियम सारे यूरोप में प्रोटेस्टेंटों के नेता के रूप में मशहूर था। वह जन्म से डच था और फ्रांस के लुई चौदहवें द्वारा सताये जाने से बेहद नाराज था। लुई और विलियम की शत्रुता उस जमाने में राजनीति के हर जानकार की जुबान पर थी।

जून 1688 में जेम्स की दूसरी पत्नी ने एक पुत्र को जन्म दिया जिसे फौरन



विलियम-तृतीय



जेफरीज की गिरफ्तारी

कैथोलिक धम म दीक्षित कर दिया गया। प्रोटस्टट इस नयी घटना से काफी चौंक गये। उन्हे लगा कि अब प्राटेस्टट विलियम की पत्नी मेरी इग्लेंड की गद्दी की उत्तराधिकारी नही बन पायगी। साथ म यह अफवाह भी फैल गयी कि वह बच्चा असल म रानी क गर्भ स नही जन्मा बल्कि कैथालिको की साजिश का नतीजा है। लदनवासियो ने अपनी इन भावनाओ का प्रदशन सात बिशपो की रिहाइ का उत्सव मना कर किया। व बिशप दण्डमोचन की घोषणा का विराध करन क लिए गिरफ्तार हुए थ।

क्रांति की घडी नजदीक आ पहुची। प्रोटेस्टटो ने मैरी और विलियम को अपना नतत्व करन क लिए आमंत्रित किया। विलियम प्रोटस्टटवाद आर स्वतत्रता की हिफाजत करन का उद्देश्य लेकर अग्रजो की धरती की तरफ चला। राजा की तरफ से उस रोकने आर पकडन क लिए जॉन चर्चिल (John Churchill) को भेजा गया। 3 नवबर 1688 को टोरबे (Torbay) म विलियम न इग्लेंड म कदम रखा और चर्चिल की फौज का सामना किया। पर चर्चिल का विलियम म भविष्य का सम्राट दिखायी द रहा था। उसन अपनी फाज विलियम क नतत्व म द दी। जम्स का लगा कि उसक साथ अब कोई नही रहा। उसन पलायन किया और फ्रास म शरण ली। लूई चौदहव न अपन शत्रु विलियम क शत्रु का हाथो हाथ लिया। विलियम और मरी को नय राजा और रानी क रूप म स्वीकार कर लिया गया। विलियम न जम्स चर्चिल को उसकी सेवाओ क लिए ड्यूक ऑफ मार्लबरा बनाया। यह एक स्वर्णिम रक्तहीन क्रांति थी। इसमे कोई खून-खराबा नही हुआ था। जम्स क जज जफरीज जैसे सलाहकारो ने भागने की कोशिश की पर उन्हे पकड लिया गया।

इस सब के बावजूद ससद का जम्स की उद्दडताओ की कडवी याद भूली नही थी। उसन नय राजा-रानी पर सौ फीसदी विश्वास नही किया। उसने विलियम और मैरी का



बिशपों को अप्रैल, 1688 को टॉवर पर लाया जा रहा है।

अधिकारों का विधेयक (Bill of Rights) स्वीकार करने पर मजबूर किया। इस विधेयक के अनुसार सत्ता में संसद का हिस्सा निर्विवाद हो गया। राजा की शक्तियाँ आनुवंशिक दैवी अधिकार की देन नहीं रह गयी बल्कि वह राष्ट्र की इच्छा के अनुकूल होने लगी। इस नये कानून से राजा संसद के नियंत्रण में हो गया। अब कोई कैथोलिक शासन नहीं कर सकता था। राजा से कर लगाने का अधिकार भी छीन लिया गया था और उसे निजी सेना रखने की आज्ञा भी नहीं थी।

सन् 1689 में सहिष्णुता कानून (Toleration Act) बना जिसने प्रोटेस्टेंटों को तो उपासना की स्वतंत्रता दी पर कैथोलिकों को नहीं। इस तरह से इंग्लैंड का 50 वर्षीय धार्मिक विवाद खत्म हुआ। मैरी की सन् 1695 में मृत्यु हो गयी। विलियम तो मूलतः डच था और उसकी दिलचस्पी लूई चौदहवें से निपटने में ज्यादा थी। इसलिए उसका ध्यान हमेशा यूरोप के दूसरे हिस्सों पर लगा रहा। नये कानूनों की ताकत लेकर इंग्लैंड ने संवैधानिक शासन का पहला अनुभव लिया। सन् 1702 में मैरी की बहन एन (Ann) ने गद्दी संभाली। सन् 1714 में उसके निधन के बाद जॉर्ज-प्रथम राजा बना। उस समय तक इंग्लैंड और स्कॉटलैंड यूनाइटेड किंगडम ऑफ ग्रेट ब्रिटेन का रूप ले चुके थे।

सन् 1718 के बाद हाउस ऑफ कामंस (ब्रिटिश संसद) का हर सात साल बाद चुनाव होने लगा। संसद तत्कालीन भूपतियों के हितों का प्रतिनिधित्व करती थी क्योंकि यही तबका शासक वर्ग का भी निर्माण करता था। संसदीय क्रांति के परिपक्व होने के साथ-साथ ब्रिटेन ने बड़े पैमाने पर व्यापारिक और समुद्री गतिविधियाँ शुरू कीं। उसके व्यापारियों ने जमकर मुनाफा कमाया। यूनाइटेड प्राविंसेज की तकलीफों ने उनके फायदों में और बढ़ोत्तरी की। ब्रिटेन के उपनिवेशों के माल का आयात और फिर उसका निर्यात व्यापारियों के लिए जोरदार धंधा साबित हुआ। इस मुनाफे से ब्रिटिश खेती पर उद्योग के



विलियम और मैरी

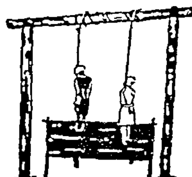


महारानी एन

क्षत्र म हुई प्रगति म पूजी निवेश किया जा सका। इसी शताब्दी म व तक्नीकी खाज हुइ, जा बाद की औद्योगिक क्रांति म इस्तेमाल की गयी।

सन् 1694 म बैंक ऑफ इग्लेंड की स्थापना हुइ, जिसन सरकारी ऋण का एक स्थिर चरित्र प्रदान किया और कई तरह की आर्थिक गतिविधियो का नियंत्रित करन म प्रमुख भूमिका निभायी। सन् 1666 के भयानक अग्निकाड म भस्म हुए लदन का पत्थरा स निर्माण किया जा चुका था। नये युग मे उसका क्षत्रफल परिस स दोगुना था और आबादी पूरी साढ़े सात लाख थी। सट पॉल का भव्य गिरजा इस शहर और ब्रिटिश साम्राज्य क धन-धान्य और अधिकार का प्रतीक लगता था।

17वी शताब्दी क इन आखिरी वर्षो ने ब्रिटिश साम्राज्य की जड मजबूत की। राजशाही के अधिकारा क खात्मे ने एक नयी मिसाल का जन्म दिया। इसकी अभिव्यक्ति अगली शताब्दी म हुई। 18वी शताब्दी दो महान घटनाआ क लिए तैयार हान लगी। य थी अमरीकी स्वतत्रता का युद्ध और फ्रास की पूजीवादी क्राति। ■■



अमरीकी क्रांति

(1763 1782)

ब्रिटिश साम्राज्य को पहली गंभीर चुनौती उत्तरी अमरीका के 13 उपनिवेशों में बसे अंग्रेज नस्ल के अमरीकियों ने ही दी। उन्होंने ब्रिटिश संसद द्वारा अपने ऊपर कर लगाने के अधिकार को नामंजूर कर दिया। जॉर्ज वाशिंगटन के नेतृत्व में अमरीका ने अपनी आजादी की घोषणा की और टामस जैफर्सन ने आजादी का घोषणा-पत्र लिखा। सन् 1775 से सन् 1781 तक चले युद्ध में फ्रांस और स्पेन की मदद से मजबूत हुए अमरीकी देश-भक्तों ने 45,000 की ब्रिटिश फौज को परास्त कर दिया। यह उपनिवेशवाद पर पड़ने वाली पहली चोट और नये युग की पदचाप थी।

18वीं सदी के उत्तरार्द्ध में ब्रिटेन की ताकत अपनी चरम सीमा पर पहुंचने लगी थी। मशहूर था कि उनके साम्राज्य में कभी भी सूर्य अस्त नहीं होता। उत्तरी अमरीका में ही उसके 13 उपनिवेश थे। उस समय जॉर्ज-तृतीय के पास राजगद्दी थी। अपने ही साम्राज्य के सूर्य से चकाचौंध अंग्रेज यह नहीं देख पाये कि अमरीकी उपनिवेशों की अंदरूनी ताकत बढ़ती जा रही है और अब वे ज्यादा दिनों तक ब्रिटिश सिंहासन के अधीन नहीं रह सकेंगे। इन उपनिवेशों में रहने वाले भी नस्ल से अंग्रेज ही थे लेकिन वे उत्तरी अमरीका की आबो-हवा में छः पीढ़ियां गुजार चुके थे। अब उनमें अपने अंग्रेज होने के बजाय अमरीकी होने का अभिमान पैदा होना शुरू हो चुका था। यह सांस्कृतिक अलगाव इस तथ्य से और भी बढ़ जाता था कि इन उपनिवेशों पर नियंत्रण करने वाला 'हाउस ऑफ कामंस' तीन हजार मील दूर लंदन में स्थित था।

अमरीकी अंग्रेजों के हिसाब से उनके घरेलू मामले उनकी अपनी सभाओं के जरिये सुलझने चाहिए थे। वे उनमें ब्रिटिशों की टांग अड़वाना पसंद नहीं करते थे। वे चाहते थे कि ब्रिटिश सरकार विदेश नीति और समुद्री व्यापार तक ही अपने-आप को सीमित रखे। अमरीकियों की ये सभाएं धीरे धीरे ताकतवर होती जा रही थीं। सन् 1761 में 63 के बीच



अमरीकी फौजा के कमाडर जॉर्ज वाशिगटन

अर्ल ऑफ ब्यूट (Earl of Bute) के मंत्रिमडल न और उसक उत्तराधिकारी जॉर्ज ग्रनविल (George Grenville) की प्रधानता वाली सरकार न उत्तरी अमरीका म ब्रिटिश फौजा की सख्या बढ़ा दी। ब्रिटन न अमरीकी अग्रजा से कहा कि व पश्चिम की तरफ पैर न फैलाय। रड इडियना के लिए बड-बड इलाक आरक्षित कर दिय गय। इससे अमरीकिया का माथा ठनका। उन्हान इस अपनी बढ़ती हुई आजादी के रास्त मे जानबूझकर डाला गया रोडा समझा।

ब्रिटेन का दूसरा कदम भी अमरीकिया का नाराज करन वाला साबित हुआ। उनका समुद्री व्यापार नियंत्रित कर दिया गया और उन पर ससद द्वारा कर लगा दिय गय। सन् 1764 का चीनी कानून (Sugar Act) जिसम कच्ची शक्कर पर प्रति गैलन 3 पस शुल्क लगता था और सन् 1765 का स्टाम्प कानून अमरीकिया का एक आख न भाया। अमरीकियो के लिए अपन सभी कानूनी दस्तावेजा और दूसर कागजा पर कर के रूप म स्टाम्प लगाना मजबूरी बन गयी।

अमरीकिया ने विरोध म आवाज उठायी और कहा कि जब 'हाउस ऑफ कामस' म हमारा प्रतिनिधित्व नही होता तो ससद हम पर कर कैसे लगा सकती है? नारा लगा "नो रिप्रजटेशन-नो टैक्सेशन"। जगह-जगह सभाए और जलसे हान लगे, जिनमे स्टाम्प



क्रांति के दिनों में अमरीका की भूगोलीय स्थिति

कानून वापस लेने की माँग की जाती थी। अमरीका भेजे गये स्टाम्प नष्ट कर दिये गये और स्टाम्प वितरकों से जबरन त्यागपत्र दिलवा लिया गया। कई अमरीकी शहरों में इस कानून के खिलाफ दंगे भड़क उठे। लन्दन पर दबाव डालने के लिए अमरीकियों ने ब्रिटिश माल मंगाना बंद कर दिया। ब्रिटिश व्यापारियों का भुगतान रोक दिया गया।

ब्रिटेन इस विरोध प्रदर्शन से आश्चर्यचकित रह गया। उसे स्टाम्प कानून वापस लेना पड़ा। लेकिन मार्च में डिक्लेरेटरी एक्ट पास करके और अगले साल जून में [illegible] सरकार ने फिर नये टैक्स लगाकर विवाद पैदा कर दिया। [illegible] के आयात पर कर लगाये गये। [illegible] अमरीका में [illegible]



स्टेम्प एक्ट का विरोध

जो उपनिवेश इस आदोलन मे शामिल नही हुए, उनका हुक्का-पानी बद कर देने की धमकी दी गयी। ब्रिटेन को ये कर वापस लेने पड़े। केवल ससद का अधिकार जताने के मकसद से चाय पर कर लगा रह गया।

तभी सन् 1768 मे लाल कुर्ती के ब्रिटिश सैनिक बोस्टन (Boston) मे नागरिको से उलझ गये। कस्टम कमिश्नरो को बचाने के चक्कर मे सैनिको ने पाच नागरिको को गोली से उड़ा दिया। अग्रेजो ने मामले के नाजुकपन का अहसास करके सेना फौरन वापस बुला ली पर इस घटना से सभी कॉलोनियो मे ब्रिटिश विरोधी भावनाए फैल गयी।

सन् 1773 तक छिट-पुट घटनाओ मे इस आक्रोश की अभिव्यक्ति होती रही। यह वर्ष प्रधानमत्री लार्ड नॉर्थ (Lord North) के चाय कानून का था, जिसके चलते ईस्ट इंडिया कपनी को अपनी चाय पर लगने वाले भारी कर से मुक्ति मिल गयी और वह उसे सीधे अमरीका मे बेचने लगी। ब्रिटिश चाय एक तरह से अमरीकियो के लिए सस्ती हो गयी थी। पर अमरीकियो ने महगी डच चाय खरीदना पसद किया, क्योकि ब्रिटिश चाय खरीदने का मतलब होता ससद द्वारा अपने ऊपर कर लगाने के अधिकार को मान्यता देना। अमरीकियो ने ईस्ट इंडिया कपनी की चाय बरबाद करना शुरू कर दी। सन् 1773 के दिसबर मे तीन जहाजो मे भरी चाय बोस्टन के बदरगाह मे खराब होने के लिए छोड दी गयी। यह घटना बोस्टन टी-पार्टी के नाम से मशहूर है।

लदन मे इस कार्रवाई के खिलाफ नाराजगी पैदा हुई। नार्थ मत्रिमडल ने तय किया कि बोस्टन और मेसाचुसेट्स को इसके लिए सबक सिखाया जाय। चार दमनकारी कानून पास किये गये। पाचवा कानून क्युबेक कानून (Quebec Act) था। अमरीकियो ने इन पाचो कानूनो को सहन न कर सकने लायक करार दिया। कानून पर अमल के लिए लाल कुर्ती के सैनिक बोस्टन मे भेजे गये पर मेसाचुसेट्स मे सन् 1774 के हेमत मे शहर के



बोस्टन टी पार्टी शीर्षक
से छपा प्रसिद्ध व्यग्य चित्र

बाहर एक क्रांतिकारी सरकार की स्थापना की गयी। फाज की नयारी हान लगी। ब्रिटिश गवनर थामस क्ज (Thomas Cage) का लगा कि उसकी फाज इस त्रगावत म नही निपट पायगी इसलिए उसन नदन म आर फाज की माग की। सन 1774 म फिलार्डाल्फया म पहली काटीनटन काग्रस हइ जिसम 12 उपनिवशा न अपन प्रतिनिधि भज। जाज वाशिगटन जान एडम्स समअल एडम्स आर पाटक हनरी जस प्रतािष्ठत अमरीकी नता इस काग्रस म शामिल हए। इस काग्रस न प्रण किया कि अगर ब्रिटिश सनिका न बास्टन म आग बढकर मसाचसटस पर हमला किया ता वहा क भाइया की हर कीमत पर रक्षा की जायगी। ब्रिटन म कहा गया कि वह सन 1763 म बनाय गय हर कानून का वापस ल क्याकि य मानवता प्राकृतिक अधिकार क विराधी ह। काग्रस न एक एसासियशन बनायी जा ब्रिटिश चीजा का आयात आर उपभाग राकन का एक जरिया थी। यह भी तय किया गया कि अगर ब्रिटन न मान ता अमरीकी चावल का छाडकर हर चीज क निर्यात पर भी पाबदी लगा दी जाय। जिस जिस न इन पाबदिया का विराध किया उस अमरीकी आजादी क नय प्रवक्ताआ क गस्स का सामना करना पडा। हर जगह अमरीकी फाज परड करती हइ दिखन लगी।

सन् 1775 म ब्रिटन न अपनी प्रभसत्ता जबरन स्थापित करन की शरआत की। जनरल गज का आदश दिय गय। 18 अप्रल 1775 का गज क दस्त बास्टन स क्नकाड (Concord) गय ताकि अमरीकी फाज की सप्लाइ का नष्ट कर सक। लक्सीग्टन (Lexington) म पहली लडाइ हुई। अग्रज फाज का बास्टन तक पीछ हटना पडा। इस तरह अमरीकी आजादी क लिए यद्ध की शुरुआत हई।

ब्रिटन जुलाइ 1776 तक अपनी फाज अमरीका पहुचा पाया। तब तक काटीनटल



बोस्टन मे हआ हत्याकाड

काग्रस न जाज वाशिगटन का अमरीकी फौज का कमाडर नियक्त कर दिया था। अमरीकिया न बास्टन स अग्रजा का भगा दिया आर उनक समथका व प्रतिराध का कुचल डाला। 2 जुलाइ 1776 का काटीनटल काग्रस न आजादी का दावा पश किया। दो दिन बाद टामस जैफसन द्वारा लिखित स्वतत्रता का घाषणा-पत्र जारी किया गया। इस घाषणा पत्र म मानवता का आतक आर कशासन क खिलाफ विद्राह करन का अधिकार दिया गया था। इसी क साथ सभी उपनिवशा म ब्रिटिश सरकार बठ गयी आर अमरीकी राज्या का पहला रूप सामन आया।

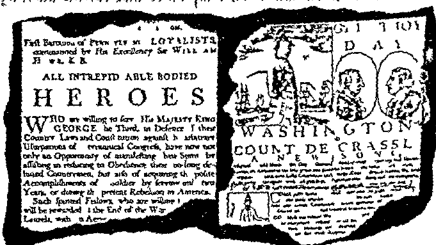
ब्रिटन न इस क्राति का कुचलन क लिए 45 000 सनिक भज। सन् 1776 क अतिम छ महीना म ब्रिटन की फाज न न्यूयाक स कनाडा तक विद्राहिया की धज्जिया उडा दी। जनरल विलियम हाव क नतत्व म वाशिगटन की फाज का न्यूयाक स डलावयर नदी तक खदड दिया गया। पर इसी क बाद अमरीकिया की जीत का सिलसिला शुरू हुआ। वाशिगटन न साल खत्म हात हात एक बडी जीत हासिल की। नय साल म ब्रिटिश हमला फिर शुरू हुआ पर तब तक अमरीकिया का अग्रजा क दुश्मन फ्रास स हथियार आर पसा मिलना शुरू हा गया था। जनरल हाव न फिलाडल्फिया पर ता कब्जा कर लिया पर वाशिगटन की फाजा का नष्ट नही कर सक। अमरीकी जनरल हारातियो क नतत्व म एक



19 अक्तूबर, 1781 को वाशिंगटन के समक्ष आत्मसमर्पण करते लॉर्ड कार्नवालिस

फौज ने ब्रिटिश जनरल जॉन बरगोन की फौज को करारी शिकस्त दी। यह पहला ब्रिटिश आत्मसमर्पण था।

इस घटना के बाद में अमरीकियों की ताकत बहुत बढ़ गयी। फ्रांस और स्पेन ब्रिटेन से सात साल के युद्ध की हार का बदला लेने का मौका तलाश रहे थे। उन्होंने बिना मांगे सहायता दी। फरवरी 1778 में फ्रांस ने अमरीकी आजादी को मान्यता दे दी और संयुक्त राज्य अमरीका से फौजी संधि कर ली। इससे ब्रिटेन और फ्रांस के बीच युद्ध शुरू हो गया। सन 1779 में स्पेन ने अमरीकी युद्ध में हस्तक्षेप किया। ब्रिटेन का धीरे-धीरे कई यूरोपीय देशों से झगड़ा शुरू हो गया। अब पूरा यूरोप या तो ब्रिटेन का दुश्मन था या तटस्थ। यह पूरी स्थिति अमरीकी क्रांति की सफलता के हक में जाती थी। वह अंतर्राष्ट्रीय संघर्ष में





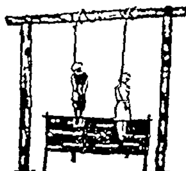
कास्टिट्यूशनल कनवेशन की अध्यक्षता करते हुए वाशिंगटन

बदल गयी। उसक लिए इंग्लिश चनल जिब्राल्टर आर भू-मध्य सागर स लकर अफ्री क पश्चिमी तट, हिंद महासागर और वस्ट इडीज मे भी लडाई लडी जाने लगी।

इस परिस्थिति स परशान होकर ब्रिटन न एक आयाग भेजकर अमरीका को ब्रिटि साम्राज्य क तहत स्वायत्तता दने का प्रस्ताव रखा पर अब देर हा चकी थी। अमरी कागस न इस पर गोर तक नही किया। ब्रिटिश सनापति क्लिटन की फाज न्यूयार्क म ज हा रही थी और वाशिंगटन की फाज चाकन्नी रहकर इस गतिविधि का परख रही थ क्लिटन न दक्षिणी राज्या पर हमला किया, जहा ब्रिटिश समथक टारी ज्यादा थ। पर व क अमरीकिया न छापामार युद्ध शुरू कर दिया। ब्रिटिश सनापति लॉड कानवालिस द्वा नॉथ करालिना पर कब्जा करन की कोशिश जनरल ग्रीन न नाकामयाब कर दी। इस बाद दूसर हमले म ग्रीन न ब्रिटिश फाजा का दक्षिण म बहुत बुरी तरह हरा दिया

वर्जीनिया म कानवालिस ने 7 000 की फोज जमाकर याक टाउन म अड्डा जमाय पर तभी फ्रास न वाशिंगटन की मदद क लिए एडमिरल डी ग्रास क नतत्व म अटलांटिक अपना नडा भज दिया। बड ने ब्रिटिश बड का परास्त करक कार्नवालिस की सप्ल लाइन काट दी। वाशिंगटन ने अपनी ओर फ्रासीसी फाज क साथ कानवालिस पर दक्षिण जमीनी हमला किया। अब 7 000 ब्रिटिश सनिका क मुकाबल वाशिंगटन क पास हजार फौजी थे। मजबूरी म 19 अक्तूबर 1781 का कानवालिस न हथियार डाल दिय

सन् 1782 म ब्रिटन म नॉथ सरकार इसी पराजय क कारण गिर गयी आर उ सयुक्त राज्य अमरीका की आजादी का स्वीकार करना पडा। ब्रिटन की सारी दुनिया म क जगह पराजय हुइ। हर जगह उपनिवशवाद को धक्का लगा। लोकप्रिय सरकारा व स्थापनाए हुईं। अमरीकी स्वतत्रता क घापणा-पत्र न कई मुक्ति-युद्धा का प्रेरणा दी। ■



फ्रांसीसी क्रांति

(1789 1794)

फ्रांसीसी क्रांति ने प्रगतिशीलता और वैचारिक उत्थान में अमरीकी आजादी की लड़ाई को भी पीछे छोड़ दिया। 'समानता, आजादी और भाईचारे' के नारे पहली बार पूंजीवादी प्रतियोगिता बाजार पर आधारित समाज और 'मांग व आपूर्ति' की बीज रूप में रचना की। राजशाही खत्म कर दी गयी। आम जनता की हुकूमत स्थापित हुई। हालांकि यह क्रांति पांच साल बाद असफल हो गयी और नेपोलियन बोनापार्ट के युग की शुरुआत हुई पर इसके भ्रूण में भविष्य का पूंजीवादी समाज मौजूद था।

अमरीकी क्रांति की सफलता के बाद भी दुनिया को 18वीं शताब्दी से कुछ लेना बाकी था। यूरोप और दुनिया के इतिहास को एक निर्णायक मोड़ देने वाली सामंतवाद विरोधी पूंजीवादी क्रांति का बिगुल तो अभी नहीं बजा पर उसके लिए परिस्थितियां तैयार हो रही थीं। यूरोप के राजवंश अपने अस्तित्व के संकट से गुजर रहे थे। लूई सोलहवें ने सन् 1773 में गद्दी संभाली और सन् 1788 तक उसके कुशासन ने सरकारी खजाना खाली कर दिया। सन 1789 तक आते-आते फ्रांसीसी एस्टेट जनरल (Estate General) के तीनों प्रतिनिधि तबकों में अलग-अलग कारणों से असंतोष पनपने लगा। ये तीन तबके थे—कुलीन वर्ग (Nobles) पुरोहित वर्ग (Clergy) और थर्ड एस्टेट यानी सामान्य जनता।

कुलीनों को एतराज था कि राजा के मंत्रीगण मनमानी कर रहे हैं। पुरानी प्रांतीय आजादी के वकील सत्ता के अत्यधिक केन्द्रीकरण के खिलाफ थे। ब्रिटेन की संसदीय क्रांति और अमरीकी आजादी के युद्ध से प्रभावित लोग थामस पाइन (Thomas Paine) के मनुष्य के अधिकारों संबंधी विचारों से बहुत प्रभावित थे। आम आदमी के प्रतिनिधि इस बात से नाराज थे कि खजाना खाली होने का सारा बोझ करों के रूप में किसानों के कंधों पर डाल दिया गया है। सन् 1786 का औद्योगिक संकट सन् 1787 और सन् 1788 में हुई



राब्सपियरे

खराब फसलो के साथ मिलकर आर्थिक तबाही ढा रहा था। दाम बढते चल जा रह थ और अकाल का डर जनमानस को सता रहा था।

एसे विकट समय म लूई सालहव और मारिया थेरसा (Maria Theresa) की बेटी मेरी एण्टोइनिट (Marie Antoinette) न अपन शासन म सुधार करन की तरफ बिलकल ध्यान नही दिया। राजा को चाहिए था कि वह जनता की तकलीफो को दखत हुए सुविधा-सपन्न कुलीन तबक का नियत्रण म रखता। पर एसा नही किया गया। बढत हुए आर्थिक सकट ने राजा को करीब डढ़ सौ वर्ष बाद वर्साई (Versailles) एस्टट जनरल बुलान पर मजबूर कर दिया। अपनी प्रजा के तीनो तबको से राजा यह पूछना चाहता था कि राष्ट्र पर चढ़े कर्जे को कैस उतारा जाये? अथ-व्यवस्था कैस दुरुस्त की जाय? इसस पहल सन् 1614 म एस्टेट जनरल की बैठक हुई थी। उस समय म अब तक थड एस्टट के प्रतिनिधि दागुन हो चुके थे। एस्टेट जनरल के 1 100 प्रतिनिधियो म स आध थड एस्टेट के ही थे। कई वकील और बुद्धिजीवी एस्टेट जनरल म थड एस्टेट के प्रतिनिधि बन कर गय। इनमे राब्सपियरे (Robespierre), वालनी (Volney) आर खगोलविद् बली (Bailly) क नाम प्रमुख थे। कुलीनो के प्रतिनिधियो क रूप म ड्यूक आफ आलियस (Duke of Orleans) और मारक्विस दि लेफायत (Marquis de Lafayette) थ। लेफायत अमरीका की आजादी के नायक जॉर्ज वाशिगटन क दास्त थ आर उन्होन उस लडाइ म हिस्सा भी लिया था। पुरोहित वर्ग क प्रतिनिधि थ कार्डिनल रोहन (Cardinal Rohan), हनरी ग्रिगाइर (Henry Grigoir) आर चार्ल्स मॉरिस दि टालीरण्ड (Charles Maurice de Tollegrand)। इसक अलावा थर्ड एस्टट के पास मारक्विस दि



मारक्विस दि मिराब्यु

मिराब्य (Marquis de Mirabeau) ओर एब्बी सीएस (Abbe Sieyes) जैस दो नता भी थ जो मानते थ कि कुलीन वर्ग के पर आम लोगों के अधिकारों की हिमायत करत थ। सीएस न तो एस्टट जनरल की बैठक म पहल एक पर्चा भी प्रकाशित किया था जिसम 'व्हाट इज थर्ड एस्टट?' शीर्षक क तहत जनता क अधिकारों का बलद किया गया था। इस पर्च न सीएस की लोकप्रियता काफी बढ़ा दी थी।

5 मई 1789 को एस्टट जनरल की बैठक शुरू हुई। दो महीन तक यह बहस चलती रही कि फैसल बहुमत क आधार पर होंग या नहीं? दूसरा तरीका सुविधा सपन्न तबका क हक म जाता था। 17 जून को थर्ड एस्टट वालों न कहा कि व फ्रांस क 96 प्रतिशत लोगों क प्रतिनिधि हैं इसलिए व ही राष्ट्रीय असेंबली हैं और व जो टैक्स मानग वही कानूनी होगा। थर्ड एस्टट की ताकत दखकर पुरोहित वर्ग क बहुत स प्रतिनिधि उसम आ मिल। यह दखकर राजा न मरजी की और थर्ड एस्टट वालों को मदन स निकाल दिया। थर्ड एस्टट क डिप्टी पास क टनिस कोर्ट म बैठक करन पहुच गय। टनिस कोर्ट म ही उन जन प्रतिनिधियों न शपथ ली कि जब तक व फ्रांस को नया संविधान नहीं द दत तब तक अपनी बैठक भग नहीं करग। 20 जून को यह ऐतिहासिक घटना हुई। तीन दिन बाद राजा न उन्ह चतावनी भजी और फौरन अपनी बैठक खत्म करन को कहा। थर्ड एस्टट क मिराब्य न अपना प्रसिद्ध उत्तर दिया कि संगीन की नोक पर ही उन्ह हटाया जा सकता है। राजा नशनल असेंबली स डर गया। उसन वसाइ म सैनिक जमा करन शुरू कर दिए।

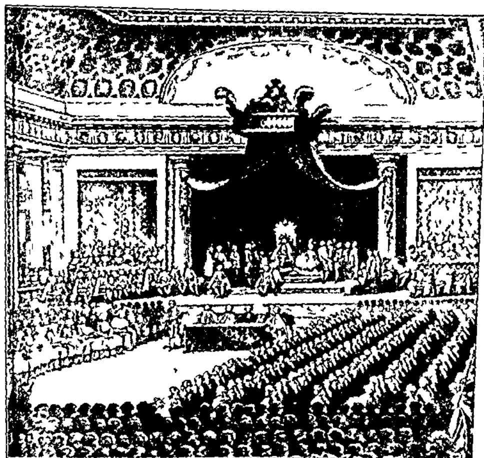
उधर पेरिस म जनता क अदर कुलीनों क खिलाफ भावनाए भड़क रही थी। राजा नशनल असेंबली म सुविधाभोगी वर्ग अपनी सुविधाए छिन जान स और थर्ड एस्टट

कुलीना क हमल क अदशा स डर हुए थे। परिस बराजगारा और शरणार्थिया स बजबजा रहा था। लागा का यकीन हा चला था कि कुलीन वर्ग उनक खिलाफ साजिश कर रहा है। इस माहाल म पूर दश म दग भडक उठ। इन पर काबू पा सकन का इलजाम लगाकर राजा न अपन प्रधानमत्री नकर (Necker) को बर्खास्त कर दिया। 14 जुलाई का कलीन वग म अपनी रक्षा करन क लिए हथियार तलाशती भीड न किलेनुमा जल बस्टील (Bastille) म घुसन की काशिश की। जल क गवर्नर लाउन (Launay) न सैनिका म भीड पर गालिया चलवायी। कइ नागरिक मारे गय। इसक बाद ता परिसवासिया का गम्सा भडक उठा आर उन्हान ताप घमीटकर मार्च पर लगा दी। बस्टील पर हमला बाल दिया। गवनर का हाथयार डालन पड। भीड उस घसीटकर लायी और उसका सिर धड स अलग कर दिया। बस्टील म कवल सात कदी थ पर उसका पतन क्राति की प्रतीकात्मक शुरुआत बन गया।

परिस क ही नमून पर प्रास क दहाता म भी सघष छिड गया। नयी म्युनिस्पलिटीज बन गयी। ग्रामीणा न हथियार उठा लिय। राजा न घबराकर नकर का दाबारा प्रधानमत्री बनाया आर परिस की क्राति का मान्यता द दी। पर राजा क अधिकार और सत्ता तकरीबन खत्म हा चुक थ। असेंबली क कदमा का कुलीना आर पादरिया न भी समर्थन किया। नय कानूना न सामती सुविधाय, भूदान प्रथा आर सामता पर कर न लगान की परपरा का खत्म कर दिया। पर राजशाही समर्थक एक गुट का ख्याल था कि राजा क बिना पूर दश म अराजकता फल जायगी। इसी बीच पाच-छह हजार लागा न जिनम महिलाए ज्यादा थी वारसा क महल पर कब्जा कर लिया। फिर असबली परिस म बेठी। क्राति पूरी हा चुकी थी।



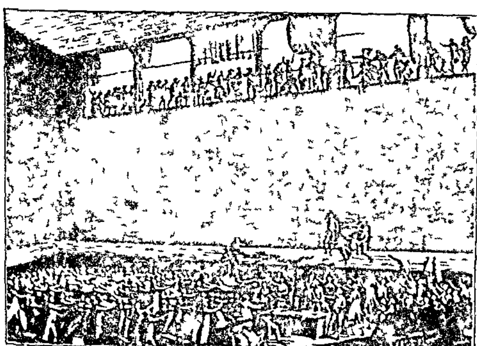
बैस्टील के कारागार पर भीड का हमला



स्टेट जनरल्स की बैठक, जिसे नेशनल असेंबली में बदल दिया गया।

गाव गाव म 'कम्यून' बन गय जिन्होंने एक दूसरे स मिलकर 'फेडरेशन' बना डाली। ''भाईचारा समानता और आजादी'' का नारा हर एक की जुबान पर था। राइन नदी क पुल पर तिरंगा झण्डा लगा दिया गया, जिस पर लिखा था – ' यहा स स्वतत्र धरती की शुरुआत होती है।' नेशनल असेंबली ने नया संविधान बनाया और लूई सोलहव को कसम खानी पडी कि वह इसी संविधान को मानेगा। सन् 1790 क इस दिन स फ्रांस पहली बार एक राष्ट्र क रूप मे उभरा।

उधर असेंबली म खुली बहस का माहौल था। एक स एक धुरधर वक्ता एक दूसरे क विचारो को काटते हुए अपने तर्क रखते थे। इसी दौरान दक्षिण पथी और वामपथी जैसी अभिव्यक्तियो का पहली बार इस्तेमाल हुआ। जिनके जरिए आज तक राजनीति समझी जाती है। क्रांति का यह दौर काफी अव्यवस्था और भयानक सकट का था। राजा न देश छोडकर भागने की कोशिश की पर पकड लिया गया। असैंबली ने पहले उसे निलंबित किया पर फिर माफ करक गद्दी पर बैठा दिया। फ्रांसीसी संविधान की प्रस्तावना डिक्लरेशन ऑफ दि राइट्स ऑफ मैन एण्ड दि सिटीजन अमरीकी स्वतत्रता क

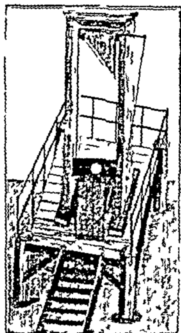


टेनिस कोर्ट में नेशनल असैंबली की बैठक

घोषणा-पत्र से भी आगे का कदम था। यह प्रस्तावना कहती थी कि जन्म से सभी बराबर हैं। सामाजिक विभिन्नताएं तो सामुदायिक उपयोग की दृष्टि से बनायी गयी हैं। कानून सब के लिए एक है। सोचने बोलने और व्यक्ति की स्वतंत्रता सबसे अहम है। समस्त प्रभुसत्ता राष्ट्र में निहित है और कानून सभी की मिली-जुली इच्छा की अभिव्यक्ति है। इस संविधान ने विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका को अलग-अलग कर दिया। फ्रांस ने ब्रिटिश और अमरीका के संसदीय तजुर्बे पर चलने से इंकार कर दिया। फ्रांस में अधिकारों को संतुलित करने के लिए कर्तव्यों का प्रावधान नहीं किया गया था। 'फ्रांस का राजा' एक प्रभुसत्ता संपन्न राष्ट्र का केवल 'प्रथम सेवक' रह गया था। पूरे फ्रांस को 83 भागों में बांट दिया गया। उनके ऐतिहासिक नामों की जगह नदियों और पर्वतों के आधार पर नया नामकरण किया गया। अर्थ-व्यवस्था इस तरह बनायी गयी कि बाजार पर आधारित समाज का जन्म होने लगा। 'मांग और आपूर्ति और पूंजीवादी प्रतियोगिता' की शुरुआत हुई। यह नया ढांचा निकट भविष्य में आने वाली अराजकता का कारण बना पर यही ढांचा अपने भ्रूण में भविष्य के परिपक्व पूंजीवादी समाज के बीज भी छुपाए हुए था।

क्रांतिकारी सरकार ने भू कर, व्यक्तिगत संपत्ति पर कर और धंधा करने के लिए लाइसेंस की व्यवस्था की। एक तरह से राज्य चलाने में सभी के योगदान के उसूल के लिहाज से यह सही कदम था पर व्यवहार में जनता ने टैक्स नहीं दिया। सरकार का खजाना खाली ही रहा।

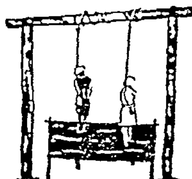
धीरे-धीरे नये क्रांतिकारी सुधारों से लोगों का मोह-भंग होने लगा। 10 अगस्त 1792 को भीड़ ने ट्यूलरिस पैलेस (Tuileries Palace) को घेर लिया। राजा ने भागकर





डॉ गिलोटिन द्वारा ईजाद की गयी मशीन (बाय) पर लूई (दाय) को मत्यु दड देन के लिए ले जाया जा रहा है।

लजिस्लेटिव असेंबली म शरण ली। नागरिका न माग की कि राजा का मुअत्तल किया जाय और एक नशनल कन्वशन चुना जाय जो एक नय सविधान की योजना बनाय। 20 सितबर का कन्वशन की बैठक हुई और उसन सर्वसम्मत स राजशाही खत्म करन का फैसला किया। लुई पर गणराज्य से गद्दारी करन का मुकदमा चला और 21 जनवरी 1793 को फ्रास के राजा को मत्यु दड दिया गया। नयी स्थिति यह थी कि फ्रास क दुश्मन राष्ट्र उसकी कमजोर हालत देखकर हमला करन की योजनाय बना रहे थ। देश-निकाले के शिकार राजशाही के समर्थक साजिश कर रह थे। एसे म क्राति क नायको म स एक राब्सपियर के नेतत्व म जकोबिस (Jacobins) न गणराज्य की रक्षा का बीडा उठाया। पर उनका तरीका बडा खून खराब वाला था। डॉ गिलोटिन की ईजाद की गयी मत्यु दन वाली मशीन का इस्तमाल धडल्ले से होने लगा। सन् 1794 तक जकोबिस ने कमेटी ऑफ पब्लिक सेफ्टी के नाम पर फ्रास को तानाशाही म जकड दिया। क्रातिकारी न्यायाधिकरण न सैकडो लोगो को गिलोटिन पर चढा दिया। रानी मरी एटोइनिट का भी सिर धड स जुदा कर दिया गया। यहा तक कि भिन्न विचारो वाल क्रातिकारी भी नही बख्शे गये। बाद मे क्राति का पतन होन पर राबसपियर को गिरफ्तार करके मत्यु-दड दिया गया। यह राजशाही की वापसी की शुरुआत थी। क्रांति के इसी दौर मे फ्रासीसी तोपखाना रजीमेंट म कमीशन पाकर अफसर बनने वाले नेपोलियन बोनापार्ट के रूप में फ्रास को अपना नया सम्राट और नायक मिलने वाला था। राजकीय व्यवस्था का ढाचा कोई भी रहा हो, फ्रास न सन् 1789 की क्राति के रूप म दुनिया को जो दिया था वह भविष्य निर्माण करने वाला था। इसीलिए फ्रासीसी क्राति को नय युग का आगमन कहा जाता है। ■■



यूनानी और दक्षिण अमरीकी क्राति

(1821 1830)

नेपोलियन के हमलो से कमजोर पडे स्पेनी साम्राज्य क खिलाफ दक्षिण अमरीका ने सैन मार्टिन और साइमन बोलीवार के नेतृत्व मे बगावत का झण्डा बुलद किया। उधर बाल्कन राष्ट्रीयताओ मे यूनान राष्ट्रवादी विद्रोह के दौर से गुजर रहा था। तुर्क साम्राज्य के डूबते हुए सूर्य की रोशनी मे यूनानी प्राचीनता और मिथक शास्त्र यूनानी नौजवानो मे आजादी की चेतना फूकने के लिए काफी थे। ब्रिटेन, फ्रास और रूस ने भी मदद दी और दस साल के रक्तरजित सघर्ष के बाद यूनानियो को अपनी स्वतनता नसीब हुई।

19वीं शताब्दी साम्राज्यवाद उपनिवशवाद और राजशाही क खिलाफ सघर्ष की शताब्दी कही जानी चाहिए। फ्रासीमी क्राति क आदर्शो स अनुप्राणित होकर मन् 1821 म सबस पहल यूनानिया न तुक साम्राज्य क खिलाफ अपनी आजादी का झण्डा बुलद किया। उधर दक्षिण अमरीका क छोट-छाट देश भी स्पेनी गुलामी क जुए का उतार फक्न क लिए मचल रह थ। उन्ह साइमन बोलीवार (Simon Bolivar) जैसा नता मिला जिस दक्षिण अमरीका का जार्ज वाशिंगटन माना जाता था।

यूनानी क्राति

तुर्का का साम्राज्य दक्षिण-पूर्व युराप से लेकर मध्य पूव तक फला हुआ था। 19वी शताब्दी म इसक ढाच म दरार पडनी शुरू हुइ। सुल्तान क कमजार हान का अर्थ था मुल्ला-मोलविया का उद्दण्ड हाना आर अधीनस्थ गर-मुस्लिमा क साथ कडाई स पश आना। नतीजतन उपनिवशा म विद्राह क बीज फूटना। तुर्की की गुलामी म जक्ड यूनानी सबम पहल राष्टवादी भावनाआ म भर उठ क्योकि परिस्थितिया उन्ह इस ओर धकल रही थीं।

यूनानिया का पुराहित वर्ग अर्से स एक राष्टवादी ढाच म सगठित था। समुद्री व्यापार



साइमन बोलीवार



लॉर्ड बायरन

म लगे होने के कारण देश स बाहर हो रही घटनाओ का यूनान पर ज्यादा असर पडता था। इसलिए फ्रांसीसी क्रांति का प्रभाव सबस पहले उन्ही पर पडा।

सन् 1821 म बिशप ऑफ पात्रास (Bishop of Patras) ने विद्रोह की अपील की और मैवरोमिशलिस (Mavro Michalis) न मोरिया (Morea) को आजाद कर लिया। उधर समुद्री युद्ध मे भी तुर्की का यूनानियो न काफी परेशान किया। जनवरी 1822 मे एपीडाउरस (Epidaurus) म राष्ट्रीय असेंबली बुलायी गयी जिसम यूनानी आजादी की माग की गयी। तुर्को ने इसका बडा क्रूर जवाब दिया। उनकी फौज कहर की तरह यूनानियो पर टूट पडी। यूनानियो का भयकर कत्लआम हुआ। यूनानी आजादी के इस सघर्ष म हिस्सा लने आए ब्रिटिश कवि और रूमानी व्यक्तित्व के धनी लॉर्ड बायरन (Lord Byron) न भी अपना जीवन खोया। बायरन की भागीदारी और मौत इस तथ्य का प्रतीक थी कि यूनानी सघर्ष न पश्चिम यूरोप की रोमानी क्रांतिकारिता को काफी आकर्षित किया था। दस वर्ष चले आजादी के इस युद्ध न पुरानी यूनानी किवदंतियो और मिथको को एक बार फिर लोकप्रिय बनाया और अपनी प्राचीनता की खुराक पर पल रहे यूनानी नोजवानों मे कुर्बानी का एक नया जज्बा फका।

बहरहाल तुर्की न मोरिया पर फिर स कब्जा कर लिया। यूनानियों की एक परपरागत खराब आदत आपस म भी लडने की थी। व आपस मे भी उतनी ही शिद्दत क साथ लडते जितना तुर्कों के खिलाफ। तुर्को को उनकी इस प्रवृत्ति स काफी मदद मिली और यूनानी बगावत का पहला दौर आसानी स कुचल दिया गया। पर यूनान तो यूरोप को दर्शन देने वाला देश था। जब तुर्कों न मिस्रियो को यूनानी विद्रोह कुचलने के लिए बुलाया



दक्षिण अमरीका का मानचित्र

स वाल्वा की खाडी (Gulf of Volvo) का इलाका राष्ट्र क रूप म मिला। 3 फरवरी 1830 का यूनान एक प्रभसत्ता सपन्न राष्ट्र घोषित हुआ।

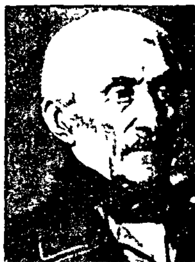
दक्षिण अमरीका की क्रातिया

स्पन क अमरीकी उपनिवशा ने सन् 1816 स ही अपनी मुक्ति की घोषणाए करनी शुरू कर दी थी। सैन मार्टिन (San Martin) क नतत्व म अर्जेटीना आजाद हो चुका था। मार्टिन न एण्डीज पर्वतमालाए पार कर एक साहसपूर्ण अभियान म चिली को भी आजाद करा लिया था। चिली की आजादी क दीवाना का नतृत्व बर्नार्डो ओहिग्गिन्स (Bernardo O Higgins) न किया था। नपोलियन क हमला ने स्पन की राजशाही को कमजोर कर दिया था इसलिए उसक उपनिवश मौका दखकर एक एक करक आजाद होत चल जा रह थ। जैस ही पर्तगाल न पहला प्रथम को ब्राजील का सम्राट माना और लातीनी अमरीका का सबस बडा दश आजाद हुआ वैस ही महान मुक्तिदाता साइमन बालीवार न क्रांतिकारियो की फौज लकर बोलीविया की आजादी क लिए मुहिम छड दी। बालीवार न न्यू ग्रैनडा की लडाइ जीतन म अद्भुत शौर्य कुशलता का परिचय दिया। इस इलाक का नाम ही बाद म बालीवार क नाम पर बोलीविया पडा।

एक और साहसपूर्ण फौजी अभियान म पहाड क बनजारा को भी बालीवार न आजादी दिलवादी। सन् 1821 म ही सैन मार्टिन न पेरू को आजाद किया। मैक्सिको म विद्रोह की पहली कोशिश नाकाम ही होन जा रही थी कि एक स्पनी जनरल इटर्बाइड



जेम्स मुनरो



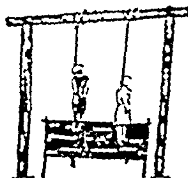
सैन मार्टिन

इटुरबाइड (Creol Iturbide) विद्राहियों स मिल गया और उसकी मदद स मैक्सिको आजाद हो गया।

इस दक्षिण अमरीका का दुर्भाग्य ही कहा जायगा कि साइमन बालीवार की सन् 1830 म मृत्यु हा गयी। अगर व कुछ दिन आर जीवित रहत ता सन मार्टिन आर आहिग्गिन्स क साथ मिलकर दक्षिण अमरीका क्रातिया क हिता का सुदृढ करत। सयुक्त राज्य अमरीका न सन् 1822 म ही दक्षिण अमरीका क इन नव-स्वतत्र दशा का मान्यता द दी थी। उत्तरी अमरीका न भी ता ब्रिटिश उपनिवशवादिया स इसी तरह लडकर अपनी आजादी हासिल की थी। सयुक्त राज्य शुरू स ही बालीवार आर सन मार्टिन की कोशिशा के प्रति हमदर्दी रखता था। इसर इन उपनिवेशा क आजाद हान स अमरीकी व्यापार म इजाफा हाने की सभावनाए भी थीं। इन्ही मिल-जुल कारणा से सयुक्त राज्य अमरीका के राष्ट्रपति जेम्स मुनरा (James Monroe) न युरापियन ताकता का चतावनी दी कि वे नयी दुनिया क दशा म हस्तक्षेप करने की जुरत न कर। इस चतावनी स कई युरापीय दशा खासकर जार की व कोशिश थम गयी जा चाहती थी कि दक्षिण अमरीका म एक बार स्पनी शासन हा जाय आर अगर एसा न हा सक ता किसी न किसी तरह की राजशाही ता स्थापित हा ही जाय। मुनरा का यह कदम मुनरा डॉक्टिन (Monroe Doctrin) क नाम स जाना जाता है।

ब्रिटन शुरू स ही विद्राहिया का थाडी-बहुत मदद दता रहा था। उसन अर्जेटीना क साथ व्यापार-सधि कर ली। सन् 1824 म दक्षिण अमरीका म अंतिम स्पनी सना पराजित की गयी आर दा साल बाद अंतिम स्पनी तापखाने ने हथियार डाल दिय। इसी के साथ दक्षिण अमरीका म स्पनी साम्राज्य का नामोनिशान मिट गया।

बोलीवार न बोलीविया क राष्ट्रपति क रूप मे पनामा म दूसर नताआ की मदद स इन नव स्वतत्र दशो का एक महासघ म गठित करन का असफल प्रयास किया। अगर एसा हा जाता तो ये छाट-छाट दश आपसी लडाइ म अपनी ऊर्जा बरबाद न करत। ■■



जुलाई क्रांति और बेल्जियम की आजादी

(1830-1839)

फ्रांसीसी क्रांति की पराजय जरूर हो गयी थी लेकिन उसका विचार-दर्शन अभी पूरी ताकत के साथ मौजूद था। नेपोलियन के पराभव के बाद फ्रांस भीतर ही भीतर एक और क्रांति के लिए तैयार हो रहा था। लुई फिलिप को सत्ता में लाने वाली इस क्रांति ने एक ऐसा राजा दिया जो फ्रांस का नहीं बल्कि 'फ्रांसीसियों' का राजा था। इन्हीं परिस्थितियों की स्वाभाविकता ने बेल्जियम की क्रांति का रास्ता खोला। फ्रांस और हॉलैंड की तमाम साझा कोशिशों के बावजूद बेल्जियम के रणबांकुरों ने अपनी आजादी हासिल करके ही दम ली।



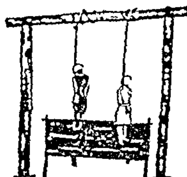
चार्ल्स का राज्यारोहण-समारोह

शनुतापूर्ण समीकरण आखिर कब तक चल पाता। चार्ल्स ने छाट-छाटकर अनुदारवादियों को अपनी हकूमत में भर लिया। लोगों को डर लगने लगा कि कहीं वह उनके छिले कंधों पर तानाशाही का जुआ फिर से न लाद दे।

सन् 1830 में प्रतिनिधि सभा (Chamber of Deputies) के चुनाव हुए। इसमें जनता ने खुलकर अपना गुस्सा-गुब्बार निकाला और चार्ल्स चुनाव हार गया। चार्ल्स ने जनादेश की उपेक्षा की और चेंबर को बेशर्मी से भंग कर दिया। अब वह राजाज्ञाएं निकाल निकालकर हुकूमत करने लगा। ऐसी ही एक राजाज्ञा के जरिए चार्ल्स ने प्रेस की आजादी पर पाबंदी लगा दी और चुनाव के नियम बदल दिये। फिर इसके बाद जैसे पूरे राष्ट्र की इच्छाओं का अपमान करता हुआ चार्ल्स शिकार खेलने चला गया।

पेरिस के प्रिंटर बेरोजगारी के अंदेशे से घिर गये। उन्होंने विरोध में अपना धंधा बंद कर दिया। उनकी देखा देखी दूसरों ने भी ऐसा ही कदम उठाया। जुलाई की भीषण गर्मी में गुस्से से खौलते हुए लोग क्रांति के प्रतीक तिरंगे की छांव में जमा होने लगे। नात्र डेम (Notre Dame) चर्च पर तिरंगा लहराने लगा। चार्ल्स की हरकतों पर यह अनापेक्षित प्रतिक्रिया देखकर सरकार भौंचक्की रह गयी। उसके पास तो इस बगावत को दबाने के लिए पूरे फौजी तक न थे। 27 जुलाई को शुरू हुई यह क्रांति 29 जुलाई तक आते-आते कामयाबी की मंजिल तक पहुंच चुकी थी।

पेरिस के छात्रों और मजदूरों ने बेरिकेड खड़े कर लिए और खुद को नगर का मालिक घोषित कर दिया। चार्ल्स की कुछ समझ में न आया। उसने घबराकर गद्दी छोड़ दी और अपने पौत्र ड्यूक ऑफ बार्डेक्स (Duke of Bordeaux) को राजा बनाने की घोषणा कर दी। पर क्रांतिकारियों ने इस समस्या का हल मानने से इंकार कर दिया। क्रांति में मुख्यतः



जुलाई क्रांति और बेल्जियम की आजादी

(1830 1848)

फ्रांसीसी क्रांति की पराजय जरूर हो गयी थी, लेकिन उसका विचार-धारात्मक असर पूरी शिद्दत के साथ मौजूद था। नेपोलियन के पराभव के बाद फ्रांस भीतर ही भीतर एक और क्रांति के लिए तैयार हो रहा था। लूई फिलिप को सत्ता में लाने वाली इस क्रांति ने एक ऐसा राजा दिया जो 'फ्रांस' का नहीं बल्कि 'फ्रांसीसियों' का राजा था। इन्हीं परिस्थितियों के ज्वालामुखी से बेल्जियम की क्रांति का लावा फूटा। फ्रांस और हॉलैंड की तमाम नापाक कोशिशों के बावजूद बेल्जियम के रणबांकुरे क्रांतिकारियों ने अपनी आजादी हासिल करके ही सांस ली।

फ्रांसीसी क्रांति के असफल हो जाने का यह मतलब कतई नहीं था कि उन विचारों और सपनों की मौत हो गयी थी, जो इस क्रांति के मौलिक स्रोत थे। यह ठीक है कि नेपोलियन बोनापार्ट ने अपनी साम्राज्यवादी महत्त्वाकांक्षाओं को फलते-फूलते देखने की गरज से पूरे यूरोप को युद्ध की आग में झोंका। यही नहीं खुद को सम्राट बनाकर अपना राजवंश चलाने तक का अधिकार भी हासिल कर लिया पर उसके शासन ने कुछ उदार कदम भी उठाये। ये सभी उठे कदम फ्रांसीसी क्रांति की परंपरा में ही थे। इन्हीं के फलस्वरूप राजशाही दोबारा कभी अपनी पहले जैसी जड़ नहीं जमा सकी। सन् 1814 में लूई अट्ठारहवें ने शासन संभाला और देश से दूर निर्वासित जीवन गुजार रहे फ्रांसीसी सामंत अपने पूरे रंग-रुतबे के साथ वापस आने लगे। उन्होंने अपनी-अपनी जागीरें संभाल लीं। आम लोगों को यह सब एक आंख न भाया पर उन्हें सही वक्त का इंतजार था।

फ्रांसीसी क्रांति के प्रभाव में यूनान अपनी आजादी जीत चुका था। दक्षिण अमरीका में साइमन बोलीवार के नेतृत्व में मुक्ति की आग धधक चुकी थी। लूई के बाद उसका बेटा चार्ल्स दशम गद्दी पर बैठा। राजा बनने से पहले चार्ल्स एक अतिप्रतिक्रियावादी दल का नेता था। न उसे जनता में दिलचस्पी थी और न ही जनता को उसमें। राजा और प्रजा का यह



चार्ल्स का राज्यारोहण समारोह

शत्रुतापूर्ण मर्मीकरण आखिर कब तक चल पाता। चार्ल्स न छाट-छाटकर अनुदारवादिया का अपनी हुकूमत म भर लिया। लागा को डर लगन लगा कि कही वह उनक छिल कधा पर तानाशाही का जुआ फिर स न लाद दे।

सन् 1830 म प्रतिनिधि सभा (Chamber of Deputies) के चुनाव हुए। इसम जनता ने खुलकर अपना गुस्सा-गुब्बार निकाला और चार्ल्स चुनाव हार गया। चार्ल्स न जनादेश की उपेक्षा की और चबर का बशर्मी से भग कर दिया। अब वह राजाज्ञाए निकाल निकालकर हुकूमत करन लगा। एसी ही एक राजाज्ञा क जरिए चार्ल्स न प्रस की आजादी पर पाबदी लगा दी और चुनाव क नियम बदल दिय। फिर इसक बाद जेसे पूर राष्ट्र की इच्छाआ का अपमान करता हआ चार्ल्स शिकार खलन चला गया।

पेरिस क पिंटस बराजगारी के अदश स घिर गये। उन्हान विरोध म अपना धधा बद कर दिया। उनकी देखा देखी दूसरा न भी एसा ही कदम उठाया। जुलाई की भीषण गर्मी म गुस्स स खौलत हुए लाग क्रांति क प्रतीक तिरग की छाव म जमा होन लग। नात्र डेम (Notre Dame) चच पर तिरगा लहरान लगा। चाल्स की हरकता पर यह अनापेक्षित प्रतिक्रिया दखकर सरकार भौंचक्की रह गयी। उसक पास ता इस बगावत को दबान के लिए पूरे फाजी तक न थ। 27 जुलाई को शुरू हुई यह क्रांति 29 जुलाई तक आत-आते कामयाबी की मंजिल तक पहुच चुकी थी।

पेरिस के छात्रा और मजदूरा न बेरिकड खड कर लिए और खुद का नगर का मालिक घोषित कर दिया। चार्ल्स की कुछ समझ म न आया। उसने घबराकर गद्दी छाड दी और अपन पौत्र ड्यूक ऑफ बार्डेक्स (Duke of Bordeaux) को राजा बनान की घापणा कर दी। पर क्रांतिकारिया ने इसे समस्या का हल मानन स इकार कर दिया। क्रांति म मुख्यत

उदारतावादी और बोनापार्टवादी भाग ले रहे थे। मृत्यु के बाद नेपोलियन की छवि एक ऐसे 'पौराणिक नायक' की हो गयी थी जो न केवल फ्रांसीसी साम्राज्य की 'महाकाव्यात्मक विजय' का प्रतीक था बल्कि मुक्तिदाता के रूप में भी देखा जाता था। बोनापार्टवादियों ने सन् 1815 की शर्मनाक संधियों को मिटा देने की आकांक्षा के साथ भी क्रांति की थी। इसका मतलब था कि अगर उनकी चलती तो फ्रांस की फौज बेल्जियम को हड़पने और राइन नदी के बायें तट तक साम्राज्य फैलाने की कोशिश करती। पर क्रांति से जुड़े घटक उदारतावादियों का इरादा कुछ और ही था। थियेर (Thiers) नामक एक युवक पत्रकार और लाफित (Laffitte) नामक प्रभावशाली बैंकर ने इस संकट का हल निकालने में पहलकदमी की। उन्होंने चार्ल्स के राजवंश में ही एक ऐसा सामंत तलाशा, जो न केवल उदारतावादी विचारों का था बल्कि गणराज्य के हक में लड़ भी चुका था। ड्यूक ऑफ आर्लियन्स (Duke of Orleans) लुई फिलिप को नया राजा बनने के लिए चैंबर द्वारा निमंत्रित किया गया। लुई फिलिप ने सार्वजनिक रूप से क्रांतिकारी झंडे में आस्था जताई और 'क्रांति के प्रतीक' बन चुके लाफायत (Lafayette) को गले से लगाया। लुई ने वायदा किया कि वह फ्रांस का राजा बनने के बजाय फ्रांसीसियों का राजा बनकर दिखायेगा।

इस तरह जिस क्रांति का बीज वपन आम जनता के असंतोष से हुआ था, वह पूंजीपति वर्ग की राजशाही में बदल गयी। उस जमाने में यही पूंजीपति वर्ग सबसे प्रगतिशील और क्रांतिकारी वर्ग था और फ्रांसीसी क्रांति के समानता, स्वतंत्रता और भाईचारे के महान नारे का प्रतिनिधित्व करता था।



चार्ल्स का पलायन



लिबर्टी एट बेरिकेड्स जुलाई क्रांति का प्रसिद्ध प्रतीक चित्र



लूई फिलिप के दो चेहरे। अपनी गलत नीतियो और अलोकप्रियता के कारण उसे इस रूप मे चित्रित किया गया।

और पूजीपतियो की प्रिय सरकार देखते ही देखते अलोकप्रिय होन लगी। मजदूरो, सिपाहियो और युवा क्रांतिकारियो की लूई फिलिप की सरकार मे स दिलचस्पी खत्म हो चुकी थी। जुलाई-क्राति स शुरू हुई 18 साल की राजशाही का अत धीर-धीर पास आ रहा था। सन् 1848 की क्राति ने लूई के शासन पर निर्णायक चाट मारकर उसका अत कर दिया।

बेल्जियम की क्राति

लूई क इस पूजीवादी शासन की देन एक और क्राति थी, जिस दुनिया बेल्जियम की आजादी के नाम से जानती है। 16वी शताब्दी के आखिर म डचो न अपनी आजादी हासिल की थी। तब भी हॉलैंड के दक्षिण प्रात स्पेन के शासन क शिकजे म कसे रह गये थ। बाद म आस्ट्रिया के साम्राज्य ने उन पर कब्जा कर लिया था। नेपोलियन की फौजो न आस्ट्रिया को ध्वस्त कर दिया पर सन् 1814 म नेपोलियन की पराजय क बाद इन प्राता को हॉलैंड के साथ चस्पा कर दिया गया। य प्रात बेल्जियम क नाम से जाने जात थ। डचो के साथ जुडना बेल्जियमवासियो को कभी अच्छा नही लगा। दोनो के धर्म भाषा और सामाजिक रीति रिवाज एकदम अलग-अलग थे। डच राजा के शासन म बेल्जियमो को महसूस होता कि उनके साथ दूसरे दर्जे के नागरिक जैसा सौतला सलूक हो रहा है।

सन् 1830 मे डच शासन के खिलाफ दगे होने लगे जो जल्दी ही एक निर्णायक क्राति की शक्ल में बदल गये। 4 अक्तूबर को ब्रूसेल्स (Brussels) म बेल्जियम की आजादी की घोषणा कर दी गयी। हॉलैंड ने घबराकर 'वियना की सधि' को कायम रखने की गारटी दने वाले देशों से मदद की अपील की। य देश बेल्जियम क्राति को दबाने के हक म थ क्योकि उनके हिसाब से राइनलैंड, स्विट्जरलैंड और इटली तक इस क्राति का असर पड सकता



चार्ल्स का पेरिस आगमन

जाहिर था कि एम राजा क अधिकार ता और कम हात चल जान थ। लूइ फिलिप क समथक दा भागा म वट हए थ। प्रगतिशील गुट मूवमट क नाम स आर मध्यवर्गी गट रसिस्टस क नाम म जाना जाता था। राजा ने पहल मूवमट वाला का बढावा दिया आर फिर रसिस्टस वाला का। शासन पद्धति म सुधार हुए। तय क्या गया कि राजा राजानाआ क नाम पर निरकश शासन नही चला सकता। मताधिकार का आर व्यापक तथा पना बनाया गया जिसस मतदाताआ की सख्या पहल की तुलना म दागनी हा गयी। जुलाइ क्रांति क चरित्र क मुताबिक ही लूइ न खशहाल मध्यम वर्ग का आग बढाया। उनकी तिजारिया म पैसा बढ़न लगा। फ्रास के इस वग की समद्धि की झलक वालजाक क उपन्यासा म दखी जा सकती है। फाइनसरा उद्यागपतिया और व्यापारिया न कपि रलव और विदश नीति इस तरह बनायी कि उस युद्ध म न फसना पड आर व्यापारी वर्ग फलता फूलता रह।

जिस अनपात म पूजीपति वर्ग की जब भर रही थी दूसरी आर उसी अनपात म बहसख्यक लागा की गरीबी भी बढ रही थी। राष्ट्रवादी इसलिए नाराज हा रह थ कि फ्रास बल्जियम और अल्जीरिया क मामल म ब्रिटन का खश करन की नीति अपना रहा था। क्रांतिकारी इसलिए चिढ हुए थ कि जिस उ हान बहसख्यक लागा का राजा बनाया वह सिफ मध्यवर्गीय व्यापारिया का माउथपीस बनकर रह गया था। राजशाही क समथक मानत थ कि लूई फिलिप का ता आनवंशिक रूप म राजा बनना ही नही चाहिए था। उनक हिसाब स वह राजघरान क ऊपरी तबक की सतान था ही नही। बानापार्टवादी मानन लग थ कि लूई न उनकी साम्राज्यवादी आकाक्षाआ का चाट पहुचाई है। इस बहवर्गीय असताप क नतीजतन मजदूरा की हडताल हान लगी सना म बगावत की चिगारिया भडकन लगी और पेरिस की सडक युद्ध क मदान म बदलन लगी। व्यापारियो





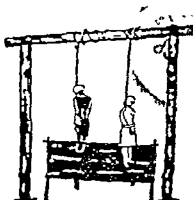
लूई फिलिप के दो चेहरे। अपनी गलत नीतियो और अलोकप्रियता के कारण उसे इस रूप मे चित्रित किया गया।

और पूजीपतियो की प्रिय सरकार देखते ही दखत अलोकप्रिय होने लगी। मजदूरो, सिपाहियो और युवा क्रांतिकारियो की लूई फिलिप की सरकार म स दिलचस्पी खत्म हो चुकी थी। जुलाई-क्रांति स शुरू हुइ 18 साल की राजशाही का अत धीर-धीर पास आ रहा था। सन् 1848 की क्रांति न लूई क शासन पर निर्णायक चोट मारकर उसका अत कर दिया।

बेल्जियम की क्राति

लूई के इस पूजीवादी शासन की देन एक और क्रांति थी, जिसे दुनिया बल्जियम की आजादी के नाम से जानती है। 16वी शताब्दी के आखिर मे डचो न अपनी आजादी हासिल की थी। तब भी हॉलैंड के दक्षिण प्रात स्पेन के शासन क शिकजे म क्रम रह गय थ। बाद मे आस्ट्रिया के साम्राज्य ने उन पर कब्जा कर लिया था। नेपोलियन की फौजो ने आस्ट्रिया को ध्वस्त कर दिया पर सन् 1814 मे नपोलियन की पराजय क बाद इन प्राता को हॉलैंड क साथ चस्पा कर दिया गया। ये प्रात बल्जियम क नाम स जान जात थे। डचो क साथ जुड़ना बेल्जियमवासियो को कभी अच्छा नही लगा। दोनो क धर्म भाषा और सामाजिक रीति रिवाज एकदम अलग-अलग थ। डच राजा क शासन म बल्जियमो को महसूस होता कि उनके साथ दूसरे दर्जे के नागरिक जैसा सौतला सलूक हो रहा है।

सन् 1830 म डच शासन के खिलाफ दग होने लगे, जो जल्दी ही एक निर्णायक क्रांति की शक्ल में बदल गय। 4 अक्तूबर को ब्रूसल्स (Brussels) मे बल्जियम की आजादी की घोषणा कर दी गयी। हॉलैंड ने घबराकर वियना की संधि को कायम रखने की गारटी दन वाले देशो से मदद की अपील की। य देश बेल्जियम क्रांति को दबाने क हक मे थ क्योकि उनके हिसाब स राइनलैंड, स्विट्जरलैंड और इटली तक इस क्रांति का असर पड सकता

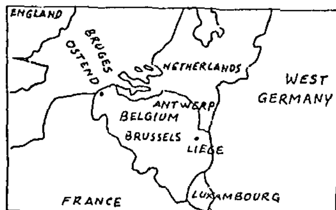


भारतीय स्वतंत्रता का प्रथम संग्राम

(1857 1859)

प्लासी के युद्ध के बाद अंग्रेजी साम्राज्य की जड़े भारत मे गहरी जमती चली गयीं, पर भारतीय राजे-रजवाड़ो, जनता और सिपाहियो ने पूरे सौ वर्ष तक विद्रोह की परपरा भी कायम रखी। सन् 1857 मे एक अभूतपूर्व विद्रोह हुआ, जिसमे अभी तक के सभी विद्रोहो की प्रवृत्तिया और उनका अखिल भारतीय स्वरूप परिलक्षित हो रहा था। इसमे जमींदार, राजा, नवाब, बादशाह, पंडित, मौलवी, सरकारी कर्मचारी, सिपाही, कारीगर और किसान शामिल थे। विदेशी इतिहासकार इस विद्रोह को 'सिपाहियो का गदर' कहकर अपमानित करते है, पर यह वास्तव मे भारतीय स्वतंत्रता का पहला महासंग्राम था। इसका नेतृत्व बहादुर शाह जफर, नाना साहब, लक्ष्मी बाई, तात्या टोपे, बख्त खा, फिरोज शाह, बेगम हजरत महल, कुंअर सिंह और मौलवी अहमदशाह ने जान की बाजी लगाकर किया। विद्रोह असफल रहा पर इसने अंग्रेजी साम्राज्य की चूले इस दर्जा हिला दीं कि ब्रिटेन को ईस्ट इंडिया कपनी से भारत की बागडोर अपने हाथ मे लेनी पड़ी।

अंग्रेजो ने ससदीय क्रांति करके अपनी जनता को तो आजादी और खुशहाली का स्वाद चखाया लेकिन उसकी कीमत उनके उपनिवेशो की जनता को चुकानी पड़ी। ब्रिटेन में औद्योगिक क्रांति हुई और ज्ञान विज्ञान के क्षेत्र म असाधारण उन्नति हुई। दरअसल उन्नति के कुकुरमुत्ते की जड मे कही न कही ब्रिटेन के उपनिवेशो के किसानों और व्यापारिक शोषण की खाद पर फल-फूल रही थी। अग्रज सौदागरो की विशाल कपनी ईस्ट इंडिया कपनी न व्यापार करने की नियत स भारत की धरती पर कदम रखा था लेकिन ढहत हुए मुगल साम्राज्य और खोखल होते हुए भारतीय सामतवाद ने उसे सत्ता पर अधिकार करने का सुनहरी मौका दे दिया। ब्रिटेन के व्यापारिक हितो को हुकूमत की बागडोर अपने हाथो म रखकर और भी सुरक्षित रखा जा सकता था।

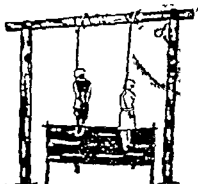


बेल्जियम का मानचित्र

था, लेकिन ब्रिटेन बुरी तरह अड गया। उसने तय किया कि वह फ्रास को इस युद्ध क पचडे मे नही पडने देगा। फ्रांस की नयी सरकार भी किसी कीमत पर युद्ध क मूड म नही थी। लूई फिलिप ने टेलीरैण्ड (Talleyrand) को रिटायरमेट स बुलाकर ब्रिटेन के साथ समझौता-वार्ता करने भेजा। 76 वर्षीय टलीरैण्ड ने लदन जाकर ब्रिटेन को विश्वास दिला दिया कि फ्रास बल्जियम म हस्तक्षेप करने के खिलाफ है। इसी क बाद एक फौजी सधि हुई, जिसन बल्जियम और हॉलैंड क बीच युद्ध-विराम करा दिया। बेल्जियम को एक स्वतत्र एव तटस्थ राष्ट घोषित कर दिया गया। रूस का जार इस घटनाक्रम से खुश नही था, पर उसी समय पोलेंड मे विद्रोह शुरू हो गया। इससे उसका ध्यान बट गया और उसे इस मामले म टाग फसाने का मौका ही नही मिल पाया।

अब यह समस्या मुह बाए खडी थी कि बल्जियम का राजा कौन बने? काफी सोचने समझने क बाद सक्स कोबुर्ग (Sexe Coburg) के राजकुमार प्रिंस लियोपोल्ड को राजा बनाया गया। पर नय राज्य की सीमाओ क सवाल पर हॉलेंड और बेल्जियम म फिर झगडा हो गया। बल्जियम का दावा था कि मास्ट्रिच (Maastricht), लिम्बर्ग (Limberg) और लुक्समबर्ग (Luxemburg) उसके दायरे म होने चाहिए। फ्रास की मदद से हॉलैंड ने हमला बोलकर ब्रूसेल्स पर कब्जा कर लिया। नयी सधि हुई। इसमे हॉलैंड को मास्ट्रिच और लिम्बर्ग का एक हिस्सा द दिया गया पर उसे एण्टवर्प स अपनी फौज हटाने से इकार करना जारी रखा। इस पर ब्रिटिश और फ्रासीसी फौजो ने मिलकर कार्रवाई की और हॉलैंड को बल्जियम की आजादी को मान्यता देने पर मजबूर किया।

यूरोप में क्रांतियों और विद्रोहो का दौर अभी चालू रहना था। जुलाई-क्रांति के ही साल म लिवरपूल-मैंचस्टर रेलवे चालू हुई, जो खासतौर पर सवारियो ले जाने के लिए बनी पहली रेलवे सेवा थी। अगले साल माइकल फैराडे ने विद्युत-चुम्बकीय प्रेरण (Electro-magnetic Induction) की खोज की। मार्स (Morse) ने टेलीग्राफ की रचना की। इसी वर्ष इग्लैंड म ससदीय-सुधारों का दौर आया। सन् 1833 म पहला फैक्टरी एक्ट बना जिसम मजदूरो के अधिकारो का झडा बुलद हुआ। कला और साहित्य क क्षेत्र म भी यह क्रांतिकारी रचनाओ का काल था। बालजाक पुश्किन, स्टण्डाल और विक्टर ह्यूगो जैसे महान लेखक इसी दौर की पैदावार थे। समग्रत क्रांतियो क इस युग को राजनैतिक परिवर्तन क समानातर ही सास्कृतिक और सामाजिक बदलाव का युग भी कहा जा सकता है। ■■

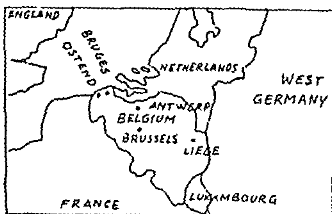


भारतीय स्वतंत्रता का प्रथम सग्राम

(1857 1859)

प्लासी के युद्ध के बाद अग्रेजी साम्राज्य की जडे भारत मे गहरी जमती चली गयीं, पर भारतीय राजे-रजवाडो, जनता और सिपाहियो ने पूरे सौ वर्ष तक विद्रोह की परपरा भी कायम रखी। सन् 1857 मे एक अभूतपूर्व विद्रोह हुआ, जिसमे अभी तक के सभी विद्रोहो की प्रवृत्तिया और उनका अखिल भारतीय स्वरूप परिलक्षित हो रहा था। इसमे जमींदार, राजा, नवाब, बादशाह, पडित, मौलवी, सरकारी कर्मचारी, सिपाही, कारीगर और किसान शामिल थे। विदेशी इतिहासकार इस विद्रोह को 'सिपाहियो का गदर' कहकर अपमानित करते है, पर यह वास्तव मे भारतीय स्वतत्रता का पहला महासग्राम था। इसका नेतृत्व बहादुर शाह जफर, नाना साहब, लक्ष्मी बाई, तात्या टोपे, बख्त खा, फिरोज शाह, बेगम हजरत महल, कुअर सिंह और मौलवी अहमदशाह ने जान की बाजी लगाकर किया। विद्रोह असफल रहा पर इसने अग्रेजी साम्राज्य की चूले इस दर्जा हिला दीं कि ब्रिटेन को ईस्ट इडिया कपनी से भारत की बागडोर अपने हाथ मे लेनी पडी।

अंग्रेजा न ससदीय क्रांति करके अपनी जनता को तो आजादी और खुशहाली का स्वाद चखाया लेकिन उसकी कीमत उनके उपनिवेशो की जनता को चुकानी पडी। ब्रिटन मे औद्योगिक क्रांति हुई और ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र मे असाधारण उन्नति हुई। दरअसल उन्नति के कुकरमुत्त की जड मे कही न कही ब्रिटेन के उपनिवशा के किसाना और व्यापारिक शोषण की खाद पर फल फूल रही थी। अग्रेज सौदागरो की विशाल कपनी 'इस्ट इंडिया कपनी' ने व्यापार करने की नियत से भारत की धरती पर कदम रखा था लेकिन ढहते हुए मुगल साम्राज्य और खोखले होते हुए भारतीय सामतवाद न उस सत्ता पर अधिकार करने का सुनहरी मौका दे दिया। ब्रिटेन के व्यापारिक हितो का हुकूमत की बागडोर अपने हाथा म रखकर और भी सुरक्षित रखा जा सकता था।

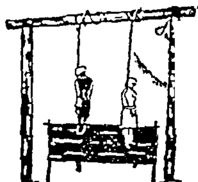


बेल्जियम का मानचित्र

था, लेकिन ब्रिटेन बुरी तरह अड गया। उसने तय किया कि वह फ्रांस को इस युद्ध के पचड़े में नहीं पड़ने देगा। फ्रांस की नयी सरकार भी किसी कीमत पर युद्ध के मूड में नहीं थी। लूई फिलिप ने टलीरैण्ड (Talleyrand) को रिटायरमेंट से बुलाकर ब्रिटेन के साथ समझौता वार्ता करने भेजा। 76 वर्षीय टलीरैण्ड ने लंदन जाकर ब्रिटेन को विश्वास दिला दिया कि फ्रांस बेल्जियम में हस्तक्षेप करने के खिलाफ है। इसी के बाद एक फौजी संधि हुई, जिसने बेल्जियम और हॉलैंड के बीच युद्ध-विराम करा दिया। बेल्जियम को एक स्वतंत्र एवं तटस्थ राष्ट्र घोषित कर दिया गया। रूस का जार इस घटनाक्रम से खुश नहीं था पर उसी समय पोलैंड में विद्रोह शुरू हो गया। इससे उसका ध्यान बंट गया और उसे इस मामले में टांग फंसाने का मौका ही नहीं मिल पाया।

अब यह समस्या मुंह बाए खड़ी थी कि बेल्जियम का राजा कौन बने? काफी सोच-समझकर के बाद सेक्स कोबुर्ग (Sexe Coburg) के राजकुमार प्रिंस लियोपोल्ड को राजा बनाया गया। पर नये राज्य की सीमाओं के सवाल पर हॉलैंड और बेल्जियम में फिर झगड़ा हो गया। बेल्जियम का दावा था कि मास्ट्रिच (Maastricht), लिम्बर्ग (Limberg) और लुक्सेमबर्ग (Luxemburg) उसके दायरे में होने चाहिए। फ्रांस की मदद से हॉलैंड ने हमला बोलकर ब्रूसेल्स पर कब्जा कर लिया। नयी संधि हुई। इसमें हॉलैंड को मास्ट्रिच और लिम्बर्ग का एक हिस्सा दे दिया गया पर उसे एण्टवर्प से अपनी फौज हटाने से इंकार करना जारी रखा। इस पर ब्रिटिश और फ्रांसीसी फौजों ने मिलकर कारवाई की और हॉलैंड को बेल्जियम की आजादी को मान्यता देने पर मजबूर किया।

यूरोप में क्रांतियों और विद्रोहों का दौर अभी चालू रहना था। जुलाई-क्रांति के ही साल में लिवरपूल-मैंचेस्टर रेलवे चालू हुई, जो खासतौर पर सवारियां ले जाने के लिए बनी पहली रेलवे-सेवा थी। अगले साल माइकल फैराडे ने विद्युत चुम्बकीय प्रेरण (Electro-magnetic Induction) की खोज की। मोर्स (Morse) ने टेलीग्राफ की रचना की। इसी वर्ष इंग्लैंड में संसदीय-सुधारों का दौर आया। सन् 1833 में पहला फैक्टरी एक्ट बना जिससे मजदूरों के अधिकारों का झंडा बुलंद हुआ। कला और साहित्य के क्षेत्र में भी यह क्रांतिकारी रचनाओं का काल था। बालजाक, पुश्किन, स्टेण्डाल और विक्टर ह्यूगो जैसे महान लेखक इसी दौर की पैदावार थे। समग्रतः क्रांतियों के इस युग को राजनैतिक परिवर्तन के समानांतर ही सांस्कृतिक और सामाजिक बदलाव का युग भी कहा जा सकता है। ■■

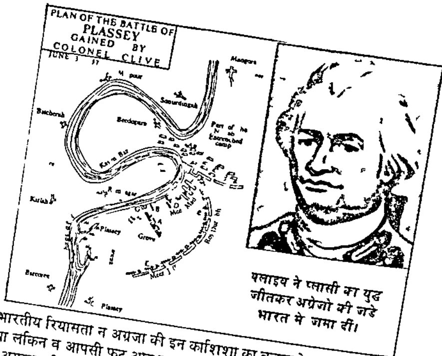


भारतीय स्वतत्रता का प्रथम सग्राम

(1857 1859)

प्लासी के युद्ध के बाद अग्रेजी साम्राज्य की जडे भारत मे गहरी जमती चली गयीं, पर भारतीय राजे-रजवाडो, जनता और सिपाहियो ने पूरे सौ वर्ष तक विद्रोह की परपरा भी कायम रखी। सन् 1857 मे एक अभूतपूर्व विद्रोह हुआ, जिसमे अभी तक के सभी विद्रोहो की प्रवृत्तिया और उनका अखिल भारतीय स्वरूप परिलक्षित हो रहा था। इसमे जमींदार, राजा, नवाब, बादशाह, पंडित, मौलवी, सरकारी कर्मचारी, सिपाही, कारीगर और किसान शामिल थे। विदेशी इतिहासकार इस विद्रोह को 'सिपाहियो का गदर' कहकर अपमानित करते है, पर यह वास्तव मे भारतीय स्वतत्रता का पहला महासग्राम था। इसका नेतृत्व बहादुर शाह जफर, नाना साहब, लक्ष्मी बाई, तात्या टोपे, बख्त खा, फिरोज शाह, बेगम हजरत महल, कुअर सिंह और मौलवी अहमदशाह ने जान की बाजी लगाकर किया। विद्रोह असफल रहा पर इसने अग्रेजी साम्राज्य की चूले इस दर्जा हिला दीं कि ब्रिटेन को ईस्ट इंडिया कपनी से भारत की बागडोर अपने हाथ मे लेनी पडी।

अंग्रजो ने ससदीय क्राति करके अपनी जनता को तो आजादी और खुशहाली का स्वाद चखाया लेकिन उसकी कीमत उनके उपनिवेशा की जनता का चुकानी पडी। ब्रिटन म औद्योगिक क्राति हुई और ज्ञान-विज्ञान क क्षत्र में असाधारण उन्नति हुई। दरअसल उन्नति क कुकरमुत्त की जड म कही न कही ब्रिटन क उपनिवेशा के किसानों और व्यापारिक शोषण की खाद पर फल-फूल रही थी। अग्रेज सौदागरों की विशाल कपनी ईस्ट इंडिया कपनी न व्यापार करने की नियत से भारत की धरती पर कदम रखा था लकिन ढहते हुए मुगल साम्राज्य और खोखले होते हुए भारतीय सामतवाद न उसे सत्ता पर अधिकार करने का सुनहरी मौका दे दिया। ब्रिटेन क व्यापारिक हितो या हुकूमत की बागडोर अपने हाथा म रखकर और भी सुरक्षित रखा जा सकता था।



क्लाइव ने प्लासी का युद्ध जीतकर अग्रेजो की जडे भारत मे जमा दीं।

भारतीय रियासता न अग्रजा की इन कोशिशो का बचकाने तरीक स काफी विरोध ता किया लकिन व आपसी फूट और नाकारापन के कारण गोरो की चालो को नही काट सकी। अग्रजो की सन्य शक्ति कम होन क बावजूद प्लासी क मैदान म स्थानीय बहुसख्यक फौजो की हार हुई। सन् 1764 म दिल्ली के बादशाह शाह आलम बक्सर क मदान म हार गय। सन 1765 म उन्होन बगाल बिहार और उडीसा की दीवानी अग्रजो को सौंपकर उनकी राजसत्ता को स्वीकार कर लिया और उसे कानूनी स्वीकृति द दी। सन् 1772 म वारन हस्टिंग्स (Warren Hastings) न इन सूबो की हुकूमत सभाली और ब्रिटिश शासन व्यवस्था की शुरुआत हुई। धीरे धीरे मैसूर, हैदराबाद अवध सहित मराठा जाटो और सिक्खो की रियासत भी ब्रिटिश हुकूमत के मातहत होती चली गयी।

इस पराजय क बावजूद भारतीय जमीदारो सामतो राजाओ, व्यापारियो और आम जनता न ब्रिटिश शासन को कभी चुपचाप बर्दाश्त नही किया। प्लासी की लडाई और सन् 1857 क बीच के पूरे सौ साल अनगिनत विद्रोहो और बगावतो के साल थे। मीर-कासिम का विद्रोह पहाडी जातियो का विद्रोह, चुआर के विद्रोह कोल विद्रोह सथालो का विद्रोह, उडीसा के जमीदारो का विद्रोह खाद विद्रोह असम क विद्रोह खासी विद्रोह मजनूशाह क नेतत्व मे मुसलमान फकीरो का विद्रोह सन्यासियो का विद्रोह मद्रास प्रसीडसी की उथल-पुथल, विजय नगर क राजा का विद्रोह दीवान वलुतापी का विद्रोह ढाढ जी बाघ का विद्रोह राजा महीपतराम का विद्रोह मुबारिज्जुद्दौला का विद्रोह रामोसी विद्रोह गडकरी विद्रोह गोरखपुर हाथरस और रुहेलखण्ड क विद्रोह वलीउल्लाही आदोलन और समय समय पर ब्रिटिश फौज क भारतीय सिपाहियो म फूट पडने वाली बगावत इस बात का प्रतीक थीं कि इस देश ने अग्रेजो को कभी मन से अपने मालिक के रूप मे स्वीकार नही किया था। फिर इसम क्या ताज्जुब कि इन तमाम विद्रोहो का चरमोत्कर्ष एक महाविद्रोह क रूप म हुआ। सन् 1857 का महाविद्रोह एक ऐसी ही घटना थी जिसका स्वरूप अखिल भारतीय था और जिसमे अभी तक की सभी अग्रेज विरोधी प्रवृत्तिया अपनी



मुगल शहशाह से व्यापार की आज्ञा मागते अग्रेज सौदागर

पूरी शिद्दत के साथ मौजूद थी और यह उस जमाने म हुआ था जब भारत म ब्रिटिश शासन अपने चरम-वैभव पर था। कुछ इतिहासकारो न इसे केवल 'सिपाही गदर' कहकर इसका महत्त्व कम करने की कोशिश की है पर वास्तव म यह भारतीय आजादी का पहला स्वतत्रता सग्राम था, जिसमे असख्य भारतीयो न अपनी कुर्बानी दी। यह पहली घटना थी जिसमे भारतीयो के मानसो म विद्यमान एक प्रबल राजनैतिक राष्ट्रीयता एक दुर्दम्य धारा के रूप म बहती हुई दिखाई दी।

सिधु नदी के पूर्व मे इरावती तक और उत्तर मे हिमालय से दक्षिण म हिंद महासागर तक अपना साम्राज्य स्थापित करके अग्रेज काफी गलतफहमी का शिकार हो गय थे। उन्होने ज्यादातर लडाइया भारतीय सिपाहियो के दम पर ही जीती थीं। राजस्व वद्धन के चक्कर म उन्होने मनमानी और छल-कपट से भारतीय रियासतो को हडपना शुरू किया। सन् 1856 म कपनी के तीन लाख सैनिको की फेहरिस्त म केवल 23 000 गोरे नामजद थे। भारतीय सिपाहियो पर खर्चा एक गोरे के मुकाबले केवल एक तिहाई बैठता था। इसलिए अग्रेज ज्यादा माल बचाने के चक्कर म भारतीयो को ही अपनी फौज म रखना पसद करते थे।

सन् 1857 के विद्रोह का राष्ट्रीय और जन-क्रांतिमय स्वरूप उन पाच आरोपो म साफ हो जाता है, जो अंतिम मुगल सम्राट बहादुर शाह जफर ने अग्रेजो पर लगाये थे। उन्होने कहा था कि ब्रिटिश सरकार ने जमीदारो पर बेहद मालगुजारी लादी बकाया के लिए उन्हे नीलाम तक पर चढ़ाया और अदालती फीस के जरिए उन्हे तबाह कर दिया।



टीपू सुल्तान के वंशजो का अंग्रेजो को सन् 1792 मे आत्मसमर्पण

व्यापारियो से कपड़ा नील और जहाजी माल के व्यापार का अधिकार छीन लिया गया। उनके हाथ मे जो व्यापार बचा भी उसके बदले मे भी लोगो से शुल्क स्टम्प फीस टैक्स, चुगी आदि वसूल किया गया। नौकरी करने वाले भारतीयो को ऊची मर्यादा और वेतनमान से वंचित करके यह अधिकार भी अंग्रेजो को दे दिया गया। विलायत मे बना माल भारतीय मडियो मे पाटकर स्थानीय जुलाहो धुनियो बढइयो लोहारो और मोचियो को भिखारी बना दिया। पडितो मौलवियो और दूसरे पढे लिखे लोगो को सरेआम अपमानित किया गया।

बहादुर शाह जफर के इन आरोपो के परिप्रेक्ष्य मे यह साफ हो जाता है कि 1857 के विद्रोह की बागडोर भले ही राजा-नवाबो के हाथ मे रही हो और उसकी मुख्य लडाकू शक्ति भले ही सिपाही रहे हो पर उसके लिए भारतीय जनता के सभी तबको को शामिल किया गया था। नाना साहब ने फ्रास के सम्राट नेपोलियन को पत्र लिखकर इन आरोपो का समर्थन किया और कसम खाई, 'हम तब तक लडते रहेगे जब तक हममे ताकत रहेगी और जब तक कि हममे से एक भी आदमी जीवित रहेगा। ऐसी प्रचण्ड शपथ तब तक नही खाई जा सकती थी जब तक कि शपथ उठाने वाली शक्तियो के पीछे किसी नैतिक आवेग का बल काम न कर रहा हो। केवल अपनी रियासत या अपने धर्म के सकीर्ण स्वार्थ तमाम भारतीयो को इस महासग्राम मे नही धकेल सकते थे। इसके लिए जिस व्यापक आधार की जरूरत थी वह स्वय अंग्रेजो के दमनकारी और लुटेरे शासन ने दे दिया था।

अंग्रेज अपनी गलतफहमी मे मान चुके थे कि उनकी शक्ति इतनी ठोस हो चुकी है कि उन्हे दिल्ली के बादशाह के नाम के सहारे की जरूरत नही रह गयी है। वे अपने नाम पर ही शासन चलाने लायक हो गये हैं। पजाब, अवध नागपुर और सिंध की रियासतो को हडपने के साथ-साथ सरकारी लगान वसूली मे आम किसानो से मारपीट तक की जाने लगी। और तो और भारतीय धर्मों का भी खुलआम अपमान किया जाने लगा।

सन् 1857 के विद्रोह के बारे मे प्रचलित है कि कारतूसो मे गाय और सुअर की चर्बी होने और उन्हें चलाने से पहले दात से काटने की अनिवार्यता ने सिपाहियो को भडका

वारेन हेस्टिग ने भारतीयो के प्रति थोडा उदारतावादी रवैय्या अपनाया परतु उसके बाद अग्रेजो का साम्राज्यवादी शिकजा उत्तरोत्तर कसता गया और सारा भारत दमन की चक्की मे पिसने लगा।

दिया। पर असल म यह वजह उन तमाम वजहो म से एक थी जिनका ऊपर वर्णन किया जा चुका है। बगावत की पहली चिगारी फूटन से पहल विद्रोह की एक माटी याजना तैयार करने की कोशिश भी की गयी थी। राटी आर लाल कमल क फूला क जरिए बगावत का सदेश एक रजीमट से दसरे म ले जाया जाता था। नाना साहब के मुख्य सलाहकार अजीमुल्ला, अवध क मौलवी अहमदुल्ला शाह, मुगल-सम्राट बहादुर शाह जफर और दूसर राजे-नवाबा मे पत्र-व्यवहार और बैठका क जरिए 31 मई का दिन विद्रोह के लिए तय किया गया था। इन लागो ने मान लिया था कि व मुगल-सम्राट के झडे तले सगठित होगे और अग्रेजा को अपन मादर-वतन से मार भगायगे।

पर तय तारीख से पहले ही 29 मार्च, 1857 को कलकत्ता से 16 मील दूर बैरकपुर म सिपाही मगलपाडे न विद्रोह कर दिया। उसने अपन साथियो को ललकारा ओर अपने अग्रेज अफसर को ताबडतोड गाली से उडा दिया। अग्रेज डर के मारे काप गये। वीरभूमि, बसकडा, जसोर, कृष्णनगर मालदा, ढाका, फरीदपुर, बाकरगज, त्रिपुरा, सिलहट, चटगाव, खाती और जयतिया पहाडियो म विद्रोह के अखुए फूट पडे। मई के पहले हफ्ते मे मेरठ छावनी ने बगावत का झडा बुलद कर दिया। असम, उडीसा और छोटा नागपुर म बागियो ने अग्रेजा को नाको चने चबवा दिये। उत्तर भारत म अवध, रुहेलखण्ड इलाहाबाद, आगरा, मेरठ डिवीजन और पश्चिमी बिहार मे अधिकाश जनता ब्रिटिश शासन के खिलाफ उठ खडी हुई। दिल्ली मे विद्रोही सिपाहियो ने बहादुर शाह जफर को ताज पहनाया। दिल्ली के आसपास गुडगाव हिसार और रोहतक के आमो-खास ने भी



तात्या टोपे



बहादर शाह जफर



मीर कासिम



हैदर अली



कुअर सिंह



लक्ष्मी बाई



अमरचंद बाठिया



मंगल पांडे



नाना साहब



वेलु थाम्पी



टीपू सुलतान



बलवंत फड़के

आजादी जिनके खून की हर बूंद मे रची बसी थी।



सन् 1857 का सिपाही विद्रोह

बादशाह का साथ दिया। 11 और 12 मई को सरदाना और बागपत म बगावत हुई। 13 मई का रुडकी आजाद हा गया। 26 मई का बुलदशहर म एक मुगल सूबेदार ने प्रशासन सभाल लिया। 14 मई को मुजफ्फरनगर म 20 मई का अलीगढ़ म ओर 30 जून का सहारनपुर म विद्राह हुआ। बरली म विद्राह के बाद रामपुर मुरादाबाद, अमरोहा, बिजनार बदाय, शाहजहापुर, फर्रूखाबाद फतेहगढ़ सीतापुर इटावा, मैनपुरी, आगरा, मथुरा और इलाहाबाद म अग्रजा को ध्वस्त कर दिया गया। फतहपुर, हमीरपुर आर बादा भी विन्नाह म शामिल हा गय।

4 जून का कानपुर म विद्राहिया न खजान पर कब्जा कर दिल्ली की तरफ कूच कर दिया। नाना साहब पेशवा घोषित हुए। 4 जून का ही झामी की रानी लक्ष्मी बाई की सेना क सिपाहिया न अपन अफसरा पर हमला बालकर रानी क शासक हाने की घापणा कर दी। बनारस डिवीजन क चप्पे-चप्प स कपनी बहादुर क हाथ स सत्ता फिसलती चली गयी। जून क अत तक अवध प्रात का प्रत्यक जिला विद्राहिया की गिरफ्त म पहुच चुका था। सन् 1857 क सितबर तक आत-आत पूर दश का बगावत न अपन आगाश म ले लिया था।

इस विद्रोह क पीछ काम कर रही याजना का पता इस तथ्य स भी लगता है कि कानपुर की मुहिम म शहजादा फिराज की सना ग्वालियर की सना बाबू कुवर सिह की बिहारी सना आदि न नाना साहब की मदद की थी। बहादर शाह जफर न राजस्थान पजाब आर उत्तर भारत क राजाआ आर नवाबा का पत्र लिखकर अपन झड क तल जमा करन की कोशिश की थी। राज-रजवाडा न सौ वष पुरान आपसी झगड खत्म कर दिये थ।

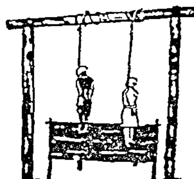


5 मार्च 1858 को लखनऊ में जमकर खून की होली हुई।

दो साल तक यह तथाकथित गदर चलता रहा। नेतृत्व के अनुपम गुणों से युक्त दिल्ली के शहजादे फिरोज ने, रुहेलखण्ड में खान बहादुर खान ने, अवध की बेगम हजरत महल ने, बिहार केसरी कुंअर सिंह ने, महान सेनापति रामचंद्र पांडुरंग उर्फ तात्या टोपे ने, बुंदेलखंड में झांसी की रानी लक्ष्मी बाई ने, दिल्ली की सेना के मुख्य सेनापति जनरल बख्त खां ने, विद्रोही नेता, महान शायर और मुगल वंश के अंतिम चिराग बहादुर शाह जफर ने और पेशवा बाजीराव द्वितीय के दत्तक पुत्र नाना साहब ने विद्रोह में शानदार भूमिकाएं निभायी और बलिदान दिये। इन महान योद्धाओं को इस महाविद्रोह में दिया गया अंशदान कभी भुलाया नहीं जा सकता।

एकता के साथ साथ भयानक विश्वासघात की मिसाल भी सामने आयी। तात्या टोपे विश्वासघात के कारण पकड़े गये। रानी लक्ष्मी बाई ने अपना किला विश्वासघात के कारण खोया। बहादुर शाह जफर के कुछ चाटुकारों ने उनके साथ धोखा किया। विद्रोहियों में अनुशासन और संगठन की कमी, रणनीति के लिहाज से अंग्रेजों की श्रेष्ठता, विद्रोह के कुछ नेताओं का ढुलमुलपन इस महाविद्रोह के पतन के कारण बने।

असफलता के बाद अंग्रेजों ने संपूर्ण प्रतिशोध क्षमता एवं पाशविकता के साथ विद्रोहियों की नृशंस हत्याएं की। उन्हें फांसी पर चढ़ाया और जुर्माने किये। पर यह तय हो चुका था कि भारतीय जनता हमेशा हमेशा के लिए उनकी गुलाम होकर नहीं रहेगी। सन् 1859 के गवर्नमेंट ऑफ इंडिया एक्ट के तहत ब्रिटिश राज को भारत का शासन ईस्ट इंडिया कंपनी से ले लेना पड़ा। महाविद्रोह ने उन्हें बता दिया था कि अब वे पुराने ढंग से शासन नहीं चला सकते। ठीक 90 साल बाद सन् 1947 में भारतीय आजादी के संग्राम के दबाव और सारी दुनिया में अपने साम्राज्य के पतन के कारण अंग्रेजों को भारत छोड़ना पड़ा। ■■



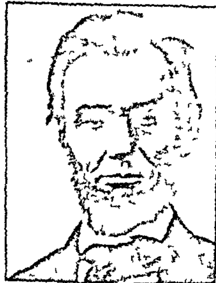
अमरीका की दूसरी क्रांति

(1860 1865)

अमरीकी गृह-युद्ध की बिसात पर भविष्य का औद्योगिक विश्व भी दाव पर लगा हुआ था। लिंकन ने शुरू मे दासों से कपास की काश्त कराने वाले मालिकों की चुनौती को ठीक से नहीं समझा, पर जब उन्होंने एक बार दासो की मुक्ति का संकल्प लिया तो हर मोर्चे पर दक्षिण की सेनाओ की पराजय होने लगी। अमरीका की दूसरी क्रांति ने न केवल नीग्रो गुलामो को उनकी बुनियादी आजादी और नागरिक अधिकार दिलवाये अपितु पूरे देश को एक औद्योगिक महाशक्ति बनने की राह पर भी डाल दिया।

जॉर्ज वाशिंगटन के नेतृत्व म संयुक्त राज्य अमरीका न ब्रिटिश साम्राज्यवादिया क हाथा स आजादी ता हासिल कर ली थी लकिन अभी वहा पूरे संसदीय लाक्तत्र की स्थापना हानी वाकी थी। टामस जेफरसन क लिखे हुए 'स्वतत्रता क घापणा-पत्र' न दुनिया के कई देशा पर असर डाला पर अमरीका क 'नीग्रा गुलाम अभी भी उस सावभाम और सर्वोच्च स्वतत्रता स वंचित थे जिसक मैद्धांतिक मूल्या न अमरीका का आजादी की राह का यात्री बनाया था।

उस समय अमरीकी समाज और राजनीति एक तरह स दा भागा म बटी हुइ थी। इनम स एक धडा औद्योगिक क्रांति का समथक था। यह धडा युराप क इस विश्वास म भागीदार था कि दास-प्रथा संपूर्ण मानवता क माथे पर लगा बदनुमा कलक है और इसे जैसे भी संभव हा मिटा दिया जाना चाहिए। दूसरी आर अमरीका क परपरागत दास मालिक और सामत थे जिनका मुख्य धधा खती और खासतौर से कपास की खनी करना था। दास-प्रथा क विराधिया का उत्तर क 23 राज्या पर प्रभुत्व था और कपास क दास-मालिक उत्पादका क पास दक्षिण क ग्यारह राज्य थे। वस्तुत इस भौगालिक विभाजन की पष्ठभूमि का समझे विना अमरीका की दूसरी क्रांति का पूरी तरह समझा भी नहीं जा सकता। यह कवल एक छुटभैय किस्म का गृह युद्ध नहीं था बल्कि इसम विश्व की पूरी औद्योगिक सभ्यता का भविष्य भी दाव पर लगा हुआ था।



अब्राहम लिंकन



टामस जैफरसन

अमरीका के पास धन धान्य की कोई कमी न थी। 19वीं शताब्दी के मध्य में वहां उद्योग धंधों का पूरी तेजी से विकास हुआ था। इसी विकास से आकर्षित होकर अंग्रेज आइरिश और जर्मन आप्रवासी अपने स्वर्णिम भविष्य की खोज में अमरीका आते जा रहे थे। उन्हें लगता था कि अमरीका के खुले मैदानों में खुशहाली के खजाने छिपे हुए हैं। सन् 1850 से सन 1860 के बीच इस आव्रजन ने अमरीकी आबादी को दो करोड़ तीस लाख से तीन करोड़ बीस लाख कर दिया। उद्योगों के विकास के लिए श्रम शक्ति की जरूरत होती है। दुर्भाग्य से वह श्रम शक्ति उस समय दास प्रथा के दानवी बंधनों में जकड़ी हुई थी। दक्षिण के चार राज्यों में चालीस लाख नीग्रो दास थे जो केवल कपास के बगीचों में अपने मालिकों की इच्छानुसार जिंदा कठपुतलियों की तरह काम करते थे। उन्हें जिंसों की तरह खरीदा-बेचा जाता था। बोली लगाकर सामान की तरह नीलाम पर चढ़ाया जाता था। जबकि यूरोप में काफी पहले ही दास प्रथा खत्म करके कानून बन चुका था।

सन 1850 से ही दक्षिण के कपास-किसान जिनकी जीवन-शैली पुराने सामंतों जैसी थी अपने आपको एक अलग समुदाय के रूप में देखने लगे थे। नीग्रो दास उनके लिए उत्पादन और ऐशो-आराम के बोलते औजार थे। उत्तर की औद्योगिक क्रांति उनकी प्रेम कहानी में एक खलनायिका के समान थी जो उनके स्वर्ग को नष्ट कर डालना चाहती थी। दक्षिण वालों का एक गम और भी खाये जा रहा था—और वह गम था अमरीकी सीनेट में उत्तर वालों का प्रतिनिधित्व लगातार बढ़ना। इसी साल दोनों पक्षों के बीच एक समझौते की कोशिश की गयी और दास प्रथा नवगठित राज्यों में खत्म कर दी गयी। पर दक्षिण से भाग कर आये दासों को वापस उनके गुलाम मालिकों के पास भेज जाने का नियम भी बना दिया गया। इस परिस्थिति ने ऐसी कई दुखांत घटनाओं को जन्म दिया जिनके ऊपर हैरियट बीचर स्टो (Harriat Beecher Stowe) ने अपना अमर उपन्यास अंकल टाम्स केबिन लिखा। सन् 1852 में प्रकाशित इस उपन्यास ने सारी दुनिया के सामने



राष्टपति चुने जाने के बाद झंडा फहराते लिंकन



ऐसे शर्मनाक विज्ञापनों से होती थी गुलामों की बिक्री

दास-प्रथा के समर्थक दक्षिण अमरीकी राज्यों के चेहरों पर कालिख पोत दी।

धीरे-धीरे राष्ट्रपति चुनावों और नये बनने वाले राज्यों (कंसास, नेब्रास्का, उटाह और न्यू मैक्सिको) के कारण दास-प्रथा के सवाल पर एक भौगोलिक विभाजन सा होता चला गया। मानवीय मूल्यों के अतिरिक्त इसके पीछे बड़े प्रबल आर्थिक कारण भी थे। उत्तरी इलाके उद्योगों और लोकतंत्र के हामी थे और विदेशी व्यापार पर तरह-तरह के नियंत्रण लगाते थे। इसके विपरीत दक्षिण वाले मुक्त व्यापार चाहते थे ताकि उन्हें कपास निर्यात करके बदले में विदेशी माल खरीदने की सुविधा मिलती रहे। कपास-उत्पादकों को यह भी लगता था कि जिन यूरोपीय देशों का माल वे खरीदते हैं वे अपने फायदे को मद्दे नजर रखते हुए उनकी मदद करेंगे। उत्तर के सामने यह समस्या खड़ी थी कि अगर विदेशी माल के आने पर प्रतिबंध नहीं लगे तो उसके कारखानों में बनी चीजों का क्या होगा?

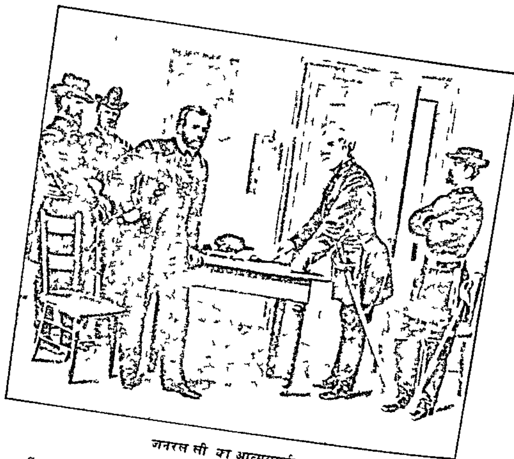
सन् 1860 में राष्ट्रपति का चुनाव हुआ। चार उम्मीदवार लड़े पर जीते रिपब्लिकन



मंडी में गुलामों की बिक्री

उम्मीदवार अब्राहम लिंकन की हुई। लिंकन एक गरीब किसान परिवार के बेटे थे। उन्हें औपचारिक शिक्षा भी नाम-मात्र के लिए ही मिली थी पर उन्होंने खुद को एक लोकप्रिय नेता और अद्भुत वक्ता के रूप में विकसित कर लिया था। लंबे कद के लिंकन ने अपने जीवन में लकड़हारे का काम भी किया था। इसलिए उन्हें गरीबों और मध्यवर्ग का खासा समर्थन हासिल था। वे शुरू से ही दास प्रथा को खत्म कर देने के कट्टर हिमायती थे। कहा जा सकता है कि दास-प्रथा का सवाल उत्तर और दक्षिण के बीच एक विभाजक रेखा बन गया था। लिंकन के चुनाव जीतने का अर्थ ही दक्षिण के दास मालिकों को नाराज हो जाना था।

दिसंबर, 1860 में दक्षिण साउथ कैरोलिना ने खुद को संयुक्त राज्य अमरीका के यूनियन से अलग घोषित कर दिया। जनवरी आते-आते मिसीसिपी, अलबामा, फ्लोरिडा जार्जिया और लुईसियाना ने भी यूनियन से अलग होकर अपनी आजादी घोषित कर दी। अगले महीने टेक्सास ने भी बगावत कर दी। 12 अप्रैल, 1861 को दक्षिण की सेनाओं ने फोर्ट सम्टर पर हमला कर दिया। यहीं से चार्ल्सटन के बंदरगाह को नियंत्रित किया जाता था। इस तरह अमरीकी गृह-युद्ध की शुरुआत हुई, जिसने अमरीका को दूसरी क्रांति के मार्ग पर प्रशस्त किया। देखते ही देखते वर्जीनिया, अर्कांसास, नॉर्थ कैरोलिना और टेनेसी ने दक्षिण के महासंघ की सदस्यता स्वीकार कर ली। अब दो अमरीका बन चुके थे। एक यूनियन समर्थक कहलाता था और दूसरा कनफेडरेशन समर्थक। कनफेडरेशन ने रिचमण्ड को अपनी राजधानी बना लिया था। जेफरसन डेविस इस नये देश के राष्ट्रपति बन गये थे। यह अब्राहम लिंकन के सामने सीधी चुनौती थी।



जनरल ली का आत्मसमर्पण

लिंकन न इस पहल हल्क आर ढलमल ढग म लिया। शुरू म उनका रवया कुछ
बागिया का सबक सिखान जसा था। इसलिए उन्हान युद्ध प्रयासा पर खास जार नही
दिया। सभवत यह गलतफहमी दाना पक्षा क शक्ति सतलन क कारण पदा हुइ थी।
यूनियन वाल राज्या की जनसख्या दा कराड दस लाख थी और कनफडरशन वाला की
कवल एक कराड बीस लाख। उसम भी 40 लाख ता दास ही थ। यूनियन क पास वित्तीय
और सामरिक ताकत भी दक्षिण की तुलना म काफी बढी चढी थी। लिंकन न दक्षिण क
बागिया का परास्त करन क लिए 75 हजार स्वय सवक इकट्ठ किय। इनकी बागडार भी
काइ खास कुशल हाथा म नही दी गयी। उधर दक्षिण वाल ता करा या मरा की लडाइ
लड रह थ। उनक पास रॉबर्ट इ ली जसा जारदार सनापति था। एक याद्धा आर
चरित्रवान व्यक्ति क रूप म ली की प्रतिष्ठा स प्रभावित हाकर दक्षिण की फाजा न इन 75
हजार स्वय सवका का रौंद डाला। दा साल तक एक क बाद एक जीत हासिल करक
दक्षिण की फौजा न लिंकन की मीठ स्वप्न दखती आख भडभडाकर खाल दी।

अब लिंकन न गृह युद्ध का पूरी गभीरता स लना शुरू किया। सन 1863 म फौजी
सवा अनिवाय कर दी गयी। अब समस्या यह थी कि यूनियन की फौजा की कमान किसक
हाथ म दी जाय? लिंकन जनरल यूलिसिस एस ग्राट क हक म थ पर लागा न कहा कि
जनरल ग्राट पियक्कड हैं। आखिर लिंकन न ग्राट का ही सनापति बनाया। नतीजा फारन



लिंकन की फौजों के कमांडर जनरल यूलिसिस एस ग्रांट

मिल। जनरल शरमन की मदद म जनरल ग्राट न दक्षिण की फाजा का मात दनी शुरू कर दीं। पहली शिकस्त न्यू आर्गलिएस की लडाइ म दी गयी आर 3 जलाई 1863 का गटिसबर्ग (Gettysberg) की निर्णायक लडाई म ता पलडा पूरी तरह लिकन की तरफ झुक गया।

जनरल ग्राट न जोरदार फाजी अभियान चलाकर अगल ही दिन विक्सबग (Vicksberg) का जीत लिया ओर वर्जीनिया का पश्चिमी इलाक म काट दिया। सन् 1864 क आत-आत शेरमन और ग्राट की फाजा न दक्षिण की फोजा का पूरी तरह से घर लिया था। दक्षिण समुद्रतटीय अड्डा स रसद बद हा गयी। अब थलीय सीमाआ पर भी काई परिंदा पर नही मार सकता था। आखिर रिचमड पर भी कब्जा हा गया। जनरल ली की फाज न हथियार डाल दिय। 9 अप्रेल 1865 का फोजी सधि हुइ आर गह-युद्ध खत्म हा गया।

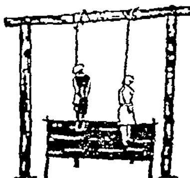
सन् 1864 म अपन राष्ट्रपतित्व का दूसरा कार्यकाल गुजारते वक्त लिकन तय कर चुके थे कि हार हुए दक्षिण के साथ नरमी का बर्ताव किया जायेगा। उन्होन सन् 1863 मे ही कानूनन दास-प्रथा खत्म कर दी थी। सन् 1865 म दास-प्रथा व्यावहारिक रूप स भी खत्म हो गयी लकिन दक्षिणी राज्या म काला की आजादी सीमित किय जान की कोशिशे होती रही। लिंकन की हत्या क बाद सन् 1866 म अमरीकी काग्रस न एक नागरिक अधिकार कानून पारित किया जिससे कालो को वोट देन, अनुबधा पर हस्ताक्षर करने मुकदमा चलान ओर गवाही दन क अधिकार मिल गय।



तत्कालीन अमरीकी मानचित्र

यद्ध स दक्षिण बरबाद हा चुका था। इसी कारण काला का अपनी नयी आजादी का फारी लाभ नहीं मिला। उन्ह तुरत बराबरी का दजा भी नहीं मिल पाया। गारा न उन्ह हमशा गद और गडबडी करन वाले लागा क रूप म दखा। लिकन की काशिशा स काला को कानूनी आजादी ता मिल गयी थी पर अभी अपनी असली आजादी हासिल करन क लिए उन्ह न जान कितनी कुर्बानिया दनी थी।

यह जरूर ह कि गृह-युद्ध क बाद शुरुआती परशानिया क दिन बीत जान क बाद अमरीका एक बार फिर खुशहाली की राह पर चल पडा। 20वी शताब्दी म अमरीका का विश्व की महाशक्ति बनान का काफी कुछ श्रय इस गृह-युद्ध का ही दिया जाना चाहिए। अगर दास-प्रथा क समर्थक पराजित न होत ता व उत्पादक शक्तिया ही मुक्त न हो पाती, जा किसी भी राष्ट का औद्योगिक महाशक्ति बनान क लिए जरूरी हाती हैं। ■■



इतालवी क्राति
(1860 1867)

इतालवी क्राति को दुनिया इटली के एकीकरण आदालन के नाम से जानती है। यह एक तरह से त्रिकोणीय सघर्ष था। एक ओर आस्ट्रियाई और फ्रासीसी फौजो की ताकत थी, दूसरी ओर राजा इमानुएल और प्रधानमत्री काउण्ट कैवर की शकुनि नुमा चाले थीं और तीसरी ओर गैरीबाल्डी और मेजिनी जैसे समर्पित क्रातिकारी थे। इटली की किसान जनता ने गैरीबाल्डी को अपना भरपूर प्यार दिया। जहा-जहा उनके लाल कुर्ती के सवार गये, उनका खुले दिल से स्वागत हुआ। गैरीबाल्डी की तलवार, मेजिनी के विचारो और जनता के समर्थन ने आखिरकार फ्रासीसी और आस्ट्रियाई शिकजे से इतालवी द्वीपसमूह को मुक्त कराकर एक एकीकृत एव स्वतत्र राष्ट्र बनाने मे सफलता प्राप्त कर ही ली।

सन् 1815 म वियना की काग्रस म आस्ट्रिया न इटली क छाट राज्या पर अपन प्रभुत्व का अधिकार हासिल कर लिया। इन राज्या पर छाट-छाट राजवशा का शासन था। स्वतत्रता भाइचारे और समानता जैस शब्दा का इन राजाआ क लिए काइ अर्थ नही था। हर तरह क क्रातिकारी विचारा का क्रूरतापूर्वक दमन कर दना उनक खून म था। इमी दौरान इटली के विभिन्न द्वीपा का एक करके एकीक्त दश बनान का सपना दखन वाल क्रातिकारी इतालवियो का एक सगठन 'यग इटली' सक्रिय हुआ। इस सगठन के नेता थ-गिसेपी मेजिनी (Giuseppe Mazzini) और इस सगठन म पहली बार गिसपी गैरीबाल्डी (Giuseppe Garibaldi) न भी आजाद और एकताबद्ध इटली क लक्ष्य क लिए खुद को समर्पित किया।

यग इटली की क्राति करने की महत्वाकाक्षी योजना बुरी तरह असफल हा गयी। यहा तक कि मजिनी और गैरीबाल्डी का भागना पड़ा। पीडमाट (Piedmont) म गैरीबा ्डी का उनकी गैरहाजिरी म मौत की सजा दी गयी। गैरीबाल्डी न अगल कइ साल



मेजिनी



गैरीबाल्डी

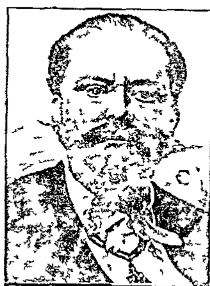
दक्षिण अमरीका की क्रांतिकारी परिस्थितियों में अपने साथियों के साथ ब्राजील और उरुग्वे की आजादी के लिए संघर्ष करते हुए गुजारे। इसी बीच में इटली में पूरी तेजी के साथ क्रांतिकारी परिस्थितियां तैयार होती रहीं।

सन 1840 आते आते सभी महत्त्वपूर्ण इतालवियों को यकीन हो चला था कि पीडमाट और उसके युवक राजा विक्टर इमानुएल द्वितीय के तहत इटली का एकीकरण किया जा सकता है। इस राजा के पास एक बढ़िया फौज, ब्रिटेन की हमदर्दी और काउण्ट समिलो कॅवर (Cavour) के रूप में एक चतुर राजनयिक विद्यमान था। सन् 1852 में राजा ने काउण्ट को प्रधानमंत्री बनाया। काउण्ट यह तो चाहता था कि इटली एक हो पर वह इसका श्रेय मेजिनी और गैरीबाल्डी जैसी रडीकल क्रांतिकारियों को नहीं लेने देना चाहता था। काउण्ट ने घरेलू मोर्चे पर उदार नीतियां अपनायीं और विदेश में राजा और पीडमाट को ज्यादा से ज्यादा महत्त्व दिलाने की जी-तोड़ कोशिश की। क्रीमिया के युद्ध में हुई पेरिस कांग्रेस में आस्ट्रिया की आपत्ति के बावजूद काउण्ट ने अपनी कुशलता से पीडमाट की भागीदारी सुनिश्चित कर दिखायी। फ्रांस के सम्राट नेपोलियन तृतीय की कोशिशों और इच्छा के बावजूद भी इस कांग्रेस में इटली के सवाल पर गौर नहीं किया गया पर काउण्ट को इस मुद्दे पर एक रिपोर्ट तैयार करके प्रतिनिधियों में बांटने का मौका मिल गया।

सन् 1858 में काउण्ट ने नेपोलियन के साथ एक संधि कर ली। सारत: इस संधि में इन मुद्दों पर सहमति प्रकट की गयी थी। आस्ट्रिया द्वारा हमला होने की स्थिति में फ्रांस और पीडमाट मिलकर लड़ेंगे। जीत की हालत में पीडमाट के राजा को लाम्बार्डी (Lombardy) और वेनेशिया (Venetia) का इलाका मिलेगा। इससे पीडमाट की



काउण्ट केवर



विक्टर इमानुएल

हुकूमत का विस्तार एल्प्स (Alps) स एडियाटिक (Adriatic) तक फेल जायगा। सवॉय (Savoy) आर नीस (Nice) फ्रास क अधिकार म हाग। इटली क शप बच इलाका म मध्य इटली की रियासत बना दी जायगी। राम आर नपल्स के साथ मिलकर य चारा इलाक महासघ बना लेग।

सन् 1859 की शुरूआत हात ही आस्टिया क साथ युद्ध शुरू हा गया। फ्रासीसी सना की मदद स पीडमोट न मिलान तक का रास्ता साफ कर लिया। नेपालियन न पाया कि मध्य इटली क कई राज्य पीडमाट म विलय हा जान क इच्छुक हैं। इस तरह इटली म स्वत स्फूत ढग स एकीकरण का आदालन शुरू हा गया।

उधर गेरीबाल्डी की छवि एक अत्यत लाकप्रिय गुरिल्ला सनापति क रूप म स्थापित हाती जा रही थी। व सन् 1848 म दक्षिण अमरीका स काफी ख्याति अजित करक लाट थ। आस्ट्रियाई फाजा क खिलाफ मुट्ठी भर सैनिका क दम पर गेरीबाल्डी न महान सफलताए प्राप्त की थी। इटली की जनता की निगाह म व मुक्तिदाता आर नायक थ। इसक विपरीत गेरीबाल्डी की प्रतिष्ठा आर लाकप्रियता स घबराकर राम म उन्ह कवल 500 सैनिका की कमान सौंपी गयी थी। गेरीबाल्डी न किसी तरह काशिश करके अपने सनिका की सख्या एक हजार की ओर उन्ह छापामार-युद्ध का प्रशिक्षण देना शुरू किया। इसी प्रशिक्षित सना क बलबूत पर गेरीबाल्डी न राम की हिफाजत म दा बार अपन म दस दस गुनी बडी सनाआ का पीठ दिखाकर भागन क लिए विवश कर दिया।

इटली क एकीकरण की माग से चौंकक्र नपोलियन ने आस्ट्रिया क साथ सधि कर ली। इसस इटली क राष्ट्रवादिया को गहरा धक्का लगा। प्रधानमत्री काउण्ट कैवर न ता विराध म अपना इस्तीफा तक द दिया। काउण्ट न खुफिया तौर पर गैरीबाल्डी का बुलाया और उन्ह अपन साथ मिल जान की दावत दी। गैरीबाल्डी को लगने लगा कि इटली क एकीकरण का वक्त आ गया है। उन्होन एक बार फिर अपन मशहूर लाल कुर्ती के सवार



एकीकृत इटली का मानचित्र

को भर्ती करना शुरू किया। गैरीबाल्डी की राजा विक्टर इमानुएल से भी भेंट हुई। फ्रांस और आस्ट्रिया की संधि से इमानुएल भी कतई खुश नहीं थे।

असलियत यह थी कि काउण्ट और राजा दोनों गैरीबाल्डी का जनता का समर्थन हासिल करने के लिए एक मोहरे की तरह इस्तेमाल करना चाहते थे। वे नहीं चाहते थे कि किसी भी जीत का श्रेय इतालवी किसानों के इस बहादुर मसीहा को मिले। दूरदर्शी गैरीबाल्डी ने इसे तुरंत भांप लिया और इतनी तेजी से फौजी कार्रवाई शुरू की कि काउण्ट की सारी योजना धरी की धरी रह गयी। मई 1860 में गैरीबाल्डी के लाल कुर्ती के हजार सवारों ने सिसली (Sicily) पर हमला किया और स्थानीय विद्रोहियों की मदद से फतह हासिल कर ली। गैरीबाल्डी ने आस्ट्रियाई फौजों को एक के बाद एक जोरदार शिकस्त



11 मई, 1860 को गैरीबाल्डी का आगमन

देना जारी रखा। जहा-जहा स उनक फौजी निकलते, जनता उनका खुल दिल म स्वागत करती। गैरीबाल्डी का सदेश हाता, आओ दास्ता मैं तुम्ह तकलीफ कठिनाई और थकान दूगा। हम जीतगे या मर जायग। ' गेरीबाल्डी स डरकर आस्ट्रियाई सैनिक अपनी चौकिया छाडकर भाग जात। इस अद्भुत क्रांतिकारी पराक्रम क लिए गैरीबाल्डी को राजा न स्वर्ण-पदक प्रदान किया।

सिसली पर कब्जा करने क बाद गैरीबाल्डी की फौज न नपल्स की आर रुख किया। नेपालियन ने ब्रिटन म आग्रह किया कि वह गैरीबाल्डी का राकन क लिए फ्रासीसी सना की मदद करे पर ब्रिटन न एसा करने स इकार कर दिया। गैरीबाल्डी न सितबर म नपल्स का दरवाजा भी पार कर लिया। उनका अगला निशाना रोम था। गैरीबाल्डी का ख्याल था कि राम को फतह कर लन के बाद इटली के एकीकरण का महान लक्ष्य पूरा हा जायगा, पर राजा इमानुएल और काउण्ट न गैरीबाल्डी को एसा करन स राका। गैरीबाल्डी न देशभक्ति के महान लक्ष्यो स प्ररित हाकर राजनीति छाड दी और खेती करन चल गये। इसके बाद राजा न उन्ह काफी प्रलोभन दिय पर उन्हान अपना निर्णय नही बदला।

गैरीबाल्डी की शानदार जीता म राम और वनिस का छाडकर बाकी सभी राज्य पीडमोंट मे विलीन हा गय थ। इटली के एकीकरण मे भी थाडी ही कमी बाकी थी। फरवरी 1861 मे ट्यूरिन म पहली राष्ट्रीय ससद बैठी। 14 माच का इस ससद न राम का इटली की राजधानी घाषित किया। चूंकि राम वास्तविकता में नयी सरकार क पास नही था, इसलिए प्रतीकात्मक रूप म राम की दिशा में फ्लोरेंस का राजधानी बना लिया गया।



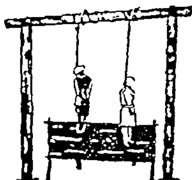
नेपोलियन बोनापार्ट

अब इटली के एकीकरण म मात्र राम ही बाधक था इसलिए सारी दुनिया के कैथोलिका का इस मसल म दिलचस्पी हा गयी। सन् 1862 म गैरीबाल्डी न राम पर हमला करक उस जीतना चाहा पर इस बार उन्ह हार का मुख दखना पडा।

सन् 1866 तक आत-आत इटली न प्रशा स सधि कर ली। प्रशा न आस्टिया का यद्ध म हराकर इटली का मजबूत किया। नवबर 1867 मे गैरीबाल्डी न एक बार फिर राम पर हमला बाला। पर इस बार उन्ह ब्रीच-लाडिग चसपाट (Breech loading Chesspot) राइफला म लैस फ्रासीसी सनिका का सामना करना पडा। गैरीबाल्डी क फौजी एक बार फिर अपन चहरा पर हार लिख लौट आय। इस पराजय क बावजूद इटली क एकीकरण का ज्यादा समय तक राक पाना मुश्किल था। दरअसल उस समय अतराष्टीय परिस्थितिया बडी तजी स बदल रही थीं।

फ्रास ओर जमनी क यद्ध म फ्रास का पलडा हलका पड रहा था। इसलिए फ्रास को राम स अपनी वह गैरीसन बलानी पडी जिसन गैरीबाल्डी का आग नही बढन दिया था। नवबर 1867 म इस गैरीसन की अनुपस्थिति म इतालवी सनिका न राम म कदम रख आर इटली के एकीकरण का महान लक्ष्य पूरा हा गया।

इतालवी क्राति न दनिया का दा नायाब हीरा दिय--मजिनी और गैरीबाल्डी। मजिनी जिसन इटली क एकीकरण और आजादी का स्वप्न दखा और गैरीबाल्डी जिसने किसान जनता की मदद आर हमदर्दी स इस सपने को धरती पर उतारा। ■■



पेरिस कम्यून
(1871)

राष्ट्रीय सम्मान की रक्षा और शोषण से मुक्ति के लिए सन् 1871 मे पेरिसवासियो ने 'दुनिया के पहले सर्वहारा राज्य' की स्थापना की। 'पेरिस कम्यून' के नाम से दुनिया भर मे मशहूर इस क्राति की मात्र 72 दिन की अल्पायु मे ही मत्यु हो गयी। पूजीपतियो की नरभक्षी फौज ने इसे पनपने से पहले ही कुचल दिया। 26 हजार पेरिसवासियो ने क्राति के इस महायज्ञ म अपने प्राण होम कर दिये। असफलता के बावजूद भी पेरिस कम्यून ने मजदूरो को सिखाया कि व्यावहारिक रूप से क्राति कैसे की जाती है। कम्यून की असफलता के सागर का मथन करके ही विश्व कम्युनिज्म के सस्थापक कार्ल मार्क्स ने 'सर्वहारा की तानाशाही' का स्वर्णिम सिद्धात निकाला, जिस पर चलकर भविष्य की अनेक क्रातियो को नाकामी के अधे कुए मे फिसलने से बचाया जा सका।

सन् 1850 के बाद सारे यूरोप म औद्योगिक क्राति अपने लबे-लबे डग भरती हुई द्रुतगति स आग बढ़ रही थी। इसी क साथ-साथ कारखाना म काम करने वाले असख्य मजदूर स्पष्टत एक अदम्य शक्ति क रूप मे उभरते हुए दृष्टिगोचर होने लगे थ। दार्शनिक और सिद्धातवेत्ता इसी सर्वहारा वर्ग को समाज की धुरी म स्थित परिवर्तनकारी शक्ति मानकर अध्ययन मनन म लगे हुए थ। पूजीवादी शोषण क खिलाफ ब्रिटन, फ्रास और जर्मनी मे मजदूरो के आदोलन पूरे उफान पर थे। कार्ल मार्क्स और फ्रेड्रिक्स एगल्स न 'कम्युनिस्ट घोषणा पत्र' की रचना करके लदन म सन् 1864 म पहला अतराष्ट्रीय मजदूर सघ गठित कर लिया था। इस इटरनेशनल की पहली काग्रेस सन् 1866 म जिनेवा म हुई। इस सब के बावजूद सैद्धातिक रूप से पुष्ट कम्युनिस्ट विचारो और लक्ष्यो को अभी व्यावहारिक कसौटी पर कसा जाना बाकी था। सन् 1871 म पेरिस म स्थापित हुए पहले समाजवादी राज्य ने मार्क्स तथा एगल्स को अपने सिद्धातो की सफलता-असफलता का विश्लेषण करने के लिए समुचित निकष प्रदान किय। मार्क्स न पेरिस कम्यून की



टाउन हॉल मे पेरिस कम्यून की बैठक

नाकामयाबी से सर्वहारा का अधिनायकत्व जैसे सिद्धात को खोज निकाला। दरअसल, 'पेरिस कम्यून' के नाम से मशहूर सन् 1871 की जनक्राति ने युरोपीय मजदूर वर्ग को न केवल क्राति करना सिखाया बल्कि क्राति की रक्षा करने की दिशा मे भी निर्णायक मार्ग दर्शन प्रदान किया।

फ्रास और प्रशा के बीच चल रहे युद्ध के अत ने पूरे फ्रास के देशभक्तो की आत्माओ पर बुरी तरह चोट की थी। यह लडाई प्रशा के शासक बिस्मार्क की जर्मनी का एकीकरण करने की महत्त्वाकाक्षा की देन थी। फ्रास की पराजय के बाद हुई सधि के कारण जर्मन फौजो को पेरिस से होकर विजय मार्च करना था। पेरिस की जनता भला इसे कैसे बर्दाश्त करती? सन् 1789 से जिन पेरिसवासियो ने लगातार कई क्रातियो मे भाग लेकर खुद को युरोप भर के क्रातिकारियो का अगुआ बना लिया था, उनके सामने अब राष्ट्रीय सम्मान की रक्षा करने की महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारी आ गयी थी।

युद्ध की पूरी अवधि के दौरान फ्रासीसी हमेशा दो भागो मे बटे रहे। एक हिस्सा प्रशा के साथ शाति चाहता था भले ही वह कैसी भी अपमानजनक शर्तों पर क्यो न हो। दूसरा हिस्सा युद्ध चाहता था और गणराज्य की स्थापना की माग करता था। फरवरी 1871 मे युद्ध खत्म होने के बाद हुए पहले चुनाव मे 600 प्रतिनिधि चुने गये। इनमे 400 ऐसे थे, जो शाति चाहते थे और 200 ऐसे जो गणराज्य के समर्थक थे और 'मरते दम तक लडना' चाहते थे। इन प्रतिनिधियों की राष्ट्रीय असेंबली ने अपनी पहली बैठक मे एडाल्फ थिएर (Adolf Thiers) को सरकार का अध्यक्ष चुना।

बौने कद का थिएर गिरगिट की तरह रग बदलने मे माहिर, अत्यत वाक्पटु और फ्रास के पूजीपति वर्ग का पक्का प्रतिनिधि था। 26 फरवरी को असैंबली ने प्रशा क साथ शांति-संधि कर ली, जिसकी शर्तें काफी कडी और सीधे-सीधे राष्ट्रीय सम्मान को आहत करने वाली थी। प्रशा के सामने हथियार डालने के बावजूद पेरिस के नेशनल गार्डो न अपनी तोप अपने पास ही रखी थी। जर्मन सैनिको की हिम्मत नही हुई कि वे पेरिस मे घुस सके। उन्होने पेरिस क एक छोटे से कोने मे अपन कदम जमाये। खास बात यह थी कि जिस फौज ने फ्रासीसी साम्राज्य को डरा दिया था वह पेरिस के मजदूरो से बने नेशनल गार्डो से उलझने की हिम्मत नही दिखा पा रही थी।

मजदूरा की यह ताकत और धाक देखकर सरकार क अध्यक्ष थिएर को लगा कि उन्हे जैस भी हा निहत्था कर दना चाहिए वरना वे कभी भी मौका लगन पर पूजीपति वर्ग पर भी हमला बाल सकत हैं। 18 माच को थिएर न राष्टीय गार्डा से उसका तापखाना छीनने क लिए नियमित सना की दा टुकडिया भजी। इस पर परिस न प्रतिराध किया। थिएर क दा जनरल मार गय। वह अपनी सरकार के साथ वर्साई (Versailles) भाग गया और उसन वही राष्ट्रीय असेंबली की बैठक बुलायी। 18 मार्च को हुई इस कार्रवाई के वक्त थिएर का अदाज यह था कि प्रशा की फौज उसका साथ दगी पर बिस्मार्क के इशारे पर



28 मार्च, 1871 मे कम्यून की घोषणा

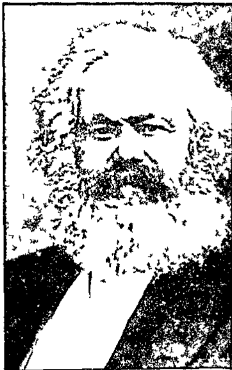
एसा नहीं हुआ। वसाई आकर थिएर न पेरिस क साथ संधि का बहाना किया और हमला करन क लिए अपनी सना जमा करनी शुरू कर दी।

26 मार्च को पेरिस म मजदूरा का कम्यून यानी उनकी सरकार निर्वाचित हुइ और 28 मार्च को नगर क टाउन हॉल म उसकी विधिवत घोषणा हुइ। अभी तक सरकार चलान वाली राष्ट्रीय गार्ड की केन्द्रीय समिति न पेरिस की बदनाम पुलिस को भग कर दिया और कम्यून को इस्तीफा सौंप दिया। कम्यून ने राष्ट्रीय गाड को एकमात्र सशस्त्र सना घोषित किया। 30 मार्च का कम्यून न 'अनिवाय भर्ती' जैस अलोकप्रिय कानूना का उन्मूलन कर दिया।

कार्ल मार्क्स न पेरिस कम्यून की स्थापना क बाद उठाय गये कदमा का वणन इस प्रकार किया है "कम्यून न अक्तूबर 1870 स अप्रेल, 1871 तक का सभी मकाना का किराया माफ कर दिया। इस अवधि का जा किराया दिया जा चुका था उसे आग क लिए पेशगी मान लिया गया तथा नगर पालिका ऋण-कार्यालय म गिरवी रखी वस्तुआ की बिक्री बद कर दी गयी। उसी दिन कम्यून म निर्वाचित विदेशिया क पदा की पुष्टि की गयी क्योंकि 'कम्यून का परचम विश्व-जनतत्र का परचम ह।' एक अप्रल का तय किया गया कि कम्यून क किसी भी कर्मचारी का और इसलिए कम्यून क सदस्या का भी वतन 6 000 फ्रैंक स अधिक नहीं होगा। अगल दिन कम्यून न चर्च का राज्य स पथक करन की आज्ञप्ति जारी की धार्मिक कार्यो क लिए सभी राजकीय भुगतान बद कर दिये गय। चर्च की सारी सपत्ति राष्ट्रीय सपत्ति घोषित कर दी गयी। परिणामस्वरूप 8 अप्रल को विद्यालया स सभी प्रकार क धार्मिक प्रतीका चित्रा और उपदेशा तथा प्रार्थनाआ सक्षप म, उन सभी चीजा का हटा दन का आदश जारी किया गया और क्रमश उस पर अमल किया गया जा व्यक्ति क अत करण का क्षत्र ह। 6 तारीख का राष्ट्रीय गाड की 137वीं बटालियन न मृत्यु दड म प्रयोग आन वाल यत्र गिलोटिन का बाहर निकालकर उसे सार्वजनिक



पेयर लाशेज कब्रिस्तान में कम्यूनार्डों की वेर्साइ फौजों से अंतिम भिड़त

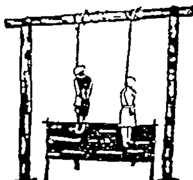
कम्यून की असफलता के विश्लेषण से ही कार्ल मार्क्स (दाय) और एंगेल्स (बाय) ने सर्वहारा-सिद्धांतो की रचना की।

हर्षोल्लास क साथ बडी धूमधाम म जला दिया। 12 तारीख का कम्यून ने निर्णय किया कि प्लास वादाम क विजय-स्तभ का जा 1809 के युद्ध क बाद नपालियन द्वारा लडाई मे जीती गयी तापा को गलाकर बनाया गया था, गिरा दिया जाये क्याकि वह अधराष्ट्रीयता और दूसर दशा क प्रति वर तथा द्वेष-भावनाआ को भडकान का प्रतीक था। 16 मइ को यह कार्य सपन्न किया गया। 16 अप्रेल का ही कम्यून न कारखाना क मालिका द्वारा बद किय गय कारखाना क साख्यिकीय मारणीयन क लिए ओर उन्ही मजदूरा द्वारा, जा पहले उनम काम करत थ उन्ह फिर स चालू करन की याजना बनान क लिए, उन्हे सहकारी-सघ म सगठित करन और इन सहकारी-सघा का एक बहुत बडी यूनियन मे सयक्त करन की याजना बनाने क लिए हुक्म जारी किय। 20 अप्रेल का उसन नानबाइया के लिए रात क काम की मनाही कर दी। रोजगार कार्यालया का भी बद कर दिया गया। ये कार्यालय द्वितीय साम्राज्य क समय स पुलिस द्वारा नियुक्त श्रम क प्रथम काटि क शापक दलाला की इजारेदारी क रूप म चलाये जा रह थे। इन्ह अब परिस के 20 जिला की नगरपालिका-व्यवस्था म सम्मिलित कर दिया गया। 30 अप्रैल का कम्यून न गिरवी-गाठ की दुकाना का इस कारण बद करने के आदेश दिय क्याकि व निजी लाभ के लिए मजदूरा का शाषण करती थी आर श्रमिको के ऋण प्राप्त करने के अधिकार के प्रतिकूल थी। 5 मइ को कम्यून न प्रायश्चित-गिरजे को गिरा दन का आदेश दिया, जा लूइ 16व का सिर काटने के लिए प्रायश्चित करन के स्मारक के रूप म बनवाया गया था।

इस तरह 18 मार्च के बाद पेरिस आदालन का वर्ग-स्वरूप, जा पहल विदशी हमलावरा के खिलाफ युद्ध की वजह स पृष्ठभूमि म दबा हुआ था, खुलकर और उग्र रूप म प्रकट हो गया। चूकि कम्यून म लगभग केवल मजदूर अथवा मजदूरा के प्रतिष्ठित प्रतिनिधि बैठते थे इसलिए उनक फेसला का स्वरूप निश्चित रूप स सवहारा हिता के अनुकूल था। इन फैसला ने या ता एसे मुधारा की घाषणा की जिन्ह जनतत्रवादी पूजीपतियो न मात्र कायरता की वजह से पास नहीं किया था। दरअसल य सुधार मजदूर वर्ग के स्वतत्र क्रिया-क्लापा के लिए आवश्यक सुधार प्रस्तुत करत थ। उदाहरणार्थ इस सिद्धात का अमल कि जहा तक राज्य का सबध है, धर्म पूर्णत एक व्यक्तिगत प्रश्न है। इसके अतिरिक्त कम्यून ने ऐसी आज्ञाप्तिया जारी की जो सीधे मजदूर वर्ग के हित म थी और जो कुछ सीमा तक पुरानी मामाजिक व्यवस्था की जडा पर गहरी चाट पहुचाती थी। उस समय पूरा नगर शत्रु स घिरा हुआ था इस समय म अधिक स अधिक इन चीजा का अमल म लान की शुरआत ही की जा सकी। मई क प्रारभ स ही कम्यून की सारी शक्ति वर्साई सरकार की सना स जिसकी सख्या नित्य बढती जा रही थी युद्ध करने म लग गयी।

अब कम्यनार्डो के सामन दुनिया क पहल क्रातिकारी राज्य की रक्षा की चुनौती थी। थिएर की सेना ने परिस पर आक्रमण कर दिया था। कम्यूनार्डा न भाड क सनिका और तरह तरह क प्रतिक्रियावादी तत्त्वा द्वारा बनायी गयी वर्साइ की इस सना क साथ अत्यत वीरतापूर्वक युद्ध किया। 7 अप्रैल को सनाआ न परिस क पश्चिमी मार्चे पर न्यइ क पास सन नदी के दोनो तरफ वाले रास्तो पर कब्जा कर लिया। लेकिन कम्यूनार्डा न उस पीछ धकेल दिया। फिर पेरिस पर वर्साई की तोप गाल बरसान लगी। प्रशा न कुछ युद्ध बदी रिहा कर दिय ताकि व थिएर की फाजो की ताकत द सक। 3 मइ का दक्षिणी मार्चे पर मूल-साके के दुर्ग पर थिएर का कब्जा हो गया। 9 मई का फार्ट इस्सी उसक हाथ आ गया। अब थिएर की फौजा की पदचाप पेरिस की सफीला तक सुनायी देने लगी। 21 मई को सैनिका न परिस म प्रवश किया। प्रशा की फौजा न जा नगर के एक हिस्से पर काबिज थी वर्साई की फोजा का अपन बीच म से चुपचाप मार्च कर जाने दिया। यह सहयाग उस मोन सहमति का प्रतीक था जा युराप के पूजीपति और सामत वग क बीच विश्व क पहल मजदूर राज्य का कुचलन क लिए हा गयी थी।

पर जेस-जैस फौज परिस क मजदूरा वाले इलाक म पहुची उनका प्रतिराध और कडा हाता गया। एक एक इच आग बढ़न के लिए फौजा को मजदूरा की चट्टानी दीवारा म जूझना पडा। कम्यूनार्ड पूर आठ दिन तक बमिसाल बहादुरी क साथ लड। खूनी हफ्त क नाम स मशहूर यह अवधि जब खत्म हुई तो 26 हजार परिसवासी 'मजदूरा क प्रथम गणराज्य' की बलिवदी पर अपनी बलि चढा चुक थे। वर्साई की फौजा न प्रतिराध टटन क बाद मजदूरा पर अत्याचार किये। सारी दुनिया क पूजीपतिया ने खुशी क दीपक जलाय। आखिर क्यो न जलात? उन्हान क्राति की पहली कोशिश को कुचल जा दिया था। पर उनकी यह प्रसन्नता ज्यादा दिना तक टिकन वाली नही थी क्योकि सन् 1871 म परिस कम्यून मे सुलगी चिंगारी सन् 1917 म एक दावानल म बदल जान वाली थी और आग की लपटा से सोवियत अक्तूबर-क्राति का जन्म हान वाला था। ■■



सोवियत अक्तूबर क्राति
(1917)

प्रथम विश्व-युद्ध का जन्म ब्रिटिश और जर्मन पूजी के बीच के अतर्विरोध के गर्भ से हुआ था। रूस मित्र राष्ट्रो के साथ था पर उसे युद्ध से कोई लाभ नहीं हुआ। पूरे रूस मे मजदूरो के आदोलन जोर पकडते जा रहे थे। जार निकोलस-द्वितीय की दूमा (ससद) जनता की समस्याए हल करने मे असफल सिद्ध हो चुकी थी। देश की दुर्दशापूर्ण स्थिति को सामाजिक-जनवादी मजदूर पार्टी के बोल्शेविको ने जन-आदोलनो का नेतत्व अपने हाथ मे ले लिया। इन बोल्शेविको के नेता थे—लेनिन। फरवरी-क्राति ने जार को गद्दी छोडने पर मजबूर कर दिया पर सत्ता मे अस्थायी सरकार के रूप मे केरेस्की जैसे पूजीपतियो के प्रतिनिधि आ गये। बोल्शेविको ने अक्तूबर मे अस्थायी सरकार के खिलाफ बगावत करके सत्ता अपने हाथ मे ली और जर्मनी व मित्र राष्ट्रो के हस्तक्षेप के बावजूद नयी क्राति की दढतापूर्वक रक्षा की।

20वीं शताब्दी की शुरुआत म पूजीवाद दुनिया क सामने दा रूपा म पश हुआ। एक आर पूजीवाद व्यक्तिगत आजादी की वकालत करता था आर सामतवाद के मुकाबले काफी प्रगतिशील बाता के साथ सामन आता था। दूसरी ओर उसकी 'व्यक्तिगत आजादी' मजदूरो की आर्थिक आजादी की माग क साथ अपना तालमल नही बैठा पाती थी। मजदूर अपना श्रम बचने के लिए स्वतत्र थ और पूजीवाद उस श्रम के अपन मुनाफे के हक म मनमान दाम लगान क लिए स्वतत्र था। इस वर्गीय अतर्विराध ने सारी दुनिया म समाजवादी-साम्यवादी आदालन को जन्म दिया। 19वी शताब्दी का पेरिस कम्यून इसी आदालन की एक व्यावहारिक अभिव्यक्ति था। कम्यून क कुचले जाने के बाद पहली सफल साम्यवादी क्राति की जिम्मेदारी 20वी शताब्दी का उठानी थी।

प्रथम विश्व-युद्ध के रूप म पूजीवाद न अपना और भी घिनौना चेहरा दिखाया।



हत्या से कुछ समय पूर्व फर्डीनांड और उनकी पत्नी

कहने के लिए इस बडी लडाई की शुरुआत एक सर्बियाई छात्र द्वारा आस्ट्रिया हंगरियाई महाराजकुमार फर्डीनांड की हत्या कर देने से हुई थी। पर यह घटना तो केवल बहाना मात्र थी। दरअसल तो दुनिया की बडी बडी पूंजीवादी ताकतें अपना मुनाफा बढ़ाने और बाजार तलाश करने के लिए दुनिया का नये सिरे से बटवारा करना चाहती थीं। युद्ध का प्रमुख कारण था जर्मन और ब्रिटिश पूंजी का अंतर्विरोध। एक तरफ मित्र राष्ट्र थे। इस धडे मे थे—रूस ब्रिटेन और फ्रांस। दूसरी तरफ जर्मन गठजोड था, जिसमे जर्मनी के अलावा आस्ट्रिया और हंगरी थे। मुनाफा कमाने की प्रवृत्ति से अनुप्राणित इस युद्ध मे 95 लाख लोग या तो मारे गये या बुरी तरह घायल होकर अधमरे हो गये। दो करोड लोग घायल हो गये और 35 लाख लोग हमेशा के लिए अपंग हो गये।

इस युद्ध मे 38 देश शामिल हुए। इसके फलस्वरूप जर्मनी तथा ब्रिटेन की आमदनी क्रमश छह और पाच गुना बढ़ गयी। अमरीका मित्र राष्ट्रो के साथ बाद मे आकर जुडा, पर उसने भी बेतहाशा और शायद सबसे ज्यादा मुनाफा कमाया। रूस को क्या मिला—तबाही और सिर्फ तबाही। जार निकोलस द्वितीय द्वारा युद्ध मे अधाधुंध रूसी जवानो को झोका गया। मोर्चे पर तैनात हर रूसी सैनिक के दिमाग मे यह सवाल बार-बार उठता कि आखिर वह किसकी खातिर यह युद्ध लड रहा है?

सन् 1911 मे रूस के एक लाख से ज्यादा मजदूरो ने हडतालो मे हिस्सा लेकर अपने बदले हुए तेवर जतला दिये थे। सन् 1912 मे दस लाख से भी ज्यादा मजदूरो ने हडताल की। सन् 1914 के पहले छह महीनो मे 13 लाख 37 हजार मजदूर हडताल पर थे। रूसी सर्वहारा की ताकत साफ तौर पर बता रही थी कि वे जार और जारीना के कुशासन के तहत और अधिक दिनो तक घुटने पिसने के लिए तैयार नही थे। मजदूर ग्रामीण गरीब



जारीना और जार कुशासन ले डूबा

और मझाल किसान रूस की कुल आबादी का एक बहुत बडा हिस्सा थे। जनता मे व्यापक रूप स असताप फेला हुआ था। जार आर जारीना कुशासन की हालत यह थी कि व एक ज्यातिषी और तांत्रिक ग्रिगारी यफिमाविच रास्पुतिन क हाथ की कठपुतली मात्र बनकर रह गय थ। रास्पुतिन न जारीना और दरबार पर अपना असर जमा लिया था। युद्ध की वजह स फौजी खर्चा बढ़ता जा रहा था। महगाइ छलाग मार-मारकर आम जनता की कमर तोड रही थी। विदशी पूजी पर निभरता बढ़ रही थी। अगस्त, 1914 स फरवरी, 1917 के बीच 30 महीना म मत्रिपरिषद् क चार अध्यक्ष छ गृह-मत्री आर चार युद्ध मत्री बदल गय। राजनैतिक अस्थिरता और अनिश्चितता की इमस बडी मिसाल और क्या हा सकती हे?

दूमा (Duma) यानी रूसी समद म कडट(सवधानिक-जनवादी पार्टी) का लक्ष्य राजतत्र और समद का जाडकर रखना था। समाजवादी-क्रांतिकारी पार्टी कृषि सुधारा का लागू करने पर जार द रही थी। प्रगतिवादी पार्टी बडी पूजी क फलन-फूलन आर इजारदारिया का मजबूत करने की पक्षधर थी। त्रुदाविक पार्टी ग्रामीण पूजीपतिया की पार्टी थी। पर कुल मिलाकर य सभी दल रामानाव वश क जारा का अपन रास्त की बाधा नही समझत थे। हा रूसी सामाजिक जनवादी मजदूर पार्टी का जारशाही मे सख्त घणा थी। इस पार्टी का जन्म 1898 म हुआ था। यह पार्टी ब्लादीमिर इलिच उल्यानाव लनिन द्वारा स्थापित श्रमिक मुक्ति सघर्ष सघ म निकली थी। लनिन का मानना था कि जारशाही और पूजीपति वर्ग क खिलाफ सघर्ष करने के लिए एक एकल और कन्द्रीकृत जुझारू पार्टी की जरूरत है, जा भाषा और जाति के भद-भाव क बिना पूरे सर्वहारा वर्ग का अपन पीछ ला सक।

सामाजिक जनवादी मजदूर पार्टी म दा गुट थे। बाल्शविक (बहुमत वाल) और मशेविक (अल्पमत वाल)। सन् 1903 म पार्टी की दूसरी काग्रस सपन्न हुई। लनिन क



रास्पुतिन



केरेंस्की

नेतत्व म बाल्शविका ने अपना फौरी कार्यक्रम जारशाही यानी एकतंत्र का खात्मा और *अधिकतम कायक्रम समाजवादी क्रांति रखा। बोल्शेविकों ने जनता को जगाकर* क्रांतिकारी आदालन मे खीचने की मुहिम शुरू की। देश के कोने-कोने म बोल्शविको ने क्रांति का सदेश फैलाया। लोगा को बताया कि उनकी बदहाली की असली वजह क्या है?

10 फरवरी 1917 को पेत्राग्राद म मजदूरा क प्रदर्शन शुरू हा गय। 14 फरवरी का *90 000 मजदूरो ने काम बद कर दिया। पुराने पचाग के अनुसार 23 फरवरी को* अतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया। महिलाआ के प्रदर्शन के समर्थन म सवा लाख मजदूरा न हडताल कर दी। बाल्शविका न इस अवसर पर अपनी कुशल नतत्व क्षमता का परिचय दकर जनता के सच्चे रहनमा बनन का अधिकार प्राप्त कर लिया। 24 फरवरी तक हडतालिया की सख्या बढ़कर सवा दा लाख हो गयी ओर 25 फरवरी का हुई राजनतिक हडताल न नगर की सभी आर्थिक गतिविधिया ठप्प कर दी। जार ने कमाडर जनरल खाबालोव को राजधानी म हो रही गडबडिया को खत्म करन और जलसे-जलूसा पर पाबदी लगान का हुक्म दिया। जनता का कुचलने गयी टुकडियो स मजदूर जूझ गये। घमासान युद्ध छिड गया। 27 फरवरी को 10 000 सैनिक विद्राही मजदूरो से मिल गये। अगले दिन तक बागी फौजियो की सख्या सवा लाख हा चुकी थी। मजदूरो और सैनिका ने मिलकर पत्राग्राद सावियत बना ली। सोवियतें मजदूरा किसानो और सैनिका क निर्वाचित राजनैतिक सगठन थी। इनका जन्म प्रथम रूसी क्रांति (1905 1907) क दौरान हुआ था। फरवरी मे हुई क्रांतिकारी घटनाआ का पूजीपति वर्ग क प्रतिनिधिया ने फायदा उठाया। *जारशाही की दूमा म बैठने वाले इन प्रतिनिधिया न चालाकी स खुद का दूमा की अंतरिम* समिति घाषित कर दिया ताकि व खुद का क्रांतिकारिया क गल उतार सक। 2 मार्च का इसी अंतरिम समिति के कहने पर जार न अपन भाई क पक्ष म गद्दी छाड दी पर जार के भाई न घबराकर अंतरिम समिति की अस्थायी सरकार का सत्ता सौंप दी।



जनसभा को संबोधित करते लेनिन

इस अस्थायी सरकार को पूजीवादी देशों ने हाथों-हाथ लिया और मान लिया कि युरोप की तरह रूस भी उदारतावादी पूजीवादी जनतंत्रों की राह पर चल पडा है। पर इस सरकार के प्रमुख कारकुनों का ध्यान से अध्ययन करने पर ही इसका पतनशील चरित्र साफ हो जाता था। पूजीपति गुचकोव इस अस्थायी सरकार का सैन्य और नौसैनिक मंत्री था। इस ने सन् 1905 से सन् 1907 के बीच हुई रूसी क्रांति की पराजय का स्वागत किया था। प्रिंस ल्वोव शासनाध्यक्ष था। वह हर तरह के क्रांतिकारी आदोलन को कुचल देने का पक्षधर था। व्यापार और उद्योग मंत्री कोनोवलोव अपने मिल-मालिक चरित्र के अनुरूप ही मजदूरों के खिलाफ कडे रवैये की वकालत करता था। वित्तमंत्री तेरेश्चेको रूस को लगातार युद्ध में झोंके रखने के पक्ष में था। जाहिरा तौर पर यह अस्थायी सरकार उन क्रांतिकारी ताकतों को सतुष्ट नही कर सकती थी जो फरवरी-क्रांति के दौरान पैदा हुई थी। वैसे भी अस्थायी सरकार को सत्ता हाथ मे लेने का मौका मेंशेविकों ने दिया था। बाल्शेविक इस नीति के पक्ष में कतई नही थे।

इस तरह से अब तक रूस में दो सरकार बन चुकी थी। एक तरफ अस्थायी सरकार थी तो दूसरी तरफ पेत्रोग्राद सोवियत थी। 3 अप्रैल, 1917 को लेनिन निर्वासन से लौटे। पेत्रोग्राद में उनका जोरदार स्वागत किया गया। जनता के दबाव ने अस्थायी सरकार के गठन में कई बार परिवर्तन किये। इन अस्थायी सरकारों में से कोई भी सरकार जन-समस्याओं को तो हल नही कर सकी लेकिन वह जनता के आदोलनो का दमन करने मे भी कतई पीछे नही रही। 4 जुलाई 1917 को पाच लाख शांतिपूर्ण प्रदर्शनकारियो पर अस्थायी सरकार की फौजों ने गोलिया चलायी जिससे 50 लोग मारे गये। बोलशेविकों की हत्याएं भी की गयी। लेनिन की गिरफ्तारी की योजनाएं बनने लगी। लेनिन को फिर विदेश चले जाना पडा। पार्टी साहित्य छापने वाले प्रेसों पर छापे पडने लगे। बाल्शेविक पार्टी और उसके नेता भूमिगत हो गये। उसका मुख-पत्र 'प्राव्दा' 'राबेची ई सल्दात' 'राबोची पूत' इत्यादि के नामो से प्रकाशित होता रहा।

बोल्शेविकों ने 26 जुलाई से 3 अगस्त तक अपनी छठी कांग्रेस भूमिगत रूप में की। इसमें हथियारबंद बगावत की तैयारी करने और मौके का इंतजार करने की नीति तय की गयी। उधर अस्थायी सरकार के नये प्रधानमंत्री केरेन्स्की ने तय किया कि बोल्शेविकों को काबू में करने के लिए सैनिक तानाशाही लागू कर देना ठीक होगा। प्रधान सेनापति कोर्नीलोव भी इसी पक्ष में थे। पर वे खुद को तानाशाह घोषित करना चाहता था। 21 और 31 अगस्त 1917 के बीच जनरल कोर्नीलोव की फौजी टुकड़िया पेत्रोग्राद में लामबंदी करने लगी। कोर्नीलोव को बड़े पूंजीपतियों और मित्र राष्ट्रों का समर्थन हासिल था लेकिन कोर्नीलोव का यह विद्रोह पनपने से पहले ही कुचल दिया गया। इससे लोगों की समझ में आ गया कि रूसी जनता के सच्चे प्रतिनिधि केरेन्स्की या कोर्नीलोव के बजाय बोल्शेविक ही हैं।



सैनिकों ने मित्र राष्ट्रों की ओर से लड़ने की शपथ तो ली लेकिन वे समझ नहीं पा रहे थे कि उनकी लड़ाई का उद्देश्य क्या है?

सन् 1917 के पतझड म लनिन फिनलैंड स भेस बदलकर पत्रोग्राद पहुचे। उन्ह 1/32 सर्दोबाल्स्काया राड पर बन एक मकान म गप्त रूप स ठहराया गया। यही उन्हान हथियारबद विद्राह की योजना बनायी। विद्राही दस्ता का मुख्यालय बनाना तारघरा टलीफान क द्रा ओर रलव स्टशना पर कब्जा कर लना सना क जनरला व अस्थायी सरकार क सदस्या का गिरफ्तार कर लना आदि बात इस याजना का मुख्य अग थी। बाल्शविका की पार्टी न इस याजना का मजूरी द दी।

पत्राग्राद गरीसन क क्रांतिकारी सनिका बाल्टिक जहाजी बड क नासनिका व रड गार्डों की मिली-जुली फाजी न क्रातिकारी सनिक क्न्द्र क नतत्व म तयारी कर ली। इस समिति म बुबनोव, दझरझीस्की स्वदलव स्तालिन आर उरीत्सकी जसे लनिन क विश्वस्त शिष्य आर साथी थ। पत्राग्राद म अक्तूबर 1917 म हुए इस सशस्त्र विद्राह म 40 000 क्रांतिकारिया न हथियार उठाय।

दूसरी तरफ युद्ध म परशान सनिक मार्चा छाडकर भाग रह थ। मजदूरा ने कारखाना की बागडोर अपन हाथा म लनी शुरू कर दी थी। किसाना न भी जमीदारा का खदडना आर लतियाना शुरू कर दिया था। एस म करस्की न पहला वार किया। 24 अक्तूबर का सरकार न क्रांतिकारिया क मख पत्र राबीची पुत क प्रस पर छापा मारा। पर इसी दिन क्रांति क मुख्यालय स्माल्नी इस्टीट्यूट म सारी तैयारी पूरी हा चुकी थी। 24-25 अक्तूबर की रात का एक-एक करक क्न्द्रीय डाकघर निकालायवस्की रलवे स्टेशन बिजलीघर इत्यादि पर क्रांतिकारिया का कब्जा हा गया। अगली सुबह बैंक वारसा रलव स्टशन आर टलीफान एक्सचज उनक हाथ म आ गय। क्रांतिकारिया का समथन करने वाला युद्धपात अर्वारा नवा नदी म आ गया। अब शिशिर प्रासाद (केरेस्की का



सन् 1917 मे क्रेमलिन मे प्रवेश करते लाल सैनिक



लेनिन

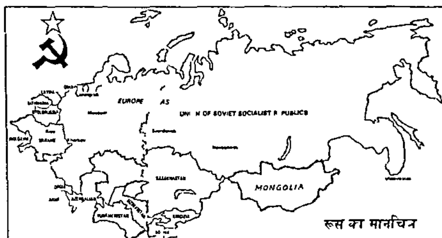


स्तालिन

मख्यालय) सीध उसकी तोपा की मार क अदर था। 25 अक्तूबर को क्रांतिकारी सैनिक समिति ने रूस के नागरिका क नाम अपील प्रसारित की। 26 अक्तूबर की रात 2 10 बजे अस्थायी सरकार क प्रतिनिधिया को गिरफ्तार कर लिया गया। सोवियता की दूसरी अखिल रूसी कांग्रेस हई जिसन भूमि और शाति सबधी विज्ञप्तिया निकाली। इनम युद्ध खत्म करने और भमि पर जमीदारा का मालिकाना खत्म करने की घोषणाए की गयी थी। इस कांग्रेस म दुनिया म मजदूरा किसाना की पहली सरकार जन कमिसार परिषद् गठित हई। लनिन सरकार क प्रधान चने गये। उद्योगा का राष्ट्रीयकरण कर दिया गया। शोषका से वोट डालने के अधिकार छीन लिय गय। 31 दिसबर 1917 को फिनलेंड को आजाद घोषित कर दिया गया।

दूसरी तरफ क्रातिकारी सरकार क खिलाफ साजिश हो रही थी। सत्ता से हटाये गये पूजीपतिया और सामता ने मातृभूमि तथा क्राति उद्धारक समिति जैस आकर्षक नामा स बोल्शविका के खिलाफ मुहिम शुरू कर दी। पेत्राग्राद स आठ किमी दूर केरस्की इस बात का इतजार कर रहा था कि कब उनकी फौजे पेत्राग्राद पर कब्जा कर और व अपने सफेद घोडे पर सवार हाकर शिशिर प्रासाद म जाय। पर बाल्शेविका न जनरल क्रास्नाव और उसके स्टाफ का गिरफ्तार कर लिया। कई घटो की लडाई के बाद क्रातिकारी दस्ता की जीत हुई। करस्की फिर भाग निकला।

अब बारी आयी मित्र राष्ट्रा के हस्तक्षेप करन की। ब्रिटन और फ्रास ने 10 दिसबर 1917 को सैनिक कार्रवाई क क्षेत्रा म बटवारा करके जल्दी से जल्दी बोल्शेविकों का उखाड फेकने की साजिश की। अमरीका ने तमाम क्राति विरोधी ताकता की भरपूर आर्थिक मदद की। 25 अक्तूबर स 2 नवबर तक घनघार सघर्ष चलाकर बाल्शविका ने मास्को को जीत लिया था। बाल्टिक राज्या के आधे से अधिक भू भाग पर सावियता की सत्ता कायम हो गयी थी। देश क पुनर्निर्माण क लिए शाति की जरूरत थी। इसलिए थाडी कडी और अपमानजनक शर्तों पर भी 3 मार्च, 1918 को ब्रेस्ट-लितोव्स्क म सोवियत प्रतिनिधिमडल न जर्मना के साथ संधि कर ली। जर्मना न शांति समझौता ताडकर पूर्वी मार्चे पर हमला बाल दिया था। पत्रोग्राद पूरी तरह घरबदी म था इसलिए लनिन क नतृत्व म सावियत सरकार मास्को चली गयी।

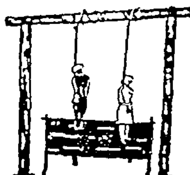


रूस का मानचित्र

पूंजीवादी देशों में अकेले ब्रिटेन ने सोवियत विरोधी कारवाइयों पर 8 करोड़ 97 लाख पौंड खर्च किये। क्रांति के लाल रंग के खिलाफ प्रतिक्रांति के सफेद झंडे तले दक्षिण और पूर्वी इलाकों में सेनाएं जमा होने लगीं। 23 फरवरी को इस गृह-युद्ध में लड़ने के लिए लाल सेना का गठन किया गया। सिर्फ पेत्रोग्राद में ही 40 000 मजदूरों ने सेना में अपने को नामजद करवाया। लाल सेना के पास अच्छे और काफी मात्रा में हथियार नहीं थे। हर छः सैनिकों के बीच एक राइफल थी। 9 मार्च तक 2 000 ब्रिटिश 65 000 जापानी और 12 000 अमरीकी सैनिक रूस के गृह-युद्ध में हस्तक्षेप के लिए ब्लादीवास्टक पहुंच चुके थे। *चेकोस्लोवाक युद्ध-बंदियों की फौज खड़ी कर दी गयी थी।* सन् 1918 की गर्मियों में मजदूर-किसानों का यह नवनिर्मित गणराज्य सभी ओर से घेरे में आ गया। अगस्त में लेनिन के ऊपर कातिलाना हमला हुआ। वे बुरी तरह घायल हो गये। उसी दिन पेत्रोग्राद में एक आतंकवादी ने पार्टी के नेता उरीत्स्की की हत्या कर दी। इस तरह प्रतिक्रांतिकारियों ने अंदर और बाहर दोनों तरफ से क्रांति के खिलाफ लड़ाई छेड़ दी।

विदेशी आक्रमण को देखते ही क्रांति के कई पूर्व-विरोधी देशभक्ति की भावना से प्रेरित होकर उसके पक्ष में आ गये। जारशाही के कई जनरलों ने गृह-युद्ध में सोवियतों की ओर से जमकर भाग लिया। तमाम तरह की दिक्कतों भूख तबाही और कमी के बावजूद सोवियत सेनाएं युद्ध लड़ती रहीं और इस तरह सन् 1918 का साल खत्म होने को आ गया।

11 नवंबर 1918 को विश्व-युद्ध खत्म हो गया। जर्मनी और मित्र राष्ट्रों के बीच संधि हो गयी। अब ब्रिटेन और फ्रांस ने अपने युद्धपोतों के जरिए क्रांति में हस्तक्षेप करना प्रारंभ किया। *ब्रिटिश फौज अपने टैंक लेकर आ गयी। सोवियत सरकार ने सन् 1919 में* अपनी राजनैतिक और कटनीतिक कुशलता साबित की। लाल सैनिक मार्च से एक कदम भी नहीं डिगे। सन् 1920 में आखिर हारकर मित्र राष्ट्रों को अपनी सेनाएं वापस बुलानी पड़ीं। सन् 1921 के आते आते गृह युद्ध खत्म हो गया। अब बारी आयी गृह युद्ध में ध्वस्त हुए देश के पुनर्निर्माण की। सोवियत जनता ने कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में यह बेहद गंभीर और जरूरी काम भी सफलतापूर्वक कर दिखाया। आज सोवियत संघ विश्व के सबसे बड़े दो औद्योगिक देशों में से एक है। ■■



तुर्की की क्राति
(1915 1921)

400 वर्ष पुराने ऑटोमन तुर्क साम्राज्य के पतन के बाद तुर्की के फौजी अफसरो और जनता मे राष्ट्रवादी महत्त्वाकाक्षाए पनपने लगीं। वे खलीफा और सुल्ताना के मध्ययुगीन शासन से अपने देश को मुक्त कराकर खुली हवा में सास लेना चाहते थे। कमाल अता तुर्क यह सपना देखने वालो के अग्रणी नेता थे। तुर्की की क्राति ने न केवल इस राष्ट्र को अपनी प्राकृतिक सीमाओ मे सुरक्षित किया बल्कि सोच-विचार और समाज नीति का पश्चिमीकरण भी कर दिया। खिलाफत खत्म हुई और तुर्की प्रथम विश्व-युद्ध की पराजय से उभरकर एक स्वतत्र और प्रभुसत्ता-सपन्न राष्ट्र बन गया।

प्रथम विश्व-युद्ध खत्म हान क बाद तुर्की का ऑटोमन साम्राज्य (Ottoman Empire) तेजी से पतन नी गल म फिसलने लगा था। करीब 400 साल पहले ऑटामन तुर्की न मसोपाटामिया और कुर्दिस्तान सीरिया और माइनर एशिया, क्रीमिया और दक्षिण रूस व मिस्र और उत्तर अफ्रीका का जीतकर अपन साम्राज्य का काफी विस्तार कर लिया था। तुर्को न कास्टटिनापिल (Constantinople) बाल्कन दशा, हगरी का अपन प्रभुत्व म लाकर पश्चिमी दुनिया की सर्वश्रेष्ठ शक्ति हाने का रतबा हासिल कर लिया था। लेकिन ज्याही इस साम्राज्य क टूटन की प्रक्रिया शुरू हुई तो यह देखत दखत 'युरोप क बीमार आत्मी' म बदल गया। रूस क जार न तुर्क साम्राज्य को यह उपमा ऐस ही नही दे दी थी। रूस न क्रीमिया को उसस छीन लिया था। यूनान क राष्ट्रवादी सघर्ष ने उस तुर्कों क हाथ स आजाद करा लिया था। सर्बिया (Serbia), रूमानिया आर बल्गारिया भी क्रमश अपनी आजादी की तरफ बढ़ रह थ। फ्रास न अल्जीरिया पर कब्जा कर लिया था। मिस्र ब्रिटिश नियत्रण म आ चुका था। कल मिलाकर एक जमान म महान और शक्तिशाली रह चुके इस साम्राज्य की हालत अब खस्ता आर काफी कमजोर थी।

सुल्तान अब्दुल हामिद कास्टटिनापिल म बैठकर अपन बच-खुच राज्य का निहायत



16वीं सदी का महान सुलैमान का जमाना जब ऑटोमन साम्राज्य अपने पूरे वैभव पर था।

क्रूर और मनमाने ढंग से चला रहा था। शक्की और असुरक्षित सुल्तान ने अपने इर्द-गिर्द जासूसों की पूरी फौज ही खड़ी कर ली थी। वह किसी नये विचार, समाज-सुधार के किसी प्रस्ताव, किसी भी तरह की आजादी और आंदोलन के जिक्र तक को बर्दाश्त करने के लिए तैयार नहीं था। अपने देश और समाज की यह दुर्दशा देखकर युवा तुर्कों का मन कुछ कर गुजरने के लिए बेचैन होने लगा। पर सुल्तान के जासूसों से डरकर खुफिया संगठन बनाने के अतिरिक्त उनके सामने कोई चारा न था। खुद सुल्तान की फौज में भी इस तरह की सीक्रेट सोसाइटियां बनने लगी थीं। इनके गठन में एक युवा अफसर मुस्तफा कमाल पाशा ने सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह अफसर ही बाद में तुर्की की क्रांति का नायक बना और अता तुर्क (Father of Turks) के नाम से मशहूर हुआ।

कमाल पाशा मोनास्तिर (Monastir) के सीनियर मिलिट्री स्कूल के एक प्रतिभाशाली छात्र थे। उन्होंने सैन्य विज्ञान का गहन अध्ययन करने के दौरान खुद को असाधारण प्रतिभाशाली साबित किया था। सुल्तान के सेनापति युवक मुस्तफा में भविष्य के जनरल की संभावनाएं देखते थे। उन दिनों 20वीं शताब्दी की शुरुआत थी और तुर्की को एक कुशल सेनापति की जरूरत भी थी। सन 1881 में पैदा हुए मुस्तफा ने 24 साल की उम्र में कप्तान का पद हासिल किया और मिलिट्री कॉलेज में ही 'वतन' (Vatan) नाम की सीक्रेट सोसाइटी बनायी जिसका मकसद संवैधानिक सुधार करना था। यह सोसाइटी तुर्की को मध्ययुगीन समाज की जड़ता से निकालकर नये सांचे में ढालना चाहती थी। पर इससे पहले कि काम अभी बढ़ पाता, सुल्तान के जासूसों ने सोसाइटी का सुराग लगा लिया। उसके सदस्य गिरफ्तार कर लिये गये और क्रांति की कोशिशों के चलते कमाल पाशा को



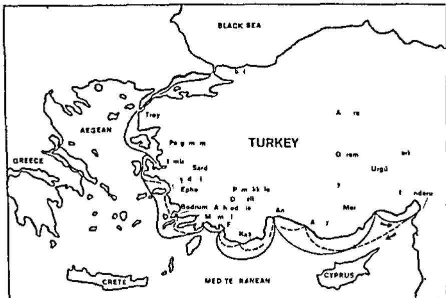
कमाल 'अता तुर्क अर्थात् तुर्कों के पितामह

जल की काठरी मिली। जासूसा न कमाल क खिलाफ सार सबूत जटा लिए थ आर उस मात की सजा मिलन म दर नही थी। पर यहा कमाल की एक अच्छ अफसर क रूप म ख्याति काम आयी आर सजा दन क बजाय कमाल का दमिश्क म एक रजीमट म तनात कर दिया गया। वहा कमाल का अपनी युद्ध कला के जाहर दिखाने का पूरा माका मिला।

कमाल की विशपता यह थी कि उन्हान यरापीय सुधारका की पुस्तका का अध्ययन किया था। उन्ह फ्रासीसी भापा भी आती थी। सीरिया म कमाल न द फादरलेंड एड फ्रीडम सासाइटी बनायी जिसकी विचारधारा तजी स फेली पर कमाल का ध्यान ता तुर्की पर ही लगा हुआ था। उधर तुर्की म कमाल क ज म स्थान सलानिका (Salonika) म एक नये आदालन क अकुर फूट रहे थ। इसम अपन अशदान दने क लिए कमाल न मिस्र आर यूनान हात हए स्वदश का रास्ता पकडा। पर सुल्तान क जासूसा न कमाल की गतिविधिया का फिर स पता लगा लिया। उन्ह वापस जाना पडा। बाद म कमाल न आधिकारिक जरिए म ही अपना तबादला सलानिका करा लिया।

सलानिका म एक खुफिया सधार-आदालन की गतिविधिया शुरू हा गयी। इसका नाम 'ऑटामन फ्रीडम सासाइटी' रखा गया। सासाइटी क नताआ म कई मुद्दा पर परस्पर मतभद था। ज्यादातर नता चाहत थ कि सन् 1876 क सविधान का दाबारा स्थापित किया जाय। सन् 1877 म सुल्तान अब्दुल हामिद न इस सविधान को मानन स इकार कर दिया था। इसके उल्ट कमाल पाशा का मकसद बेकार हा चकी परपराआ कुप्रशासन अशिक्षा और पुरान इस्लामी कानूना का मिटाकर पश्चिमी ढाच पर एक आधुनिक व मजबूत राष्ट्र की स्थापना करना था। पर पाशा क विराधी नता परिस म निर्वासन व्यतीत कर रह थ 'यग टर्क' नताआ स जड थ जा आटामन साम्राज्य का फिर स स्थापित करन का असभव स्वप्न दखते थे।

सन् 1908 म सल्तान का पता लगा कि सलानिका म विद्रोह की चिगारिया सलग रही हैं। उसन विद्राही अफसरा क नता एनवर व (Enver Bay) का तलब किया पर एनवर न पहाडिया म शरण ली। दूसरा विद्राही अफसर मजर नियासी (Niyasi) भी अपन सैनिका



तुर्की का मानचित्र

आर हथियारा क साथ एनवर क नतत्व म चला गया। धीर-धीर तुर्की फाजा क बड हिस्स न बगावत कर दी आर युवा तुर्को न सुल्तान का सविधान मानन पर मजबूर कर दिया। इस परिवतन क नायक एनवर आर नियामी थे।

ठीक एक साल बाद सुल्तान अब्दुल हामिद न अपन समथका क जरिए 'इस्लाम खतर म' का नारा लगाया आर कास्टटिनापिल म विद्राह हा गया। अनुभवहीन युवा तर्क सरकार लडखडा गयी। सलानिका की फाज आड वक्त पर काम आयी। इसका नतत्व एनवर आर कमाल पाशा क हाथ म था। विद्राह कुचल दिया गया आर सुल्तान का गद्दी छाडनी पडी।

अगल ना वर्ष तक तुर्की पर 'कमटी ऑफ यूनियन एड प्राग्रस' की हुकूमत रही। अक्तूबर 1911 म तर्की युद्ध म उलय गया। सन् 1912 म बाल्कन युद्ध म तुर्की का हार खानी पडी आर उसक हाथ स युरापीय इलाका निकल गया। प्रथम विश्व-युद्ध शुरू हुआ। सन् 1915 म कमाल न गलीपाली (Gallipoli) द्वीपसमूह क अपनी कमान वाल हिस्स पर ब्रिटिश हमला झला आर तीन महीन तक विपरीत परिस्थितिया म नतहाशा बहादुरी आर निजी जासिम क दम पर थाडी-सी फाज क सहार अग्रजा का आग बढन स राक रखा। इस तरह कमाल न कास्टटिनापिल का बचाया। युद्ध म व ही अक्ल तुर्की सनापति थ जिसन जीत हासिल की थी। इस जीत न कमाल की ख्याति पूर दश म फला दी। फिर भी तुर्की का मित्र राष्ट्रा क सामन घटन टकन पड।

इधर कास्टटिनापिल म युवा तर्का की सरकार की जगह सुल्तान क उत्तराधिकारी वहीदद्दीन (Vahideddin) न ल ली थी। दश म अकाल पडा हुआ था आर जनता का नतिक बल गिर चुका था। सुल्तान न कमाल की माहबन आर राजधानी म उनकी माजूदगी टालन क लिए उन्ह काल सागर क तट पर फाज की कमान सभालन क लिए भज

दिया। कमाल ने सन् 1919 से तमाम प्रतिरोधी दलों को संगठित करना शुरू किया। थल सेना और नौसेना के कमांडरों की खुफिया बैठक में तय हुआ कि सुल्तान की हुकूमत को न माना जाय। इस बैठक में निकली घोषणा में कास्टेंटिनोपिल की सरकार को विदेशी प्रभुत्व में करार दिया गया और सिवास (Sivas) में एक स्वतंत्र और न्यूनतम कार्यक्रम वाली सरकार बनाने के लिए राष्ट्रीय असेंबली बुलाने का फैसला किया गया।

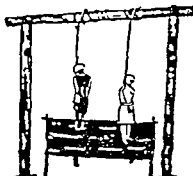
कमाल ने फौज की नौकरी छोड़कर एक नागरिक की तरह सिवास कांग्रेस की अध्यक्षता की। *सुल्तान ने मित्र राष्ट्रों से मदद मांगी। उन्होंने तुर्की के राष्ट्रवादी आंदोलन* को दबाने की शुरुआत की। अंग्रेजों ने कास्टेंटिनोपिल पर कब्जा कर लिया और सुल्तान ने सर्वोच्च खलीफा के रूप में मुसलमानों से कमाल की बात न मानने के लिए कहा।

अंकारा में 23 अप्रैल 1920 को तुर्किश ग्रांड नेशनल असेंबली का पहला अधिवेशन हुआ जिसमें कमाल को राष्ट्रपति चुना गया। कमाल ने घोषित किया कि खलीफा को अंग्रेजों ने कैद कर लिया है इसलिए उसके बिना ही सरकार चलायी जायगी। 10 अगस्त को सुल्तान ने मित्र राष्ट्रों के साथ एक ऐसी संधि की जो पूरे राष्ट्र के लिए घोर अपमानजनक थी। इस संधि से तुर्की ज्यादा से ज्यादा एक कठपुतली देश बन सकता था। सारा देश इस संधि के खिलाफ कमाल पाशा के पीछे खड़ा हो गया।

सन् 1921 में यूनानियों ने हमला किया और तुर्कों को मुंह की खानी पड़ी पर कमाल ने अंकारा के दक्षिण में एक बार फिर इस्पाती दीवार की तरह मोर्चा लगा दिया। यूनानियों को वापस जाना पड़ा और आजाद तुर्की को पहली बार एक राष्ट्र के रूप में सारी दुनिया ने स्वीकारा। रूसी फ्रांसीसी और इतालवी सरकारों ने तुर्की को मान्यता प्रदान की।

मुस्तफा कमाल पाशा के नेतृत्व में अगली गर्मियों में यूनानियों को मुल्क के बाहर निकाल दिया गया और अंग्रेजों से संधि कर ली गयी। तुर्की एक लंबे अर्से बाद अपनी प्राकृतिक सीमाओं का मालिक बना।

तुर्की की क्रांति वहां के समाज, राजनीति और कानून में काफी तब्दीलियां लायी। खलीफा की सल्तनत खत्म कर दी गयी। अंकारा को नयी राजधानी बनाया गया। अगस्त, 1925 में 'फैज' पहनना गैर कानूनी करार दे दिया गया। तुर्कों की पोशाक कानून शिक्षा और संविधान, सभी कुछ पश्चिमी देशों जैसे कर दिये गये। बहु विवाह पर पाबंदी लगा दी गयी। महिलाओं को पुरुषों के बराबर अधिकार दिये गये। सन् 1928 में अरबी लिपि की जगह रोमन लिपि का प्रयोग शुरू किया गया। तुर्की की जनता ने प्रेम से अपने नेता का नाम 'अता तुर्क' यानी तुर्कों का पितामह रख दिया। ■■



भारतीय स्वतंत्रता-संग्राम
(1947)

19वीं शताब्दी के मध्य से भारत में 'स्वदेशी' की भावना पनपने लगी थी। कांग्रेस की स्थापना, गोखले और तिलक की राजनीति, भगत सिंह और चंद्रशेखर आजाद की क्रांतिकारी कार्रवाइयां, गांधी जी का सत्याग्रह और आखिर में 1942 के 'भारत छोड़ो आंदोलन' ने इस भावना को एक विचारधारा का रूप देते हुए क्रमश: पूर्ण आजादी की मंजिल तक पहुंचाया। असंख्य लोगों ने कुर्बानियां दीं, जेलों की यातनाएं सहीं पर अंग्रेजों के सामने सिर न झुकाया। शायद ही किसी अन्य देश ने अपनी आजादी के लिए सौ साल जितना लंबा स्वतंत्रता-संग्राम लड़ा हो। सन् 1857 से शुरू हुई आजादी की यह जंग सन् 1947 में जाकर खत्म हुई। बस, एक ही कसक रह गयी—आजादी मिली पर देश का विभाजन हो गया।

सन् 1857 के प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के कुचल दिये जाने के बावजूद भारतीय जनता ने अंग्रेज अत्याचारों के डर से अपना मुंह नहीं छिपाया। हां, आजादी की लड़ाई ने अपना रूप और रास्ता थोड़ा बदल जरूर दिया। 19वीं शताब्दी के मध्य से ही विदेशी माल के खिलाफ स्वदेशी की भावना एक विचार के रूप में उभरने लगी। धीरे-धीरे लोगों की समझ में आने लगा कि अंग्रेज मैंचेस्टर की अपनी कपड़ा मिल चलाने के लिए भारत के कपड़ा उद्योग को नष्ट कर देने पर आमादा हैं। दादा भाई नौरोजी, तिलक, मदन मोहन मालवीय और सुरेंद्रनाथ बनर्जी जैसे गणमान्य नेताओं ने विदेशी के विरोध में स्वदेशी की आवाज बुलंद की। सन् 1896 तक आते-आते स्वदेशी आंदोलन जोर पकड़ने की स्थिति में आ गया था। कांग्रेस का जन्म कभी का हो चुका था। सन् 1905 में लॉर्ड कर्जन द्वारा बंगाल का विभाजन कर दिया गया। इससे अंग्रेज-विरोधी भावना का रुका हुआ सैलाब फिर से फूट पड़ा। देखते-देखते आर्थिक स्वदेशी आंदोलन ने राजनैतिक तेवर अख्तियार कर लिये। दरअसल सन् 1857 के संग्राम के बाद अंग्रेजों के पहली बार

QUIT INDIA

चले जाव

राजा राममोहन राय

स्वामी विवेकानंद

दयानंद सरस्वती

ज्योतिबा फुले



गोविंद रानडे

ईश्वरचंद्र विद्यासागर

बंकिमचंद्र

नारायण गुरु

रवीन्द्रनाथ ठाकुर

सोहनलाल द्विवेदी

भारतेंदु हरिश्चंद्र

प्रेमचंद



बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'

सुब्रह्मण्यम भारती

मैथिलीशरण गुप्त

डॉ इकबाल

अरविंद घोष

माखनलाल चतुर्वेदी

वंदे मातरम्! वंदे मातरम्!



लाल बाल पाल लाला लाजपत राय, बाल गगाधर तिलक और बिपिनचद्र पाल

सगठित रूप म भारतीय आजादी की माग विभाजन विरोधी आर स्वदशी आदालन क रूप म दिखायी आर सुनायी दी।

राष्टीय आदालन की तह म तीन तरह की अतर्धाराए प्रवाहित हा रही थी। पहली धारा का सबध उन लोगो स था जो जनता की आर स सरकार का तर्कपूर्ण अर्जिया ओर ज्ञापन देकर कुछ विशेप प्रकार की रियायत हासिल कर लेना चाहते थे। य लाग बर्तानवी हुकूमत की 'इसाफ पसदी के कायल थे। इनक अगुआ थ गापाल कृष्ण गाखल। दूसरी तरह क लाग चाहत थ कि लागा मे देशभक्ति स्वाधीनता क लिए प्यार व गुलामी स नफरत की भावनाए पैदा की जाय। साथ ही प्रचार सभाआ जलसा प्रदर्शना और सत्ता की अवहलना क जरिए जनता का प्रतिरोध स्वावलबन त्याग और कष्ट-सहिष्णुता क लिए तयार किया जाय। इन लागा का नारा था 'स्वाराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार हे और हम उस लेकर ही रहग।   लाकमान्य बाल गगाधर तिलक विपिन चद्र पाल और लाला लाजपत राय इस विचारधारा के प्रमुख नता थ। काग्रस नरम ओर गरम दल म विभाजित थी। तीसरी धारा उन लागा की थी जो हथियारबद कार्रवाइयो अर्थात् फौजी तरीके स अग्रजा का तख्ता पलट दना चाहत थे। य व जाबाज क्रातिकारी थ जा हर क्षण मातभूमि का अपन प्राणा का बलिदान देन का तयार थे। बगाल की अनुशीलन समिति इनका प्रमुख सगठन था। अरविंद घोप, बारीद्र कुमार घोप, भूपद्र नाथ दत्त ओर ब्रह्म बाधव उपाध्याय इस आतकवादी आदोलन क प्रमुख सूत्रधार थे।

बहरहाल स्वदशी और विभाजन विरोधी आदालन न अग्रेजा पर कडी चाट की। हर तरह के लोगो न इसमे भाग लिया--नरम दलिया न थाडी हिचक क साथ और गरम

Times of India 9 April 1929

BOMB OUTRAGE BY COMMU
IN THE ASSEMBLY

FINANCE MEMBER AND SIR B. DALAL IN

Panic in Chamber. Second Bomb Thrown on Me
Fleeing at First Explosion.

TWO MEN ARRESTED. POLICE POSTE
HOUSE DAY AND NIGHT


चन्द्रशेखर आजाद


भगत सिंह


रामप्रसाद बिस्मिल

भगत सिंह आदि को फांसी दे दी गयी

लाशें नहीं दी जायंगी जेल में ही जलाई जायंगी

फांसी रोकने और प्रिवी कौंसिल में अपील करने

नामंजूर कर दी गयी


सरोजिनी नायडु


राजगुरु


प्रीतिलता वड्डेदार


विनायक सावरकर


एनी बेसेंट


सुखदेव


दादाभाई नौरोजी


लाला हरदयाल


बीना दास


बाघा जतिन


केशव कर्वे


सिस्टर निवेदिता

ASSISTANT POLICE SUPERINTENDENT SHOT DE

CONSTABLE WHO GIVES CHASE
ALSO MEETS WITH SA


खुदीराम बोस


लाला लाजपत राय


अब्दुल गफ्फार खां


आचार्य कृपलानी


बालगंगाधर तिलक

सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है।

दल ने पूरे जाश क साथ। इसके फलस्वरूप इग्लैंड स भारत म कपडे क आयात मे कमी हो गयी। भारतीय कपडा ज्यादा बिका। जुलाहा की आमदनी बढ़ी। भारत म देसी पूजीपतियो न मिल खाली। भारतीय बैंक खुल पर अग्रजा ने इस आदालन की एक बात का जमकर फायदा उठाया। स्वदशी आर विभाजन विराधी आदालन काफी कुछ हिंदू धर्म की मान्यताआ और रीति-रिवाजा पर आधारित था। मुसलमान उससे अभी उतने जोश-खरोश से नहीं जुड पाय थे। अवसर का फायदा उठाने म माहिर अग्रजा न दग भडका दिय। सन् 1906 म मैमन सिंह जिल म फसाद हान लगा। सरकार की तरफ स इस ओर हवा दी गयी।

उधर भारत मत्री और वायसराय की मार्ले-मिंटो जाडी न घाषणा कर दी कि उनका इरादा प्रशासनिक पुनगठन करन का है। नरम दलीय नता इस चारे को लील गये और नतीजतन काग्रस म फूट पड गयी। इसमे आदालन कमजोर पड गया। दगा ओर राजनैतिक अनिर्णय की स्थिति न आदालन का लगभग ठप्प कर दिया। अग्रजा न नरम दल वाला को छाडकर गरम दल क नेताआ आर क्रांतिकारिया पर जमकर गुस्सा उतारा। सन् 1907-1908 तक तथाकथित राजद्रोहात्मक सभाए रोकन का कानून विस्फाटक पदार्थ कानून, भारतीय दड विधान सशोधन कानून, समाचार पत्र (उत्तेजन तथा अपराध) कानून और प्रस एक्ट बना दिय गये ताकि राष्टवादी आकाक्षाआ की घेराबदी करके उन्ह उग्र होन स रोका जा सके।

मार्ले मिंटो क प्रशासनिक सुधार धोख की टट्टी साबित हुए। वे पूर्ण आजादी पाने की भारतीय इच्छा को कहा शात कर सकते थ? इसलिए इसी दिशा मे आगे बढ़ने के लिए सन् 1916 म 'होम रूल आदालन' शुरू हुआ। लखनऊ समझौते के तहत स्वशासन की माग की गयी। काग्रेस न स्पष्ट कहा "समय आ गया है कि महामहिम सम्राट यह घाषणा कर कि ब्रिटिश सरकार की नीति भारत को निकट भविष्य म ही स्वराज देन की है।' क्रातिकारिया न धमाक जारी रख। सन् 1906 स सन् 1917 क बीच 60 हत्याए या उनकी कोशिशे व 110 डकैतिया व लूटमार इसी सिलसिले म हुईं। बगाल मे अनुशीलन वाला ने और महाराष्ट्र म विनायक दामोदर सावरकर के 'अभिनव भारत' ने इनमे प्रमुख भूमिका निभायी। मुजफ्फरपुर, अमदाबाद नासिक, मद्रास के पास तिन्नेवेली, दिल्ली इत्यादि जगहो पर लॉर्ड मिंटो ओर लॉर्ड हार्डिंग जसे बडे अग्रज प्रशासका की हत्या की कोशिश की गयी।

आजादी क दीवान दश की सीमाए पार करके ब्रिटन म भी गरजे। सावरकर ने लदन मे 'इडिया हाउस' के जरिए भारत की आवाज बुलद की और सन् 1909 म मदन लाल धीगरा ने राजनेतिक ए डी सी कर्जन वायली का गोली मार दी। इस सिलसिले म श्याम जी कष्ण वर्मा और लाला हरदयाल क क्रातिकारी कामा को भी नहीं भुलाया जा सकता। हरदयाल न अमरीका म गदर पार्टी की स्थापना की, जा घोर ब्रिटिश विराधी पार्टी थी। प्रथम विश्व-युद्ध के दौरान इन क्रातिकारिया ने भारत की आजादी क लिए विदशो स सहायता पान और षड्यत्र करने के कई प्रयास किय। उन्ह आखिरी सफलता नही मिली। प्रवासी सिखा ने 'कामागाटामारू की घटना म बडी बहादुरी का प्रदर्शन किया।

काग्रेस की काशिशो से ब्रिटिश साम्राज्य की नैतिक बुनियाद खाखली हाती जा रही थी। उधर क्रातिकारियो ने साबित कर दिया था कि ब्रिटेन की ताकत को चुनौती दी जा सकती है। ब्रिटिश हुकूमत के लिए यह काफी चिंता की बात थी।



































देश की आजादी ही सर्वोपरि थी जिनके लिए!



विशुद्ध गुजराती किसान की वेशभूषा मे महात्मा गांधी साधारण से दिखने वाले इसी व्यक्ति ने भारत को आजादी दिलवाने मे सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

होमरूल आदोलन की बागडोर तिलक और एनी बेसट के हाथ म थी। इस आदोलन म फूट की शिकार काग्रेस म भी एकता करा दी। एनी बेसट की नजरबदी का पूरे देश म कड़ा विरोध किया गया। तिलक पर तरह-तरह क प्रतिबध लगाये गये पर य दोनो नेता और भी लोकप्रिय होते चले गये। प्रथम विश्व-युद्ध म ब्रिटेन की मदद करने के बदले कुछ हासिल होने की उम्मीद लगाये बैठे लोगो को भी निराशा ही हाथ लगी। ब्रिटेन न सारी मांग एक कान मे सुनी और निर्विकार भाव स दूसर कान से निकाल दी। आदोलन के बदले जो मिला वह था--मांटग्यू चेम्सफोर्ड सुधार यानी अत्यत सीमित मात्रा म भारतीयो को सत्ता का हस्तातरण।

सन् 1919 म दूसरा आदोलन फूट पड़ा। मुसलमान तुर्की क खलीफा स यूरोपियनो की बदसलूकी स दु खी थे और हिंदू डोमीनियन राज्यो (जैसे दक्षिण अफ्रीका) म भारतीयो क प्रति अग्रेजी रवैय स बेहद नाराज थ। असहयोग और खिलाफत आदोलन क दौर न मोहनदास करमचद गाधी क व्यक्तित्व को राष्ट्रीय मच पर उभारा। गाधी जी 25 वर्ष तक दक्षिण अफ्रीका म रहकर सन् 1915 म भारत आये थ। व पहले समझते थे कि ब्रिटिश साम्राज्य कुल मिलाकर एक भलाई करने वाली ताकत ह। व खुद को गर्व से राजभक्त कहने और जोश क साथ 'गाड सेव द किंग' गाते। पर रौलट समिति की सिफारिशो क दमनकारी सुझावो न उनका दिमाग बदल दिया। वे साम्राज्य के विरोधी बन गये। उन्होन इसे 'शैतानियत का प्रतीक' करार दिया। सविनय अवज्ञा आदोलन यानी सत्याग्रह होने लगा। सरकार न इसको कसकर दमन किया। दगे भड़क उठे पर राष्ट्रीय आदोलन की धार इस सान पर चढ़कर और तेज हो गयी।

PUBLIC MEETING AND BONFIRE OF FOREIGN CLOTHES

DAWN OF REASON

Mass Civil Disobedience Suspended

CONGRESS WORKING COMMITTEE'S DECISION

Amrita Bazar Patrika

SIMLA CONFERENCE FAILS

LEAGUE OBSTINACY SUCCEEDS

FRESH ALLIED LANDING IN BORNEO

AUSTRALIANS FORCE

I want world sympathy in this battle of Right against Might.
Dandi M K Gandhi
5-4-30

GANDHIJI LEAVES FOR NOAKHALI TO

GREAT MARCH FOR LIBERTY BEGINS

Mahatma Starts With His Chosen Band Of 78



MAHATMA A STATE PRISONER IN YERA

Imprisoned Without Trial Under 1827 Regulation

ADJOURNMENT MOTION IN COMMONS

The Statesman

INAUGURATION OF TWO DOMINIONS

PLEDGE OF SERVICE AND DEDICATION

DAY OF REJOICING IN INDIA



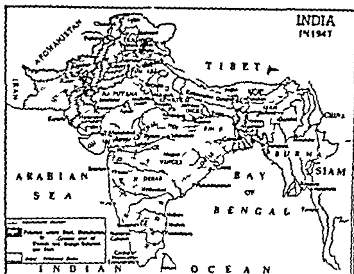
तत्कालीन अखबारों में छपी क्रांतिकारी गतिविधियों से जुड़ी खबरें



जलियावाला बाग यहा चली थी गोलिया

रालट एक्ट क खिलाफ 13 अप्रेल को पजाब क जलियावाला बाग म सभा करन के लिए 15 से 25 हजार तक लोग जमा हुए। बिग्रेडियर जनरल डायर न बिना चतावनी दिय उन पर अधाधुध गालिया चलवायी। सरकार ने कहा 379 मरे पर गैरसरकारी आकड हजारो तक पहुच गये थे। इसके अलावा और भी कई जगह गोलिया चलायी गयी। दमन हुआ। पर जलियावाले बाग म बहे खून को सारे देश ने अपने दामन पर टपकता हुआ महसूस किया। रवीद्रनाथ टैगार ने सरकारी खिताब त्याग दिया। गाधी जी न हिंसा की घटनाआ क कारण सविनय अवज्ञा आदोलन स्थगित करन की घोषणा कर दी। चौरी-चौरा की घटना न उन्ह इस निष्कर्ष पर पहुचाया था। चौरी-चौरा (गारखपुर) म उग्र भीड ने एक थाने मे आग लगा दी थी जिससे वहा तैनात सिपाही इत्यादि जलकर मर गये थे। करल म हुए मापला विद्रोह के कारण उत्तर भारत म साम्प्रदायिक घटनाए भी भडक उठी थी। सरकार ने आदोलन म आयी रुकावट का फायदा उठाकर गाधी जी का गिरफ्तार कर लिया और छ साल की सजा दी।

माटेग्यू-चेम्सफाड सुधारा के तहत बनी विधान-सभाआ म काम करन क लिए 1 जनवरी, 1923 का स्वराज पार्टी बनी थी। काग्रेस ने इन विधानसभाआ का बॉयकाट कर दिया था। इसलिए स्वराज पार्टी न चुनाव लडा और भारी सफलता प्राप्त की। स्वराज पार्टी में मोतीलाल नेहरू और चितरजन दास की बडी भूमिका थी। ये लोग विधानसभाआ म ब्रिटिश हुकूमत से सघर्ष कर रहे थे। पर दास का निधन होन से महाराष्ट्र के कुछ सदस्यो द्वारा अनुशासन तोडने पर स्वराज पार्टी म फूट पड गयी।



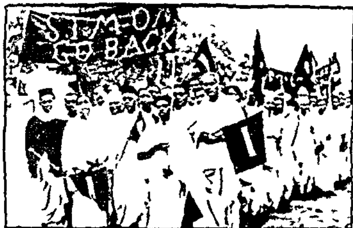
सन् 1947 का भारत भाई से भाई जुदा

सन 1924 तक आते आते कांग्रेस के अंदर विभिन्न विचारों की अभिव्यक्ति मिलने लगी थी। इनमें एक कम्युनिस्ट गुट भी था जिसकी अगुआई श्रीमान अमृत डांगे मुजफ्फर अहमद शौकत उस्मानी और नलिन गुप्ता के हाथ में थी। असहयोग आंदोलन की वापसी और स्वराज पार्टी की विधान सभाओं में असफलता ने पंजाब और बंगाल में आतंकवादी युवकों को यह तर्क प्रदान किया कि गांधी इत्यादि के तरीकों से कुछ हासिल नहीं होने वाला। बंगाल और पंजाब में आतंकवादी तर्ज पर क्रांतिकारी आंदोलन फनफनाकर खड़ा हो गया। बम फेंके गये काकोरी ट्रेन डकैती हुई लाहौर के डी एस पी सांडर्स को गोली से उड़ा दिया गया और विधान सभा में बम फेंका गया। ये कारनामे



भारत की स्वतंत्रता का सपना बुनते—जवाहर गांधी

'साइमन वापस जाओ' के नारे गूंजते रहे और लालाजी के सीने पर लाठियां बरसती रहीं।



'हिंदुस्तान समाजवादी प्रजातांत्रिक सेना' के क्रांतिकारियों ने किये। भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद, बटुकेश्वर दत्त, सुखदेव व राजगुरु के नाम बच्चे-बच्चे की जुबान पर चढ़ गये। चाफेकर बंधुओं, खुदीराम बोस व मदनलाल धींगरा के बाद ये नौजवान आग के शोले बनकर हर भारतवासी की आत्मा में दहकने लगे। डांगे वगैरह पर राजद्रोह का आरोप लगाकर मुकदमा चलाया गया, जो मेरठ षड्यंत्र केस के नाम से जाना गया। साइमन कमीशन का विरोध करते हुए लाला लाजपत राय ने अपनी कुर्बानी दी।

सन् 1930 के लाहौर अधिवेशन में जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में कांग्रेस ने पूर्ण स्वतंत्रता का ध्येय घोषित कर दिया। रावी के तट पर आजाद भारत का झंडा लहराया गया। यह डोमीनियन की हैसियत की मांग से बहुत आगे का कदम था। 26 जनवरी को स्वतंत्रता दिवस घोषित हुआ। देश के हजारों गांवों और शहरों में बड़ी-बड़ी सभाएं करके स्वतंत्रता का संकल्प दोहराया गया। 12 मार्च 1930 को सुबह छः बजे साबरमती आश्रम के 78 लोगों के साथ गांधी जी ने नमक कानून तोड़ने के लिए ऐतिहासिक डांडी



लंदन में हुई राउण्ड टेबिल कान्फ्रेंस में गांधी जी

माच शरू किया। 241 मील की यात्रा क बाद तीन अप्रल की शाम का गाधी और उनक साथी डाडी पहुच। अगल दिन गाधी जी न समद्र क जल म स्नान किया और वापस आकर नमक का ढला उठाया। नमक कानन टट गया। सरकार न नमक कानन ताडन वाला का सार दश म कठारता स दमन किया। जवाहरलाल नहरू और खान अब्दल गफ्फार खा गिरफ्तार कर लिय गय। पशावर म गढ़वाल रायफल्स क नायक चद्र सिंह गढ़वाली न मसलमाना की भीड पर गाली चलान स इकार कर दिया। सना म राष्ट्रीय भावनाआ की यह पहली और अत्यत प्रबल अभिव्यक्ति थी। अग्रजा न 67 अखबार और 55 छापखान बद कर दिय। एक लाख लाग जला म पहुच गय। बबई म कपड की व 16 मिल बद हा गयी जिनक मालिक अग्रज थ। गाधी जी क जल जान क बावजूद आदालन नहीं थमा। नमक सत्याग्रह न सारी दनिया का ध्यान भारत क स्वतत्रता आदालन की तरफ खीच लिया। अग्रजा न ध्यान बटान क लिए लदन म गालमज सम्मलन किया। गाधी इर्विन समझात क तहत काग्रस क लाग भी गाधी क नतत्व म दूसरी गालमज बठक म शामिल हुए पर उनक हाथ कुछ नहीं लगा।

इस बीच म एक एसी घटना हुई जिसन सार दश की भावनाआ का बडी ठस लगायी। यह घटना थी—सरदार भगत सिंह सुखदव और राजगरू का फासी। लागा का उम्मीद थी कि गाधी जी इर्विन समझात क जरिए भगत सिंह का फासी स बचा लग लकिन इस समझात म हिंसक कारवाइया क चल रह मुकदमा का वापस लन का प्रावधान नहीं था। तीना क्रातिकारिया न बमिसाल बहादरी क साथ बलिदान दिया। सार दश न आसू बहाय। तीना का नाम आजादी क आदालन क इतिहास म स्वर्णाक्षरा म लिखा गया।



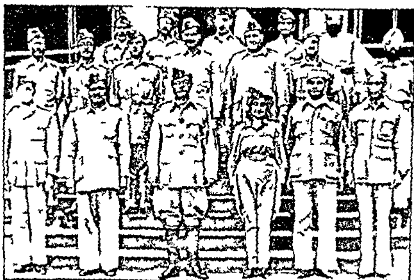
विश्व युद्ध मे
अग्रेजो की ओर से
हि दुस्तानी लडे पर
हाथ क्या लगा?

सन् 1935 तक स्वतत्रता आदालन न सफलता की दिशा म कइ क्दम उठाय। सन् 1937 म काग्रस न मात प्राता म शासन सभाला। उसकी सारी सुधार-याजनाए आर्थिक अभाव की दीवार स टकराकर चूर-चूर हा गयी। दरअसल आमदनी का ज्यादातर हिस्सा कन्द्र सरकार ल लती थी। द्वितीय विश्व-यद्ध की शुरुआत तक भारतीया का अग्रजा की हर चाल समझ म आ गयी आर उनका माह पूरी तरह भग हा गया। प्रथम विश्व-युद्ध की तरह अब काई भी अग्रजा की मदद करन का तयार न था। सन् 1942 तक आत-आत धुरी राष्ट जीत पर जीत हासिल करन लग थ। लग रहा था कि जमन जापानी आर इतालवी सानक ब्रिटन का उधड कर रख दग। अगस्त म काग्रस न करा या मरा का नारा दकर क्रांति का बिगुल बजा दिया। 9 अगस्त का गाधी जी का गिरफ्तार कर लिया गया। सरकार न आदालनकारिया का दमन किया। इसस जनता गुस्स म आ गयी। डाकघर तारघर टलीफान, रल आदि उसक काप क मुख्य निशान बन। पुलिस आर अदालता क प्रति भी लागा म काफी नफरत थी। पूर्वी उत्तर प्रदश बिहार बगाल मध्य प्रात इत्यादि म बाकायदा बगावत हा गयी। जयप्रकाश नारायण न हजारी बाग जल स भाग कर भूमिगत हाकर आदालन चलाया आर एक याद्धा की ख्याति अर्जित कर ली।

बगाल की राजनीति की दन सुभाप चद्र बास अपने रडीकल विचारा क कारण सन 1939 म *गाधी की अनिच्छा क बावजूद काग्रस क नता चुन गय थे। उनका ख्याल था* कि अग्रजा का छ महीन क भीतर आजादी द दन का अल्टीमटम द दना चाहिए। काग्रस न यह प्रस्ताव नही माना। सभाप चद्र बास गाधी क अहिसा वाल विचारा आर नहरू क धुरी राष्ट विराधी विचारा स सहमत नही थे। गाधी जी स तीव्र मतभदा क चलत उन्हान काग्रस छाड दी आर फारवड ब्लॉक बनाया। सुभाप चद्र बास का सन् 1940 म बिना मुकदमा चलाय ही जल म ठूस दिया गया। अग्रज उन्ह काफी खतरनाक समयत थ। 17 जनवरी, 1941 *का व अपन घर की कडी नजरबदी स भाग निकल ओर भस बदलकर यात्रा करत* हए काबुल, मास्का आर वहा स बर्लिन पहुच गये। उनकी हिटलर स बातचीत हइ। पर हिटलर ने स्वतत्र भारत की उनकी योजना का नही माना। बास न जापान जान की याजना बनायी। एशिया मे जापान की जीता और युरापीय ताकतो की पराजय न रास बिहारी बास



सुभापचद्र बोस तुम मुझे खून दो मै तुम्हे आजादी दूगा।

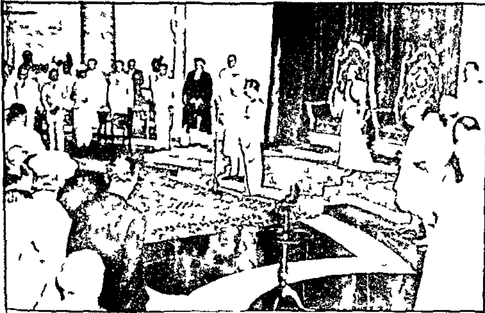


आजाद हिंद फौज के पदाधिकारियों के साथ सुभाष

का काफी उत्तेजित किया। उन्होन 28 30 मार्च 1942 का टाक्या म मम्मलन किया
बैंकाक म दूसरी सभा हुई जिसम इंडिया इडिपडस लीग' बनी। उसका नतत्व सुभाष च
बास का मिला। मलाया म जापानी सना के सामन हथियार डालन वाल ब्रिटिश सेना क
भारतीय जवाना आर अफसरा की मदद स आजाद हिंद फाज बनी। उसम 40 000
युद्ध बंदी शामिल हान क लिए तैयार हा गय। टाक्या म सुभाष जापानी प्रधानमत्री ता ज
स मिल। आजाद हिंद फाज का शुरू म थाडी सफलता भी मिली पर उसकी ताकत पूरी
तरह जापान की माहताज थी। जापानिया क पतन क साथ ही उसका मनाबल भी टू
गया। 18 अगस्त का फारमासा स उड सुभाष चंद्र बास का विमान दुघटना म रहस्यमय



लॉर्ड माउंटबेटन ने मुस्लिम कार्ड' खेलकर कांग्रेस को विभाजन के लिए तैयार होने के लिए विवश कर दिया।



आजादी का यह ऐतिहासिक क्षण आजाद हिन्दुस्तान के प्रधानमंत्री के रूप मे पंडित जवाहरलाल नेहरू को लॉर्ड माउटबेटन ने शपथ दिलायी।

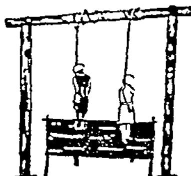
राजे रजवाडो के राजाओ व राजकुमारो से विदा लेते लॉर्ड माउटबेटन और उनकी पत्नी

जिन्ना और लियाकत अली खा

परिस्थितिया म निधन हा गया। वास न आजाद भारत की एक काम चलाऊ सरकार भी बनायी थी।

द्वितीय विश्व -युद्ध म अग्रज आर उनक मित्र राष्ट जीत जरूर पर ब्रिटिश साम्राज्य का सूय अस्त हा गया। उसकी सेनिक आर आद्यागिक क्षमता का भारी नुक्सान उठाना पडा। दश भर म उमड रही राष्ट्रीयता की भावना का दखत हुए उसन भारत का आजादी दन म ही अपनी भलाई समझी। अग्रज सन् 1916 स ही बडी चालाकी स परिस्थितिया का जटिल बनान क लिए हिंदू-मुसलमाना का आपस म लडान की नीति अपनाते रह थ। काग्रस न पहल इसकी तरफ ज्यादा ध्यान नही दिया। सर सयद अहमद खा आर मुहम्मद अली जिन्ना जैसे लागा को महत्त्व नही दिया गया। अग्रज भी कूटनीति क आखिर मज हुए खिलाडी थ। उन्हान मुस्लिम काड खलकर भारत विभाजन की परिस्थितिया तैयार कर दी। लॉर्ड माउटबटन ने वायसराय क रूप म वह कूटनीति खली कि काग्रस का अतत विभाजन मानना पडा। पाकिस्तान बन गया। लेकिन भारत का राजनैतिक आजादी भी मिल गयी। 15 अगस्त 1947 का लाल किल पर प्रथम प्रधानमत्री क रूप म जवाहरलाल नहरू न तिरगा झडा लहराया।





चीन की जनवादी क्रांति

(1919 1949)

द्वितीय विश्व-युद्ध के फलस्वरूप गहराये अतर्राष्टीय सकट ने दुनिया मे परिवर्तन की तेज लहर पैदा कर दी थी। रूसी क्राति की सफलता ने एशिया के कई देशो मे कम्युनिस्टो को क्राति के लिए उत्प्रेरित किया। चीन मे माओ चतुड चू त और चाओ अनलाए और ल्यू शाआछी ने मिलकर क्राति की एक नवीन पद्धति ईजाद की, जिसे दीर्घकालीन प्रतिरोध युद्ध के जरिए 'इलाकावार सत्ता दखल' करते हुए नवजनवादी क्राति करने के सिद्धात के तौर पर जाना जाता है। माओ की स्थापनाओ को शुरू मे मार्क्सवाद के परपरागत विद्वानो ने सैद्धातिक रूप म ठुकरा दिया पर अनुभव और व्यवहार जगत मे वे एकदम सही साबित हुई।

माओ चतुड और चीनी कम्युनिस्ट पार्टी क नतत्व म हुई चीन की क्राति का नवजनवादी क्राति कहत हैं क्याकि यह क्राति हुई ता पूजीवादी क्राति क ढाचे के तहत ही थी पर इसका नतत्व चीन क किसाना और मजदूरा क हाथ म था। पुरानी जनवादी क्राति स अलगान क लिए इस नवजनवादी क्राति कहा जाता ह। कम्युनिस्टा क हाथ स सपन्न हान के बावजूद इस क्राति का अनुभव सावियत समाजवादी अक्तूबर क्राति स अलग था। सावियत क्राति औद्यागिक शहरी इलाका म मजदूर वग क सशस्त्र विद्राह के जरिए हई थी पर चीनी क्राति पूर तीस साल तक चलाय गय किसाना क दी॰॰कालीन प्रतिराध युद्ध से विजयी हाकर निकली थी। इसम इलाकावार सत्ता दखल की नीति अपनायी गयी थी। इस क्राति आर इसक नेता माआ चतुड ने सारी दुनिया, खासकर एशिया के कम्युनिस्टा का बहद प्रभावित किया। कुछ कम्युनिस्ट पाटिया न तो अपन नाम के साथ एक नयी अभिव्यक्ति ही जोडनी शुरू कर दी जिस 'मार्क्सवाद-लनिनवाद आर माआ विचारधारा' कहत हैं।

4 मई 1919 का परिस शांति सम्मलन क अन्यायपूर्ण निणया क विरुद्ध पइचिड क



डॉ सुन यातसेन

तीन हजार स ज्यादा विद्यार्थिया न थ्यनआनमन चौक म इकट्ठ हाकर एक विशाल जलस निकाला। प्रदशनकारिया न हमारी प्रभसत्ता का सम्मान करा न्शा क गद्दारा का सजा दा और वसाइ (परिस) सधि पर हस्ताक्षर न करा आदि नार लगात हए माग पश की कि जापान की तरफदारी करन वाला का सजा दी जाय। इस प्रकार साम्राज्यवाद आर यद्ध-चाधरिया की तानाशाही क खिलाफ चीनी जनता का दशभक्तिपण आदालन दश क कान कान म फलन लगा।

शरू म इस सघर्ष की मख्य शक्ति विद्यार्थी थ। 3 जन क बाद इस सघर्ष न विकसित हाकर सवहारा वग निम्न पूजीपति वग तथा राष्टीय पूजीपति वग क एक एस दशभक्तिपूण आदालन का रूप ल लिया जिसम मख्य भूमिका सवहारा वग द्वारा अदा की गयी। 5 जन का शाङहाए क मजदूरा न आम हडताल कर दी जिसम शामिल हान वाल मजदरा की सख्या 10 जून तक लगभग 70 000 तक पहच गयी। समूच दश की जनता क दशभक्तिपूण आदालन क सामन उत्तरी युद्ध-सरदारा की सरकार का झूकना पडा। उसन गिरफ्तार विद्यार्थिया का रिहा कर दिया छाआ रूलिन लचुङ्ग्वी व चाङ चुङ श्याङ नामक तीना गद्दारा का उनक पदा स हटा दिया गया आर 'वर्साई शाति-सधि पर हस्ताक्षर करन स इनकार कर दिया। इस प्रकार दशभक्तिपण 4 मइ आदालन न अपनी पहली विजय प्राप्त की।

4 मइ आदालन न नव संस्कृति आन्दलन का भी बढावा दिया आर उस एक नयी व ऊची मजिल पर पहुच दिया। 4 मइ आदालन क बाद समूच दश म प्रगतिशील विचारा की पत्रिकाआ की बाढ सी आ गयी और माक्सवाद का प्रचार प्रसार नव सस्कृति आदालन की मुख्यधारा बन गया। मइ 1920 म छन तुश्यू तथा कछ अन्य लागा न शाङहाए म चीन का पहला कम्युनिस्ट ग्रुप कायम किया। कुछ समय बाद ली ताचाआ न

पइचिड म माओ चतड न हूनान प्रात म आर तुड पिऊ न ऊहान म कम्युनिस्ट ग्रुप कायम किय। उनक अलावा चीनान क्वाडचआ जापान आर परिस म भी चीनी कम्युनिस्ट ग्रुप स्थापित किय गये।

जुलाई 1921 म चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की पहली राष्टीय काग्रस का आयाजन शाडहाए म किया गया। माओ चतुड तड पीउ छन थानछ्यू, हशहड वाड चिनमइ तड अर्नमिड लीता ली हानच्यन पाआ वहइसड छन कडपा चआ फाहाए चाड क्वाथाआ आ ल्यू रनचिड महित 13 प्रतिनिधिया न दश क लगभग 50 कम्युनिस्टा का प्रतिनिधित्व करत हुए काग्रम म भाग लिया। इस काग्रम म चीनी कम्युनिस्ट पार्टी का पहला सविधान स्वीकार किया गया आर छन तश्यू का पार्टी की कन्द्रीय कमटी का महासचिव चना गया। इस प्रकार चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की बाकायदा स्थापना कर दी गयी।

जुलाई 1922 म चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने शाडहाए म अपनी दसरी राष्टीय काग्रम की। इस काग्रस का मख्य काम चीनी क्रात क लिए पार्टी कायक्रम बनाना था। काग्रम न उस समय की परिस्थिति का ध्यान म रखत हए पार्टी का जा बुनियादी कायक्रम तय किया वह कुछ इस प्रकार था —घरलू लडाइ का समाप्त करना युद्ध कायक्रम का तख्ता उलट दना आर दश म शाति कायम करना चीनी राष्ट का पूर्ण व वास्तविक स्वतत्रता क लिए अतराष्टीय साम्राज्यवादिया के उत्पीडन क जुए का उतार फकना आर चीन का एकीकरण करक दश म एक असली जनवादी लाकतत्र स्थापित करना। इस तरह चीन क आधुनिक इतिहास म पहली बार चीनी कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा एक जनवादी क्रातिकारी कायक्रम जा पूर्ण रूप स साम्राज्यवाद व सामतवाद का विराध करता था पश किया गया।

जून 1923 म चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की तीसरी राष्टीय काग्रस क्वाडचआ म आयाजित की गयी। काग्रस म यह फसला किया गया कि कम्युनिस्ट पार्टी क्वामिनताड (डॉ सन यातसन द्वारा स्थापित राष्टीय पार्टी) स सहयाग करगी आर कम्युनिस्ट पार्टी क सदस्य व्यक्तिगत हसियत स क्वामिनताड म शामिल हा सकग। साथ ही काग्रस न यह भी तय किया कि कम्युनिस्ट क्वामिनताड सहयाग क चलत चीनी कम्युनिस्ट पार्टी राजनीतिक विचारधारात्मक आर सगठनात्मक नतृत्व म मजदूर-आदालन आर किसान-आदालन तजी से विकसित हान लग।

इसी दौरान चीनी कम्युनिस्ट पार्टी क नतत्व म किसा -आदालन का भी बडी तजी स विकास हुआ। सबस तीव्र प्रगति क्वाडतुड प्रात म दखन का मिली जहा किसान-आदालन का नतृत्व फड पाए नामक नता क हाथ म था। जनवरी 1926 तक क्वाडतुड प्रात म किसान सघ की कुल सदस्य-सख्या छ लाख बीस हजार आर किसान-आत्मरक्षा दस्तो की सदस्य सख्या तीस हजार तक पहुच चुकी थी। फरवरी, 1925 म माओ चतुड अपन जन्म-स्थान हूनान प्रात क शाओशान नामक गाव म वापस आय। वहा उन्हान किसान-आदालन का सफलतापूवक नतृत्व किया आर बीस म अधिक कस्बा म किसान सघा की स्थापना की। जून 1926 तक चीन क 12 प्राता म किसान-सघा की स्थापना की जा चुकी थी, जिसम कस्बा-स्तर वाल किसान-सघा की सख्या 5 300 स अधिक थी आर कुल सदस्य-सख्या लगभग दस लाख थी।

डॉ सुन यातसेन क दहात क बाद क्वामिनताड की फूट-परस्ती धीर-धीर साफ हान लगी। उत्तरी अभियान की शुरुआत क हान पर दक्षिण पथी गुट क नता च्याड काइशक न



1 अक्तूबर 1949 को अध्यक्ष माओ चतुङ ने चीन लोक गणराज्य की स्थापना की घोषणा की।

सिर्फ क्वोमिनताङ की केन्द्रीय कमेटी की स्थायी समिति का अध्यक्ष और उसके संगठन व सैनिक मामलों के विभागों का प्रधान बन बैठा बल्कि राष्ट्रीय सरकार की फौजी कमेटी का अध्यक्ष और राष्ट्रीय क्रांतिकारी सेना का कमांडर-इन-चीफ भी बन गया।

1 जुलाई 1926 को राष्ट्रीय सरकार ने उत्तरी अभियान का घोषणा पत्र जारी किया। इस तरह उत्तरी युद्ध-सरदारों के विरुद्ध एक दंडात्मक अभियान की शुरुआत हुई। इस अभियान का मुख्य निशाना इन तीन युद्ध सरदारों को बनाया गया —ऊ फेइफू, जिसने हूनान, हूपेइ और होनान पर कब्जा कर रखा था, सुन छुआनफाङ, जिसकी शक्ति च्याङसू, आनहवेइ, चच्याङ, फूच्येन और च्याङशी प्रांतों में केन्द्रित थी और चाङ च्वोलिन, जिसने उत्तर-पूर्वी चीन के सभी प्रांतों और पेइचिङ व थ्येनचिन पर नियंत्रण कर रखा था।

मई 1926 में उत्तरी अभियान की अग्रिम यूनिट की हैसियत से 'स्वाधीन रेजीमेंट' ने, जिसके कमांडर ये थिङ नामक एक मशहूर कम्युनिस्ट थे और जिसकी मुख्य शक्ति कम्युनिस्ट पार्टी और नौजवान संघ के सदस्यों की थी, हूनान के मार्चे पर चढ़ाई कर दी। 9 जुलाई को राष्ट्रीय क्रांतिकारी सेना के लगभग एक लाख सैनिकों ने अलग-अलग रास्तों से क्वाङतुङ से कूच कर दिया।

उत्तरी अभियान की विजय न किसान-आदोलन का तजी से आगे बढ़ाया। हूनान प्रात का सघर्ष जिसका परिचालन व नेतृत्व माओ चतुड कर रहे थ, सार देश के किसान आदालन की मुख्य-धारा बन गया। समूच देश म, खासतौर से हूपइ, च्याडशी, क्वाङतुङ, फूच्यन चच्याड और हनान आदि प्राता म किसान-आदालन तूफान की तरह विकसित हान लगा। माच 1927 तक चीन म किसान-सघा की सदस्य सख्या एक कराड स भी अधिक हा चुकी थी।

इसी बीच मजदूरा के क्रांतिकारी सघर्ष न भी जार पकडा। जनवरी 1927 म ऊहान क मजदूरा न ल्यू शाआछी क नेतृत्व म ब्रिटन की बस्ती को वापस ल लिया। उत्तरी अभियान सना क विजयपूर्ण कदमा आर अपनी गतिविधियो म तालमल कायम करने के लिए शाडहाए के मजदूरा ने तीन बार सशस्त्र विद्रोह किय। पहली बार अक्तूबर, 1926' और दूसरी बार 'फरवरी, 1927 क सशस्त्र विद्रोह असफल रहे किंतु 21 मार्च 1927 को चाओ अनलाए आर अन्य व्यक्तिया क नेतृत्व म किया गया तीसरा विद्रोह सफल रहा, जिसमे शाडहाए क मजदूरा न 30 घटा स अधिक लडाई क बाद शहर का मुक्त करा लिया।

उत्तरी अभियान की सफलता आर मजदूर किसान आदालन क चोतरफा विकास न चीन म साम्राज्यवादिया का शासन हिला दिया। 24 मार्च, 1927 को उत्तरी अभियान-सना द्वारा नानचिङ पर कब्जा कर लिए जाने के बाद उसी रात ब्रिटेन अमरीका फ्रास जापान तथा इटली के युद्धपाता न नानचिड पर तापा स गोल बरसान शुरू कर दिय। इस घटना म दा हजार स ज्यादा चीनी हताहत हुए। यह हत्याकाड इस बात का इशारा था कि साम्राज्यवादी शक्तिया चीनी पूजीपति वर्ग का क्राति स गद्दारी के लिए मजबूर करन का षड्यन्त्र रच रही थी। उन्हाने च्याड काईशक को अपना नया एजट चुन लिया था और क्रांतिकारी खम का अदर स तहस-नहस कर क्राति का समूल नष्ट करने की काशिश शुरू कर दी थी। उस समय च्याड काईशक स्वय भी साम्राज्यवादिया जमीदारा और दलाल-पूजीपतिया क साथ अपना गठजाड ओर पक्का करन को अधीर हो रहा था। 12 अप्रैल 1927 का उसन शाडहाए म प्रतिक्रांतिकारी विद्राह कर दिया और बहत बडे पैमान पर मजदूरा व कम्यूनिस्टा की हत्याए करवाइ। च्याड्सू, चच्याड, फूच्यन आर क्वाङतुङ आदि प्राता म भी एस ही हत्याकाड हुए। 18 अप्रल का च्याड काईशक न नानचिङ मे अपनी तथाकथित राष्टीय सरकार कायम की जा बड जमीदारा व बड पूजीपति वर्ग का प्रतिनिधित्व करती थी।

1 अगस्त 1927 का उत्तरी अभियान सना क तीस हजार सैनिका न, जिनका नतृत्व चीनी कम्युनिस्ट पार्टी कर रही थी या जिन पर कम्युनिस्ट पार्टी का प्रभाव था च्याडशी प्रात क नानछाङ शहर म एक सशस्त्र विद्राह किया। यह विद्राह चाओ अनलाए (पार्टी की मार्चा कमेटी क सचिव) चू त हा लुड, य थिङ आर ल्यू पाछड आदि के नतृत्व म किया गया था। पाच घटा की घमासान लडाई क बाद विद्रोही सैनिका ने नानछाङ म क्वामिनताङ गैरिजन सना क दस हजार स अधिक सैनिका को पूरी तरह नेस्तनाबूद कर दिया। कुछ दिना क बाद विद्राही सना ने क्वाडचआ पर अधिकार करन आर क्वाडतुङ प्रात क्रांतिकारी आधार क्षेत्र की पुनर्स्थापना करन क मकसद स च्याडशी क दक्षिण की ओर कूच कर दिया। लेकिन अक्तूबर के शुरू म वह पूर्वी क्वाङतुङ म दुश्मन की बहतर सना के घेरे म फस गयी आर उसकी शक्ति घट गयी। बच-खुच सैनिका का एक दस्ता चू

त और छन ई के नेतृत्व में संघर्ष जारी रखने के लिए हूनान प्रांत की ओर चला गया। नानछाङ विद्रोह चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के स्वतंत्र नेतृत्व की शुरुआत था—क्रांतिकारी सेना द्वारा क्वोमिनताङ प्रतिक्रियावादियों पर किया गया पहला सशस्त्र प्रहार था। इसीलिए उसके बाद से 1 अगस्त के दिन चीनी जनता की क्रांतिकारी सेना के स्थापना दिवस के रूप में मनाया जाता है।

केन्द्रीय कमेटी ने हूनान च्याङशी सीमा पर शरद फसल विद्रोह का नेतृत्व करने के लिए माओ त्सेतुङ को वहां भेजा। 9 अगस्त को विद्रोह छेड़ा गया। मजदूरों-किसानों की क्रांतिकारी सेना छाङशा पर कब्जा करने के लिए तीन तरफ से आगे बढ़ने लगी। लेकिन दुश्मन की शक्ति अपने से ज्यादा होने की वजह से क्रांतिकारी सेना को भारी नुकसान उठाना पड़ा। तत्कालीन परिस्थिति का विश्लेषण करते हुए माओ त्सेतुङ इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि क्रांतिकारी सेना को मुख्य शहरों पर जहां दुश्मन शक्तिशाली है हमला नहीं करना चाहिए। इसके बजाय उसे उन देहाती इलाकों में जहां दुश्मन कमजोर है अपनी शक्ति व प्रयास केन्द्रित करने चाहिए। इसलिए बची हुई सेना उनके नेतृत्व में हूनान और च्याङशी प्रांतों की सीमा पर स्थित चिङकाङशान पर्वतशृंखला की ओर आगे बढ़ी।

नानछाङ विद्रोह, शरद फसल विद्रोह और क्वाङचओ विद्रोह ने क्वोमिनताङ की कत्लेआम की नीति को भारी धक्का पहुंचाया। इसके बाद चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने एक नये दौर में प्रवेश किया, जिसमें मजदूरों और किसानों की लाल सेना कायम की जा सकी।

अक्तूबर 1927 में लाल सेना माओ त्सेतुङ के नेतृत्व में चिङकाङशान के पहाड़ी इलाके में आ पहुंची। वहां उन्होंने जन समुदाय को संगठित करके छापामार लड़ाई चलायी, भूमि-क्रांति की, स्थानीय सत्ता-दल स्थापित किये, पार्टी-संगठन कायम किये और मजदूरों किसानों की राजनीतिक सत्ता की स्थापना की। चिङकाङशान पहाड़ी इलाका चीन का पहला देहाती क्रांतिकारी आधार क्षेत्र बन गया। अप्रैल 1928 में नानछाङ विद्रोह में भाग लेने वाली सेना का एक भाग और हूनान विद्रोह में हिस्सा लेने वाली किसान-सेना चू तेह व छन ई के नेतृत्व में इसी इलाके में पहुंच गयी और माओ त्सेतुङ के नेतृत्व वाली सेना से मिल गयी। इस मिलन के बाद चीनी मजदूरों और किसानों की लाल सेना की चौथी कोर संगठित की गयी जिसमें दस हजार से भी अधिक सैनिक थे। इस कोर के कमांडर चू तेह थे, माओ त्सेतुङ इसके पार्टी-प्रतिनिधि और छन ई राजनीतिक विभाग के निदेशक थे। चिङकाङशान पहाड़ी इलाके की रक्षा की लड़ाई में चू तेह और माओ त्सेतुङ ने जो सुप्रसिद्ध छापामार कार्यनीति अपनायी वह इस प्रकार थी — "जब दुश्मन आगे बढ़ता है, तो हम पीछे हट जाते हैं; जब दुश्मन पड़ाव डालता है, तो हम उसे हैरान-परेशान करते हैं। जब दुश्मन थक जाता है, तो हम उस पर धावा बोल देते हैं; जब दुश्मन पीछे हटता है, तो हम उसका पीछा करते हैं।" चिङकाङशान के संघर्ष के दौरान सेना पर पार्टी के एकछत्र नेतृत्व का सिद्धांत भी निर्धारित किया गया। लाल सेना को तीन काम सौंपे गये: लड़ाई, क्रांतिकारी कार्य के लिए धन संग्रह (बाद में इसे बदलकर उत्पादन कर दिया गया) और जन कार्य। इसी अवधि में जन-सेना के लिए 'अनुशासन के तीन मुख्य नियम और ध्यान देने योग्य आठ बातें' भी निर्धारित की गयीं।

सन् 1927 के शरद से लेकर 1930 तक समूचे देश में लाल सेना और क्रांतिकारी आधार क्षेत्रों का कदम-ब-कदम विकास व प्रसार हुआ। जनवरी 1929 में लाल सेना की चौथी कोर ने माओ त्सेतुङ और चू तेह के नेतृत्व में दक्षिण च्याङशी में प्रवेश किया, जहां

उन्हान क्रमश दक्षिण च्याडशी व पश्चिमी फूच्यन नामक दा क्रांतिकारी आधार-क्षत्र कायम किय। सन् 1930 म इन दा आधार क्षत्रा का मिलाकर केन्द्रीय आधार-क्षत्र बना दिया गया, जिसका मदर मुकाम च्याडशी प्रात क रूईचिन म था। सन् 1930 क पूर्वाद्ध तक चीनी कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा 300 म ज्यादा काउटिया मे सशस्त्र विद्राह छड गय आर 15 क्रांतिकारी आधार-क्षत्र कायम किय गय। उस समय तक सार चीन म लाल सना की सख्या साठ हजार स अधिक हा गयी थी।

जब च्याड काइशक अपनी पूरी शक्ति स गहयुद्ध चलान म लगा हआ था जापानी साम्राज्यवादिया न मौक का फायदा उठात हुए 18 सितबर 1931 का फाज भजकर शनयाड पर कब्जा कर लिया। यह घटना 18 सितबर की घटना के नाम स प्रसिद्ध ह। च्याङ काइशक न उत्तर पर्वी चीन म स्थित चीनी फौजा का जापानिया का 'कतइ मुकाबला न करन का आदश दिया। नतीजा यह हुआ कि तीन महीन स कुछ अधिक समय म ही उत्तर-पूर्वी चीन क तीना प्रात जिनका क्षत्रफल दस लाख वर्ग-किलामीटर स भी अधिक ह, जापानिया क हाथ म चल गय।

जनवरी 1931 म वाङ मिङ न मूल नाम छन शाआत्वी (1904-74) कम्युनिस्ट पार्टी की छठी कन्द्रीय कमटी क चाथ पूण अधिवशन म पार्टी का नतत्व हथिया लिया। तब म लकर सन् 1934 तक वह पार्टी म एक वामपथी अवसरवादी कार्यादशा अपनाता रहा जिसकी विशेषता कट्टरता थी आर जिसक कारण क्रांति का भारी नुक्सान उठाना पडा। वाड मिङ बड शहरा पर कब्जा करन की आवश्यकता पर बल दन क अपन गलत दष्टिकाण पर अडा रहा और दहाता स शहरा का घरन व सशस्त्र शक्ति द्वारा राजनीतिक सत्ता छीनन की रणनीति का विराध करता रहा। वाङ मिङ आर उसक समर्थक चाहत थ कि लाल सना बड शहरा पर फारन हमला कर द। उन्हान आदश दिया कि क्वामिनताङ नियंत्रित बड शहरा म व्यापक रूप म हडताल आर प्रदशन आयाजित किय जाय। नतीजा यह हुआ कि क्वामिनताङ अधिकृत इलाका म कम्युनिस्ट पार्टी क लगभग सभी सगठन नष्ट हा गये। वाङ मिङ आर उसक अनुयायिया न उन कामरडा क प्रति, जा वाङ मिङ की कार्यादशा स सहमत थ निमम सघप आर निष्ठुर प्रहार करन की नीति अपनायी। एक माक पर ता स्वय माओ चतङ का भी लाल सना क नतत्वकारी पद स अलग कर दिया गया।

अक्तूबर, 1933 म च्याङ काइशक न अपनी दस लाख फाज क साथ कन्द्रीय आधार-क्षत्र आर उसक पास हूनान-च्याडशी आधार क्षत्र व फूच्यन-चच्याङ च्याडशी आधार क्षत्र क खिलाफ घरा डालन व विनाश करन की पाचवी मुहिम शुरू कर दी। वामपथी अवसरवादिया क नताओ न छापामारवाद' का विराध करन क नाम पर बहतर सन्य शक्ति का कन्द्रित करना शत्रु का भुलावा दकर अपन प्रदश म दूर तक प्रवश करने दना आर चलायमान लडाइ चलाना आदि लचीली गतिशील काय नीतिया का छाड दिया आर लाल सना का मजबूर किया कि वह दुश्मन की बहतर सना स घमासान लडाइ लड। इस गलती का परिणाम यह हुआ कि लाल सना सभी जगह निष्क्रिय स्थिति म पड गयी। एक साल की भीषण लडाइ क बाद भी वह दुश्मन की घरा डालन व विनाश करन की मुहिम का पराजित नही कर सकी आर अत म मजबूर हाकर उस कन्द्रीय आधार क्षत्र स अपना रणनीतिक स्थानातरण करना पडा। अक्तूबर 1934 म लाल सना की पहली मार्चा सना (कन्द्रीय लाल सना) क अस्सी हजार स अधिक सनिका न फूच्यन

प्रात क छार्डाथिड व निडव्हा च्याङ्शी प्रात क ग्ईचिन व इवीत् स्थाना स रवाना हाकर अपना लबा अभियान (लाग मार्च) शरू किया। दुश्मन की चार नाकबदी पक्तिया का चीरन क बाद लाल सना न क्वाडतुड हूनान और क्वाङ्शी स गुजर क्वइचआ म प्रवश किया। इस लब अभियान क दारान वामपथी अवसरवादिया न शक्तिशाली दुश्मन क सामन पलायनवादी नीति अपनायी जिसक कारण लाल सना का कई बार खतरनाक परिस्थितिया का सामना करना पडा आर बडी सख्या म उसक सैनिका क हताहत हान स अत म वह आधे स भी कम रह गयी।

खतर मे पडी लाल सना आर क्राति का बचान क लिए जनवरी, 1935 म चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की कन्द्रीय कमटी क राजनीतिक ब्यूरा का एक विम्तत सम्मलन क्वइचओ प्रात के चनइ शहर म आयाजित किया गया जिसम वाड मिड की वामपथी अवसरवादी फौजी कार्य दिशा की आलाचना की गयी आर माआ चतड द्वारा प्रतिपादित सही फौजी कार्य-दिशा का पनर्स्थापित किया गया। सम्मलन म पार्टी क नतृत्वकारी अगा का पुनर्गठित किया गया। माआ चतड चाओ अनलाए आर वाङ्च्याश्याड का फाजी मामलो क नतत्वकारी दल का सदस्य चना गया और पार्टी पर माआ चतुड का नतत्व कायम किया गया। इसक बाद स चीनी क्राति विजय क पथ पर पुन आगे बत्न लगी।

चनइ सम्मलन क बाद लाल सना न उत्तर पश्चिम सछ्वान प्रात म प्रवश किया आर वह वहा की चौथी मार्चा सना स जा मिली जिसका नतत्व चाड क्वाथाआ क हाथ म था। पार्टी आर लाल सना न माआ चतड के नतृत्व म चाड क्वोथाआ की उन अपराधपूण कायवाहिया का विराध किया जा उसक द्वारा पार्टी आर लाल सना म फूट डालन क लिए की जा रही थी। इसक बाद लाल सना न उत्तर की आर बढना जारी रखा। भारी नुकसान व धार सघर्ष क पश्चात लाल सना अक्तूबर 1935 म उत्तरी शनशी आधार क्षत्र म पहच गयी आर वहा तनात लाल सना क एक अन्य दस्त स जा मिली। इस प्रकार चीनी मजदूरा आर किसाना की लाल सना का 12 500 किलामीटर लबा अभूतपूव अभियान खत्म हुआ। अक्तूबर 1936 म हा लड आर रनपीशि की कमान म लाल सना की दूसरी मोचा सेना ओर चौथी माचा सना का एक अन्य भाग भी उत्तरी शनशी पहचकर कन्द्रीय लाल सना स जा मिला।

सन् 1935 म 9 दिसबर आदोलन ने जापान का विरोध करन और दश को बचाने के राष्टव्यापी सघर्ष म एक नया उभार पैदा कर दिया। इसका क्वोमिनताड फौज क दशभक्त सिपाहिया पर भी गहरा असर पडा। उत्तरी शेनशी में लाल सेना पर हमला करन के लिए च्याड काईशेक द्वारा भेजी गयी उत्तर-पूर्वी फौज (जिसके कमाडर चाड श्ल्याड थे) और उत्तर पश्चिमी फौज (जिसक कमाडर याड हूछड थे) न लाल सना क विरुद्ध गृह-युद्ध वस्तुत बद कर दिया। चाड और याड के रवैये मे इस परिवर्तन से च्याड काईशक क्रोधित व भयभीत हो उठा। उसने स्वय शीआन जाकर उन दानों को लाल सना पर हमला करन क लिए मजबूर किया। लेकिन 12 सितबर 1936 को चाड और याड न अपने सैनिक भेजकर च्याड काईशेक को गिरफ्तार कर लिया। अगले दिन उन्हाने सार दश के नाम एक खुला तार भेजा जिसमे गृह-युद्ध बद करने और जापान का प्रतिराध करन क लिए कम्युनिस्ट पार्टी के साथ सहयाग करने की माग की गयी। यह घटना शीआन घटना के नाम स प्रसिद्ध है। लेकिन क्वोमिनताड क जापान परस्त गुट ने जिसका अगवा हा इडछिन था इस घटना स लाभ उठाकर गृह युद्ध का विस्तार करन की काशिश की



ताकि जापानी हमलावरा के लिए रास्ता साफ किया जा सक और च्याङ काईशक क हाथ स सत्ता छीनी जा सके। इसलिए उसने सना भजकर शीआन के पूर्व म स्थित थुङक्वान पर धावा बाल दिया। राष्टीय हित ओर जापानी-आक्रमण-विराधी सघर्ष की एकता क लिए चीनी कम्युनिस्ट पार्टी न दृढ़तापूर्वक हा इङछिन की साजिश का विरोध किया और शातिपर्ण ढग स शीआन घटना का हल करन का सुभाव दिया। चाआ अनलाए क नतृत्व म चीनी कम्यनिम्ट पार्टी का एक प्रतिनिधिमडल मध्यस्थता करन क लिए शीआन पहुचा। च्याङ काइशक का अपनी रिहाई स पहल मजबूर हाकर अनक शर्त माननी पडी, जिनम गह-युद्ध राकन ओर जापान क प्रतिराध के लिए कम्यनिस्ट पार्टी स सहयाग करने की शर्तें भी शामिल थी। *शीआन घटना का शातिपूर्ण समाधान दस साल स चल आ रह गह-युद्ध* की समाप्ति ओर जापान विराधी राष्ट्रीय सयुक्त मार्चे की शुरुआत का प्रतीक था।

13 अगस्त 1937 को जापानी हमलावर सना न शाङहाए पर धावा बाल दिया और नानचिङ को जाखिम म डाल दिया। इस प्रकार च्याङ काईशेक क शासन ओर चीन म आग्ल-अमरीकी साम्राज्यवादिया क हिता क लिए सीधा खतरा पदा हा गया। परिस्थिति के यह माड लन के बाद क्वोमिनताङ सरकार का जापान विराधी युद्ध म मजबरन भाग लना पडा ओर जापान का सयुक्त रूप स प्रतिराध करन क लिए चीनी कम्यनिस्ट पार्टी क साथ एक समझौता करना पडा। इस समझोत के अनुसार लाल सना की मुख्य शक्ति को जा उस समय उत्तर पश्चिमी चीन म तनात थी और जिसमे तीस हजार स अधिक सनिक थ राष्टीय क्रातिकारी सना की आठवी राह सना का नाम द दिया गया। चू त इसक कमाडर इन चीफ फङ तव्हाए इसक उप कमाडर-इन-चीफ और य च्यनइङ इसके चीफ ऑफ स्टाफ नियुक्त किय गय।

जापान ने बर्बरतापूर्ण आक्रमण क सामन क्वोमिनताङ का जापान परस्त गुट *जिसका सरगना वाङ चिङवई था लगातार यही राग अलापता रहा कि चीन क हथियार* जापान स घटिया हैं। इसलिए यदि चीन न जापान स युद्ध जारी रखा तो एक राष्ट के रूप म उसका अस्तित्व ही मिट जायगा। दूसरी तरफ च्याङ काईशक गुट ब्रिटन और अमरीका की सहायता स यद्ध म शीघ्र विजय प्राप्त करन का सपना दखता रहा। इन दाना की बेहूदा बाता का खडन करन आर सही रास्ता बतान के लिए माओ चतुङ न मई 1938 में दीर्घकालीन युद्ध क बार मे नामक एक पुस्तक लिखी व प्रकाशित की। 'युद्ध करन की शक्ति का अथाह स्रात जन-समुदाय मे ह' चीन-जापान क इतिहास न उनकी इस भविष्यवाणी का सही साबित कर दिया।

सन् 1939 की सर्दिया स लकर सन् 1943 की गर्मिया तक च्याङ काईशक न तीन *कम्युनिस्ट विराधी हमल किय। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने जवाबी प्रहारा स उसक प्रत्यक* हमले का विफल कर दिया। सयक्त मार्च क प्रति कम्युनिस्ट पार्टी का रुख यह था एकता कायम करना सघर्ष करना और सघर्ष क जरिए फिर एकता कायम करना। सघर्ष करत समय उसन न्यायाचितता क आधार पर अपना फायदा दखत हुए सयत रूप स लडने का कार्यनीतिक उसूल ओर आत्म-रक्षा का यह उसूल अपनाया "जब तक हम पर हमला न हा तब तक हम हमला नही करग। अगर हम पर हमला किया गया ता हम जरूर जवाबी हमला करेग।" अत कम्युनिस्ट पार्टी न क्वोमिनताङ क सभी हमला का विफल कर दिया।



च्याङ काईशेक

जापान विराधी युद्ध म अतिम विजय प्राप्त करन और चीनी क्राति का पर्ण विजय तक पहुचान की तेयारी करन क लिए चीनी कम्युनिस्ट पार्टी न यनआन म 23 अप्रल स 11 जून 1945 तक अपनी सातवी राष्टीय काग्रस आयाजित की। ऐतिहासिक महत्त्व की इस काग्रस म 752 प्रतिनिधि आर वकल्पिक प्रतिनिधि शामिल हए जिन्हान सार देश क 12 लाख 10 हजार पार्टी सदस्या का प्रतिनिधित्व किया। काग्रस न एक सपूर्ण कार्यक्रम और यह सही कार्य-दिशा निर्धारित की "साहस क साथ जन-समुदाय का गालबद करा, जापानी आक्रमणकारिया का पराजित करा आर नय चीन की स्थापना करा। काग्रस म पार्टी का नया सविधान भी स्वीकार किया गया और पार्टी की नयी कन्द्रीय कमटी चुनी गयी, जिसक अध्यक्ष माआ चतुङ थे। पार्टी-काग्रस क बाद जन-सना न जारा क साथ अपने जवाबी हमल जारी रख आर बहुत स खाय हुए इलाक फिर स प्राप्त कर लिए। 8 अगस्त, 1945 का सावियत सघ न जापान क खिलाफ युद्ध की घापणा कर दी और उसकी लाल सना न उत्तर पर्वी चीन म मौजूद जापानी हमलावरा पर धावा बाल दिया। साथ ही मुक्त क्षत्रा की जन-सना न भी राष्ट्रव्यापी जवाबी हमला शुरू कर दिया। 2 सितबर का जापानी साम्राज्यवादियों न आत्म-समर्पण के दस्तावेज पर हस्ताक्षर कर दिये। इस तरह आठ साल क कटु सघप क बाद चीनी जनता न जापान-विराधी युद्ध म अंतिम विजय हासिल की।

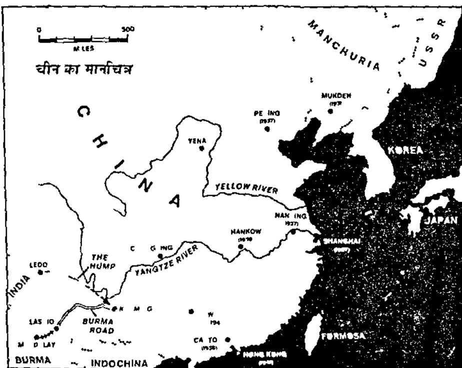
जापान पर विजय पान क बाद समूची चीनी जनता न एक स्वाधीन, शांतिपूर्ण जनवादी, समृद्ध ओर शक्तिशाली चीन का निमाण करन की माग की। लकिन क्वामिनताङ और च्याङ काइशक चीनी जनता पर अपना तानाशाही शासन थापन पर

अड रह ताकि चीन आग भी वड जमींदार वग व वड पूजीपति वर्ग क अधिनायकत्व म एक अर्ध-औपनिवेशिक व अर्ध सामती देश बना रह। दूसरी तरफ, अमरीकी साम्राज्यवादी पूरे चीन को अपना उपनिवेश बनाना चाहत थ। 26 जून, 1946 को क्वोमिनताङ सेनाओ न मुक्त क्षेत्रो पर चौतरफा हमला कर चीन क इतिहास म सबस बड गृह युद्ध को भडका दिया।

गृह-युद्ध क शुरू म क्वोमिनताङ क अधीन 43 लाख सैनिक थे और 30 करोड से ज्यादा आबादी के इलाको पर उसका अधिकार तथा सभी बड-बड शहरो और ज्यादातर सचार-परिवहन व सडको पर उसका नियत्रण था। क्वोमिनताङ न आत्म समर्पण करन वाले दस लाख जापानी सैनिको की समस्त युद्ध-सामग्री भी अपन अधिकार म ले ली थी। उसे अमरीकी फौजी और आर्थिक सहायता भी प्राप्त थी। दूसरी ओर चीनी जन मुक्ति सेना क सैनिको की सख्या कवल बारह लाख थी। साज-सामान क नाम पर उसक पास सिर्फ पुरानी बदूक ही थी। उस कोइ विदशी सहायता भी नहीं मिली थी। मुक्त क्षेत्र जो ज्यादातर गावो म फैल हुए थ उनकी आबादी कवल दस करोड स थोडी ज्यादा थी। चूंकि दुश्मन और क्रांतिकारियो क बीच का शक्ति-सतुलन ऐसा ही था इसलिए कोइ ताज्जुब नहीं कि उस समय क्वोमिनताङ न डींग मारत हुए यह कहा कि जन मुक्ति सेना को तीन स छ महीनो क अदर ठिकान लगा दिया जायगा।

अपन स प्रबल दुश्मन क हमल का मुकाबला करन क लिए चीनी कम्युनिस्ट पार्टी न जो उसूल अपनाया उसका मुख्य उद्देश्य बहतर सन्य शक्ति को कन्द्रित कर दुश्मन की प्रभावशाली शक्ति को नस्तनाबूद करना था न कि किसी शहर या स्थान पर कब्जा करना या उस पर अपना नियत्रण बनाय रखना। राजनीतिक क्षत्र म पार्टी न अमरीकी साम्राज्यवाद और च्याङ काइशक क विरुद्ध समूच राष्ट्र का अत्यत व्यापक सयुक्त मोर्चा सगठित किया। चूंकि चीनी कम्युनिस्ट पार्टी न सही नीति अपनायी, इसलिए जन मुक्ति सेना लडत-लडत और मजबूत होती गयी। राष्ट्रव्यापी गृह-युद्ध आरभ होन क बाद जन मुक्ति सेना न आठ महीनो क अदर ही दुश्मन क सात लाख सैनिको का सफाया कर दिया। मार्च 1947 म क्वोमिनताङ को चौतरफा हमल की रणनीति छोडकर अपन हमल उत्तरी शनशी व शानतुङ क दो मुक्त क्षेत्रो पर कन्द्रित करन क लिए मजबूर होना पडा। जन मुक्ति सेना न च्याङ काइशक की योजनाओ को इस बार भी धूल म मिला दिया।

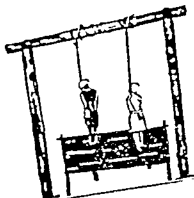
जून और सितबर 1947 क दौरान जन मुक्ति सेना न राष्ट्रव्यापी पैमान पर अपना आक्रमण शुरू कर दिया। अब लडाइ मुख्य रूप स क्वोमिनताङ शासित इलाको म होन लगी। जन मुक्ति सेना न बहुत स ऐस शहरो पर जहा क्वोमिनताङ न रक्षा क लिए बहुत-सी फौजे रख छोडी थी कब्जा कर लिया और दुश्मन की अधिकाश प्रभावकारी शक्तियो को नष्ट कर दिया। अगस्त 1948 स जन मुक्ति सेना न क्रमश तीन बडी मुहिम चलायी—ल्याओशी शनयाङ मुहिम ह्वाए हाए मुहिम और पईफिङ थ्येनचिन मुहिम—जो दुनियाभर म प्रसिद्ध हैं। 142 दिनो तक चलायी गयी इन तीन मुहिमो म क्वोमिनताङ क 15 लाख 40 हजार सैनिको का सफाया कर दिया गया। 2 जनवरी 1949 को जन-मुक्ति सेना क दस लाख सैनिको न छाङच्याङ नदी को पार करना और दक्षिण की ओर आग बढ़ना शुरू किया। 23 अप्रैल को उन्होन नानचिङ को जो च्याङ काइशक क प्रतिक्रियावादी शासन का कन्द्र रहा था मुक्त कर लिया। यह क्वोमिनताङ हुकूमत क पतन का द्योतक बन गया। इसक बाद जन मुक्ति सेना न आधी की तरह अलग अलग



मार्चा पर क्वोमिनताङ के बचे खुचे सैनिकों का सफाया कर डाला। जुलाई 1946 से लेकर जून 1949 तक उसने कुल मिलाकर 80 लाख 70 हजार क्वोमिनताङ सैनिकों को तहस-नहस कर डाला और तिब्बत थाएवान और कुछ तटवर्ती द्वीपों को छोड़कर समूचे चीन को मुक्त करा लिया। इस प्रकार चीनी जनता ने तीसरे गृह युद्ध में विजय प्राप्त की।

21 सितंबर 1949 को चीनी जन-राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन का प्रथम पूर्ण अधिवेशन पेइचिङ में आयोजित किया गया। इसमें विभिन्न क्रांतिकारी वर्गों विभिन्न जनवादी पार्टियों जन-संगठनों अल्प-संख्यक जातियों और प्रवासी चीनियों की नुमाइंदगी करने वाले 662 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। सम्मेलन ने राष्ट्रीय जन-प्रतिनिधि सभा के सत्ताधिकारों व कामों का निष्पादन करते हुए 'चीनी जन राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन का सामान्य कार्यक्रम' स्वीकार किया, जो एक अस्थायी संविधान की भूमिका अदा करता था। सामान्य कार्यक्रम में चीन लोक गणराज्य की स्थापना करने का निर्णय किया गया और यह निर्धारित किया गया कि इस गणराज्य का स्वरूप जनता के जनवादी अधिनायकत्व का होगा जिसका नेतृत्व मजदूर वर्ग करेगा और जो मजदूर-किसान गठजोड़ पर आधारित होगा। सम्मेलन में पेइचिङ को चीन लोक गणराज्य की राजधानी बनाया गया। सम्मेलन ने माओ चेतुङ को केन्द्रीय जन सरकार का अध्यक्ष तथा चू ते ल्यू शाओछी सुङ छिङ लिङ ली चीशन और चाङ लान को उपाध्यक्ष चुना। सम्मेलन के बाद केन्द्रीय जन सरकार ने अपना पहला अधिवेशन बुलाया और चाओ अनलाए को सरकार का प्रधानमंत्री तथा विदेशमंत्री नियुक्त किया।

1 अक्तूबर 1949 को तीन लाख लोग थ्येनआनमन चौक में इकट्ठे हुए। अध्यक्ष माओ चेतुङ ने चीन लोक गणराज्य की विधिवत घोषणा की। चीनी इतिहास का एक नया अध्याय खुल गया। ■■



क्यूबा की क्रांति

(1959)

फिदेल कास्त्रो के नेतृत्व म हुए क्यूबा के मुक्ति-सग्राम ने अब लोक-कथाओ म स्थान पा लिया है। मात्र 82 क्रातिकारियो ने तानाशाह बटिस्टा की सुसज्जित फौज से लोहा लेना शुरू किया और तीन साल से भी कम समय म बेमिसाल जीत हासिल की। इस जीत मे कास्त्रो के लेफ्टीनेंट थे—चे गुएवारा, राउल कास्त्रो और सिमेलो। क्यूबा के किसानो ने क्रातिकारियो का दिल खोल कर साथ दिया। अमरीकी साम्राज्यवाद की गर्व से तनी रीढ पर क्यूबा की क्राति एक बहुत बडी ठोकर थी।

सन् 1956 क मध्य म लातीनी अमरीकी दश क्यूबा तानाशाह बटिस्टा (Batista) क अमरीका समर्थित कुशासन क नीच बरी तरह पिसता हुआ कराह रहा था। पालम बटिस्टा क किसी भी विरोधी को बेहद सख्ती स कुचलती। गिरफ्तार लागो को भयानक अमानवीय यातनाए दी जाती। उनकी कटी पिटी लाश सडको पर या समद्र म पडी हुई मिलती। बटिस्टा ने सोवियत सघ और दूसर समाजवादी देशो स अपन राजनीतिक सबध पूरी तरह ताड लिए थ। वह अब अमरीका क हाथो की कठपुतली मात्र बनकर रह गया था। क्यूबाइ कम्युनिस्टो की पार्टी पार्टिडो सोशलिस्टा पॉपलर (Portido Socialista Popular) पर प्रतिबध लगा दिया गया था। ट्रेड यूनियनो को गुडो क नतत्व म द दिया गया था। अमरीकी पूजीपति पूर दश मे छा गय थ। फौज अमरीकी अफसरो स भरी हुई थी आर पुलिस की लगाम भी सी आइ ए क हाथ म थी। कुल मिलाकर क्यूबा की स्थिति एक अमरीकी उपनिवेश जैसी हो चुकी थी।

लकिन क्यूबा क लोगो म अपन अधिकारो और आजादी क लिए विद्रोह की पुरानी परपरा अब भी मौजूद थी। 19वीं शताब्दी म व आधी सदी तक स्वतत्रता सघर्ष चला चुक थ। सन् 1933 म उन्होंने घृणित तानाशाह मचाडो (Machado) को सत्ता स उतार दिया था। बटिस्टा भी डरा हुआ था। एक युवा वकील फिदेल कास्त्रो (Fidel Castro) क



प्रसन्न मुद्रा म चे गुएवारा

नतत्व म कुछ दुस्साहसिक क्रांतिकारिया न माकाडा (Moncado) बैरका पर हमला किया था। इस कार्रवाइ म छात्रा, युवा मजदूरा सरकारी कमचारिया आर कारीगरा न भाग लिया था। राजनतिक अनुभव की कमी आर किसी ठास कार्यक्रम क अभाव न इन लागा का नाकामयाव बनाया। सभी गिरफ्तार कर लिय गय। फिदल पर मकदमा चला आर उन्हान अदालत म अपना एतिहासिक भाषण हिस्टी विल एब्जाल्व मी (History will absolve me) दिया। बाद म सभी का माफी द दी गयी। य क्रांतिकारी मक्सिका चल गय आर वहीं म क्रांति की अगली तयारी करन लग।

क्यूबा क अदर भी तमाम जुल्म सहत हुए भी मजदूर बुद्धिजीवी विश्वविद्यालया आर हाई स्कूला क छात्र बटिस्टा आर उसक अमरीकी रक्षका क खिलाफ सघर्ष कर रह थ। भूमिगत प्रस बटिस्टा क अपराधा का पदाफाश कर रही थी। हुकूमत क खिलाफ सभाए प्रदशन आर हडताल बढ़ती जा रही थी। तानाशाह न उच्च शिक्षा क सार सस्थान बद कर दिय थ। रिश्वत ब्लकमल ओर धर्मकिया के जरिए बटिस्टा विपक्ष का समथन हासिल करन की काशिश कर रहा था। बटिस्टा अपन भाषणा म आजादी स्वतत्रता आर प्रगति की चचा करत ओर जास मार्ती (Jose Marti) जैसे कवि, क्रांतिकारी आर शहीद क नाम का इस्तमाल भी करता। फाज का यह पूव सार्जेंट दरअसल झूठ आर बदकारी का घिनाना पुतला था।



फिदेल कास्त्रो व चे गुएवारा

क्यूबा क अदर की इसी क्रांतिकारी परिस्थिति का लेकर फिदेल कास्त्रो आर उनक साथिया न क्यूबा पर हमला करन की याजना बनायी। उन्ह स्पनिश फाज क एक पूव कनल अल्बर्टो बायो (Alberto Bayo) की मदद भी मिल गयी। बायो गुरिल्ला युद्ध म विशषज्ञ हान क साथ साथ कवि भी थ। मक्सिका सिटी स 35 किमी दूर सांटा राजा (Santa Rosa) नामक जगह पर बायो न फिदल क क्रांतिकारिया का जगल युद्ध का प्रशिक्षण दना शरू किया। उन्ह हथियारा का इस्तमाल करना आर कठार म कठार जीवन जीन का अभ्यास कराया। बायो का उनक छात्र प्राफसर आफ इंग्लिश क गुप्त नाम स बलात। इन छात्रा म अर्नेस्टो च गुएवारा राउल कास्त्रो डागिया लापज, सिमला आर कार्लोस रमडज जस लाग शामिल थ जा बाद म फिदेल क साथ आधुनिक क्यूबा क निर्माता बन।

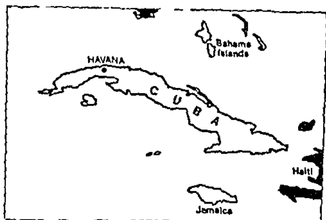
22 जून 1957 का सी आइ ए क कहन पर मक्सिकन सीक्रट पलिस न सांटा राजा पर छापा मारकर क्रांति की तयारी म सलग्न इन लागा का गिरफ्तार कर लिया। मक्सिकन समाज न क्रांतिकारिया की गिरफ्तारी का कडा विराध किया। मक्सिका क पव राष्ट्रपति पूव नासना मत्री आर एक बड नता समत कइ कलाकारा आर विद्वाना की काशिश स एक महीन बाद य लाग रिहा कर दिय गय। मक्सिका आर क्यूबा की सरकारा न इनकी याजनाआ का नष्ट हुआ मान लिया था पर रिहा हात ही फिदल न स्वीडन निवासी वनर ग्रन (Wenner Gren) स ग्रेनमा (Granma) नामक याट (समुद्री नाका) 12 हजार डालर म खरीद लिया। 12 मुसाफिरा की क्षमता वाल इस याट पर बैठकर क्रांति क 82 सिपाही क्यूबा म बटिस्टा क गढ पर हल्ला बालन चल दिय। इस दारान उन्ह कइ बार गद्दारिया

और हताशा का सामना करना पडा पर उन्हान हिम्मत नही हारी। ग्रैनमा जैस-जस समुद्र म आग बढ़ता वस-वैस क्रांतिकारिया का उत्साह ओर उफनता। व 'क्यूबा का गीत और 26 जलाइ आदालन का गाना गात आग बढते जा रह थ। 26 जुलाइ के दिन ही माकाडा बरका पर फिदल न असफल हमला किया था। फिदल का कहना था कि अब या ता व हीरा बनग या शहीद।

30 नवबर का जब ग्रनमा क्यूबा क तट स दा दिन की दूरी पर था कि बटिस्टा क विमाना न उस दख लिया। 2 दिसबर का ग्रनमा क्यूबा क तट पर पहुचा। बटिस्टा की गश्ती नावा न क्रांतिकारिया का घरकर धुआधार गालिया चलानी शुरू कर दी। आसमान स विमान फायरिग कर रह थ। व किसी तरह बचकर दलदली रास्त स हात हुए आग बढ़त रह। प्यास स उनक गल सूखकर छुहारा बन जा रह थ। व जस-तस गन्न चूस-चूसकर अपनी प्यास बुझा रह थ। 4 दिसबर की पूरी रात उन्हान गन्न क खता म दाडत हुए गजारी। अलीग्रिया दि पिआ (Aligria de Pio) पर पहुचकर अपन गाइड की गद्दारी क कारण उन्ह दुश्मन क भयानक हमल का सामना करना पडा। आध लाग मार गय और 20 गिरफ्तार कर लिय गय। इनम स कई का यातनाए दन क बाद गाली मार दी गयी। बाकी क्रांतिकारी बचकर निकल गय आर सीएरा मस्टा (Sierra Maestra) की पहाडिया की तलहटी म एक किसान की झापडी म जमा हुए। क्यूबा क किसाना न इन क्रांतिकारिया की मदद की।

अब आम जनता का विश्वास जीतन क लिए छापामारा का छाटी छाटी जीत हासिल करनी थी। 16 जनवरी 1957 का ला प्लाटा (La Plata) नदी पर बनी फोजी चौकी पर उन लागो न हमला किया आर दा फाजिया का मारकर चाकी पर कब्जा कर लिया। इसी वक्त फिदेल न सीएरा मेस्ट्रा की पहाडिया का विद्राहिया का गढ बनान का निणय लिया। इन्ही पहाडिया म पनाह लकर 19वी सदी क स्वतनता-सनानिया न भी अपनी क्रांतिकारी कारवाइया की थी। यह एसा चट्टानी इलाका था जहा स एक मशीनगन अकल एक हजार सैनिका की गारद का सामना कर सकती थी। ओर ता आर इन पहाडिया क ऊपर विमान उडाना भी खतर स खाली नही था।

22 जनवरी 1957 का विद्रोहिया न बटिस्टा क फोजिया की एक आर टुकडी का हराया। 26 जुलाई आते-आत हवाना (क्यूबा की राजधानी) क भूमिगत नताआ स विद्राहिया का सम्पर्क स्थापित हा गया। व पहाडिया म आकर फिदल स मिल। उन्हान क्रांतिकारियो क लिए हथियार गोला-बारूद, कपडा, दवाए और धन जुटान का जिम्मा लिया। इसस पहल 17 फरवरी 1957 का न्यूयार्क टाइम्स क प्रतिनिधि हबट मथ्यूज न पहाडिया म फिदेल से मुलाकात की। अमरीकी अखबारा म विद्राहिया की बडी बडी तस्वीर छपी। देखत ही देखत व सारी दुनिया म मशहर हा गय। सार जमान म अमरीकी साम्राज्यवाद और बटिस्टा की थू-थू होन लगी। हवाना म छात्रा न विद्राह कर दिया। माच के मध्य म 50 छापामार फिदल स आ मिल। अब विद्राही तीन प्लाटूना म बट गय। किसाना क बीच फिदेल के साथी दाढी वाल क्रांतिकारिया क रूप म मशहूर हा चुक थ। उवेरो (Uvero) गाव की बैरका पर हमला किया गया। इसम 15 विद्राही ता अवश्य शहीद हा गय पर जीत न फिदल क साथिया का उत्साह बढ़ाया। जल्दी ही सीएरा मस्ट्रा क निचले हिस्स म बनी शत्रु की चौकियो का साफ कर दिया गया।

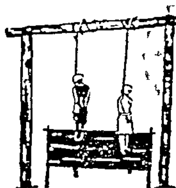


क्यूबा का मानचित्र

बटिस्टा न किसाना आर छापामारा का सम्पर्क ताडन क लिए सीएरा मस्टा क गावा स किसाना का निकालना चाहा पर इसका कड़ा प्रतिरा ध हुआ। इसी दारान कइ किसान विद्राहिया की कतारा म मिल गय। बटिस्टा क अखबार क्रांतिकारिया का मास्का क कम्युनिस्ट एजट कहकर अपमानित करन की चष्टा करत। फिदल का विश्वास मार्क्सवाद लनिनवाद म था भी। च गुएवारा जस लाग लडन क साथ साथ क्रांतिकारी विचारधारा का प्रचार भी करत थ। सन 1957 क खत्म हात हात विद्राहिया का सीएरा मस्त्रा पर पूरी तरह कब्जा हा गया। मार्च 1958 म राउल कास्त्रा क नतत्व म पहाडिया स उतर दूसरा मार्चा खाला गया। 12 मार्च 1958 का फिदल कास्त्रा न एक घाषणा पत्र जारी किया जिसम तानाशाही क खिलाफ एक आम जिहाद छड दन की अपील की गयी थी। 1 मार्च का फाजा म अपील की गयी कि व विद्राहिया का साथ द। अगस्त 1958 म कास्त्रा न अपन आखिरी हमल की याजना बनायी।

इस समय बटिस्टा क पास 20 हजार सना, टक आर विमान थ। विद्राहिया क पास कुछ सा याद्धा थ। उनक हाथयार भी पुरान आर खराब हालत म थ। नयी याजना क तहत फिदल आर राउल क नतत्व वाल छापामारा का सांटियागा शहर की घराबदी करनी थी। सीमिला रहनुमाई वाल छापामारा का पिनार डल रिया प्रात क पश्चिमी इलाक पर हल्ला बालना था आर च गुएवारा क छापामारा का लास विलास हात हुए हवाना का रास्ता साफ करना था। यह भी तय किया गया कि जिस समय च गुएवारा क छापामार साटा क्लारा हात हुए हवाना की तरफ बढ़न लगग उसी समय पश्चिम स सीमिला की फाज हमला करगी।

जग शुरू हा गयी। उपराक्त रणनीति क कारण बटिस्टा की फाजा का एक साथ चार मार्चा पर लडना पडा। च क साथिया न बहादुरी आर कुशलता स लडत हुए साटा क्लारा पर कब्जा करक क्रांतिकारी विजय की शुरुआत की। बटिस्टा य खबर सुनत ही मुल्क छाडकर भाग गया। उसकी जगह जनरल मण्टिला न सत्ता सभाली आर झूठ बाला कि उस फिदल कास्त्रा का समर्थन प्राप्त ह। कास्त्रा न मण्टिला क इस कदम की निन्दा की। 2 जनवरी 1959 का च आर सीमिला की फाज हवाना म घुसी। जनता न उनका भव्य स्वागत किया। तानाशाह क बच हुए सनिका न भी आत्म समर्पण कर दिया। क्रांति जीत गयी। ■■



वियतनाम की क्राति

(1930 1975)

वियतनाम के किसानो ने ही ची मिन्ह और कम्युनिस्ट पार्टी के नेतत्व म आधी सदी तक साम्राज्यवाद से लोहा लेकर अपने देश को स्वाधीन किया। राष्ट्रीय मुक्ति-सग्रामो के इतिहास मे इस महान सघर्ष की गाथा स्वर्णाक्षरो मे लिखी जा चुकी है। वियतनाम ने फ्रासीसी, ब्रिटिश, जापानी और अमरीकी साम्राज्यवादी इरादो को धूल मे मिलाकर सारी दुनिया को आजादी के लिए जूझते रहने की प्रेरणा दी।

दक्षिण पूर्व एशिया क छाट स दश वियतनाम का अपनी आजादी क लिए पहल फ्रासीसी साम्राज्यवाद म और फिर अमरीकी साम्राज्यवाद स लगभग 50 वष तक लोहा लना पडा। फ्रासीसिया न सन् 1868 म सगान पर कब्जा किया था। आजादी क लिए लडन वाल एक किसान याद्धा वन त्रुग त्रुक न मात की सजा पान स पहल कहा था कि जब तक इस धरती पर घास उगती ह आक्रमणकारिया के खिलाफ लडन वाल लाग भी पदा हात रहग।' इसी परपरा क आधार पर वियतनामी दशभक्ता न सघष क हर तरह क रूपा का इस्तमाल किया। 3 मइ 1930 का वियतनाम क तीन कम्युनिस्ट ग्रुपा का एकीकरण सम्मलन हागकाग म हा ची मिन्ह की दख रख म हुआ। पहल य गट साथ-साथ काम करन को राजी ही नही थे आर इसीलिए फ्रासीसी तीना का अलग अलग दमन करन म कामयाब रहत थ। हा ची मिन्ह क प्रयासा स उनम एकता हा गयी आर वियतनाम कम्युनिस्ट पार्टी बनी जिसका नाम बदलकर बाद म हिंद चीन कम्युनिस्ट पार्टी कर दिया गया।

पार्टी न क्राति का 11 सूत्री कार्यक्रम बनाया। इसी के बाद वियतनाम म कम्युनिस्टा का असर तजी से बढा। उन्होन 1930-31 के क्रातिकारी उभार का नतत्व किया। नअन ओर हा निन्ह प्राता म जनता ने सत्ता अपन हाथ मे लकर गाव परिषद् स्थापित कर दी। पर यह जनवादी सरकार मात्र छ -सात महीन म ही फ्रासीसी सना की बबरता क सामन



वियतनामी क्राति के नायक
हो ची मिन्ह

टूट गयी। हो ची मिन्ह ने हागकाग से ही इस आदोलन को यथासभव निर्देशित किया और असफलता के बाद उसकी वजह बताने वाला एक पत्र लिखकर भेजा। हो के पास इग्लैंड, फ्रास, चीन और मास्को मे वियतनामियो व जनवादी आदोलनो में काम करने का गहरा तर्जुबा था। वे जानते थे कि कम्युनिस्ट विचारधारा को कैसे वियतनाम की राष्ट्रीय परिस्थितियो में लागू किया जाय।

सन् 1936 मे फ्रास मे पॉपुलर फ्रट की सरकार बनी, जिससे हिंद चीन मे साम्राज्यवादी दमन ढीला पडा। इसका लाभ उठाकर कम्युनिस्ट पार्टी ने जनता के बीच प्रचार के कई साधन अपनाये और 'हिंद-चीन महाकाग्रेस' नाम से एक आदोलन चलाया। इसकी मुख्य माग जनवादी-सुधार लागू करना, जनता का जीवन स्तर बेहतर करना और स्थानीय परिषदो के चुनाव मे तमाम बालिग जनता को वोट का अधिकार देना थी। मजदूर-हडताल हुई किसानो के प्रदर्शन हुए और 1 मई, 1938 को मई दिवस पर 5 000 लोगो ने जोरदार जलूस निकाला। इन दिनो हो ची मिन्ह चीनी क्रांति मे जापान विरोधी युद्ध मे काम करके लडाई का अनुभव हासिल कर रहे थे।

सन् 1939 मे दूसरा विश्व-युद्ध छिडा। फ्रास ने फौरन वियतनामियो के बचे-खुचे अधिकार जब्त कर लिये। ताबडतोड गिरफ्तारिया होने लगी। एस मे हो से सम्पर्क करने फाम वान डाग और वो वेन जियाप्प चीन पहुचे। इन लोगो ने विचार-विमर्श करके वियतमिन्ह (वियतनाम स्वाधीनता मोर्चा) गठित किया, जिसने वियतनामियो को एक होकर फासिस्टवाद के खिलाफ लडने के लिए ललकारा। साथ साथ ही फ्रांसीसियो को

मार भगाने का कार्यक्रम भी अपने हाथ म लिया। हा ने अपन एक पर्चे म लिखा—"फ्रासीसी साम्राज्यवादी ओर जापानी फासिस्ट दोना ही राष्ट्रीय स्वाधीनता और विश्व क्रांति क दुश्मन हैं।"

राष्ट्रीयता और अतर्राष्ट्रीयता क आधार पर बने इस कार्यक्रम ने वियतनामिया की आत्मा क सात शेर का जगा दिया। उन्हाने अपने पडोसी सियामिया के खिलाफ फाज म भर्ती हाने स इकार कर दिया। टाकिन क बाक सन, अन्नम क डो लौंग म ओर काचीन-चाइना क इलाके म बगावतें भडक उठी। फ्रासीसियो ने भयानक दमन-चक्र चलाया। निहत्थे लागा का मशीनगनो स भून दिया, गाव जला डाल लागा स कब्र खुदवाई गयी ओर फिर उनम उन्ही का जिदा दफन कर दिया गया। उधर यूरोप मे जर्मनी ने फ्रास का हराया आर इधर जापानिया न वियतनाम म प्रवेश पा लिया। हा ची मिन्ह न सदेश भेजा कि जापानिया क खिलाफ गुरिल्ला-युद्ध शुरू किया जाना चाहिए।

हा जनवरी 1941 म 31 साल के प्रवास के बाद वियतनाम लोटे और उन्होने आते ही आदालन का नेतृत्व सीधे अपने हाथा म ले लिया। उन्हान एक प्रचार-सना ओर एक राजनैतिक सेना बनाने की जरूरत पेश की। पार्टी का अखबार शुरू हुआ जिसका नाम 'वियत लैप' (स्वतत्र वियतनाम) रखा गया। सन् 1941 के अत तक काओ बाग क्षेत्र म कम्युनिस्टा न बहुत स आधार क्षेत्र कायम कर लिए। हो ने किताब लिखी, गुरिल्ला दाव-पच', 'रूस म गुरिल्ला युद्ध के अनुभव और 'चीन म गुरिल्ला-युद्ध क अनुभव । चीनी नेता सुन यात सेन की पुस्तका चीनी युद्ध-कला' ओर 'रूसी कम्युनिस्ट पार्टी का इतिहास' का अनुवाद किया। उन्हान वियतनाम पर फ्रासीसी कब्जे का इतिहास भी लिखा जिसमे देशभक्ति पूर्ण आदोलनो को प्रमुखता दी गयी थी। इसी पुस्तक क आखिर म हा न भविष्यवाणी की कि सन् 1945 मे वियतनाम आजाद हा जायगा।

धीरे-धीरे क्रातिकारी आधार-क्षेत्र विकसित होते-हाते लामसन तक पहुच गया। वियतमिन्ह ने मित्र राष्ट्रा स सहायता लेन का फैसला किया। हा एक प्रतिनिधिमडल क साथ चीन गय और च्याग काई शेक स मिलन का बहाना बनाकर वहा क कम्युनिस्टा स सम्पर्क करने की कोशिश की। हो गिरफ्तार कर लिये गये। 14 महीने बाद च्याग सरकार ने उन्हे काफी जद्दा-जहद के बाद रिहा किया। हा का स्वास्थ्य जेल-जीवन की यातनाओ स टूट चुका था पर उन्हाने पहाडो पर चढचढ़कर अपना गठिया दूर किया ओर अधेर म झाक-झाककर अपनी नजर ठीक की। उन्हाने चीन म वियतनामिया के सगठना से कहा कि वे अपने काम का केन्द्र वियतनाम को ही बनाय आर जितन लाग लौट सकत हो, स्वदेश लौट जाय। दो साल बाद अर्थात् सन् 1944 म हा भी वियतनाम लौट आय।

वियतमिन्ह गुरिल्ला ने कई बार फ्रासीसियो क सामन जापानिया से मिलकर लडन का प्रस्ताव रखा पर फ्रासीसिया ने कम्युनिस्टो क खिलाफ जापान का साथ देना जारी रखा। जनता म आतक फैलाकर उसे वियतमिन्ह म शामिल हाने से रोकन का प्रयास किया, पर जहा जहा दमन हुआ, वहा-वहा आदालन और उग्र हो उठा। फ्राम म दगाल की विजय के बाद हिंद चीन मे फ्रास व जापान के बीच मतभेद बढ़ गये। इससे क्रांतिकारी आदालन का फलने फूलने का मौका मिल गया। हो ने राष्ट्रीय मुक्ति सेना गठित करन का प्रस्ताव रखा और जियाप्प का इसका जिम्मा सौंपा। 34 लडाको का पहला दस्ता बनाया गया, जिनम स कई ने चीन म फौजी शिक्षा ली थी। उस 'प्रचार और मुक्ति-दस्ता' कहा गया। इससे दूसर दिन ही पाए खाट और ना नाम मे पहली जीत हासिल की। 9 मार्च, 1945 का जापानिया ने

फ्रासीसिया को पूरी तरह स सत्ता से उतार दिया। फ्रासीसी नागरिक गिरफ्तार कर लिय गय।

1 मार्च, 1945 का वियतमिन्ह न फ्रासीसिया स शत्रुता खत्म करके उन्ह शरणार्थियों का दर्जा दिया। गरिल्ला न फ्रासीसी सैनिका का जापानिया की कैद से छुडान क लिए हमल तक किय। जापान न दाए वियत (विशाल वियतनाम) पार्टी के जरिए कठपुतली सरकार बनायी और एक फौज जुटाकर वियतमिन्ह के खिलाफ भजी। वियतमिन्ह न इस फाज का आसानी स हरा दिया। उसक हथियार छीन लिये और खुद का मजबूत कर लिया। नारा दिया गया– जापानिया के लिए न एक दाना न एक छदाम। 35 लागा तीन राइफला व एक पिस्ताल क साथ शुरू हुई मुक्ति-सना म अब 10 हजार सिपाही भर्ती हो चुके थे आर उसक कई गुप्त दस्ते दशभर म फल हए थे।

15 अगस्त 1945 का कम्युनिस्ट पार्टी की जन काग्रस तान त्राव क आधार इलाक म हुइ। अगल दिन जापानिया न विश्व युद्ध म अपनी पराजय स्वीकार कर ली। जन काग्रस न सशस्त्र क्रांति का आदश दिया आर राष्ट्रीय मुक्ति समिति का चुनाव किया गया। क्रांति शुरू हुइ। जन मुक्ति-सना न जापानी चौकिया का ध्वस्त कर दिया। 14 अगस्त का हनाइ पर उसका कब्जा हा गया। 2 सितबर का अस्थायी सरकार बनी। हा ची मिन्ह न स्वतत्रता का घाषणा-पत्र पढ़ा।

पर वियतनाम का अभी साम्राज्यवाद क खिलाफ लडाई की काफी मंजिल तय करनी थी। मित्र राष्ट्रा न जापानिया का निशस्त्र करन क नाम पर वियतनाम का दा भागा म बाटा। दक्षिण भाग ब्रिटिश सना का सौंपा गया आर उत्तरी भाग च्याग काइ शक की सना का। 23 सितबर का ब्रिटिश सैनिका न सैगान का घर म ल लिया। यह एक नया हथकडा था। पहल हर जगह जापानी सैनिक भज जात आर फिर उनस हथियार लन क नाम पर अग्रज और उनकी कमान म भारतीय सनिक पहच जात। फ्रासीसी अग्रजा स हथियार



तबाही और तबाही

लेकर बर्बर आक्रमण करते और बाद म अग्रेजा और भारतीयो की आड म छिप जाते। वियतनामिया न इन दिक्कता क बावजूद कडा प्रतिरोध किया। उत्तर स वियतनामी देशभक्त आ-आकर दक्षिण म लडन लगे। उनके खून स वहा की धरती लाल हा गयी। उत्तर वियतनाम म हा ची मिन्ह का च्याग काई शक क जनरला के हथकडा का जवाब देना पडा। 6 जनवरी 1946 का हा ने चुनाव कराये और जीत हासिल की।

देश को युद्ध से बचाने और पुनर्निर्माण के लिए समय निकालने के लिए हो न 6 मार्च 1946 को फ्रासीसिया से सधि कर ली। उन्ह इस सब क लिए कछ आलोचना अवश्य झेलनी पडी पर व अत म जनता का समझाने म कामयाब हा गय। 31 मई को व फ्रास रवाना हुए पर उन्हे वहा इसाफ नही मिला। 14 दिसबर का फ्रासीसी सना ने सधि तोडकर हनोई और दूसर शहरो पर हमला कर दिया। उन्हे सफलता ता मिली पर वियतनामी दशभक्ता ने भी जमकर सघर्ष किया जिसस बडी सख्या म फ्रासीसी मार गय। एक बार फिर मुक्ति-युद्ध शुरू हुआ जा 7 मई 1954 तक चला। दीन-बीन फू के 55 दिन क युद्ध म मुक्ति सना ने फ्रासीसिया को अतिम रूप स परास्त कर दिया। जिनवा सम्मलन बुलाया गया जिसमे ढाई महीन तक बहस हुई। 20 जुलाइ 1954 का युद्ध-बदी समझौत पर दस्तखत हुए पर अमरीका न इस समझौत पर दस्तखत नही किय।

अमरीकिया न न्यू जसी म रहन वाल ना दिन्ह को दक्षिण म कठपुतली सरकार का प्रधानमत्री बना दिया। अमरीका का 200 फौजी अधिकारिया का सनिक सहायता परामर्श दल पर्द के पीछे से युद्ध का सचालन करने लगा। धीर धीर अमरीकिया न हर क्षेत्र म फ्रासीसिया का स्थान लना शुरू कर दिया। साल-डढ़ साल म उन्हान दक्षिण वियतनाम का अपना अच्छा-खासा उपनिवश बना लिया। जिनेवा समझौत म स्वतत्र आम चनाव के जरिए दाना वियतनामा क एकीकरण की शत थी पर अमरीका की कठपुतली सरकार न दक्षिण वियतनाम को स्वतत्र राज्य घाषित कर दिया। दक्षिण वियतनाम का साउथ-ईस्ट एशिया टीटी (सीटा) के सरक्षण म लेकर साम्राज्यवादी चौधराहट पुख्ता कर ली गयी। 20 जुलाई 1956 का जिनवा समझौत क मुताबिक आम चुनाव होन चाहिए थे लकिन अमरीका न 4 मार्च 1956 का कवल दक्षिण म चुनाव करा क 123 सदस्यो की धारा सभा खडी कर दी।

दक्षिण की सरकार ने न ता भूमि-सुधार किय और न ही ठीक स शासन चलाया। आतरिक भ्रष्टाचार आर जन-दमन के कारण वह अलाकप्रिय हा गयी। कम्युनिस्टा न वहा वियत-काग क नाम स सघष शुरू कर दिया। उत्तर स पहल वियत-काग का कवल आर्थिक एव नैतिक मदद मिली और बाद म सीध-सीधे सेनिक ही दक्षिण म लडने के लिए आने लगे। अमरीकी राष्ट्रपति कैनडी ने चार हजार अमरीकी सनिक वियत-काग और उत्तरी वियतनाम क खिलाफ भेज। सन् 1965 तक अमरीकी विमान विभिन्न बहाना स उत्तर पर बमबारी करन लग। सन् 1966 तक दा लाख अमरीकी फौज दक्षिण की तरफ म लडने लगी। अमरीका अपनी नीति क कारण अकला पडन लगा। फ्रास न खुद का इस नीति मे अलग घाषित कर दिया। सन् 1967 म अमरीकी रक्षा-मत्री माक्नमारा न वियतनाम के सिलसिल म अमरीकी नीति की जाच की जिसक नतीज सन् 1971 म सामने आये। सन् 1968 मे राष्ट्रपति चुन गय निक्सन ने पूरी काशिश की कि भयानक बमबारी करके वियतनाम को ध्वस्त कर दिया जाय पर अमरीकी ताकत वियतनामी सकल्प को नही ताड सकी। हार कर सन् 1972 मे निक्सन को अपनी फौज वापस बुलानी पडी। यह

निर्मम साम्राज्यवादियो का उपहार

दुनिया क तथाकथित सबस ताकतवर दश की एक बहद अपमानजनक पराजय थी।

अब अमरीकियो न नया हथकडा अपनाया। उन्हाने युद्ध का वियतनामीकरण करने की कोशिश की। जनरल थियू के रूप मे अपनी एक कठपुतली के जरिए उसने वियत-काग और उत्तर वियतनाम क खिलाफ लडाई चलाई लकिन अप्रैल, 1975 म कम्युनिस्टो की फौज न सैगान को घर लिया। थियू दो लाख दक्षिण वियतनामियो क साथ भाग गया। सैगान का नामकरण वियतनामियो न अपन महान नेता के नाम पर ही 'हो ची मिन्ह नगर' किया। नवबर 1975 म दक्षिण और उत्तर वियतनाम क एकीकरण की घोषणा हुई।

वियतनामी किसानो न विश्व के इतिहास म सबसे लबा, निर्मम धोखबाजी स भरा हुआ युद्ध जीतकर कमाल कर दिखाया। उन्हान फ्रासीसी जापानी, ब्रिटिश और अमरीकी साम्राज्यवादी ताकतो को अपन आजाद रहन क दृढ सकल्प स पराजित किया। आज वियतनाम एक स्वाधीन और विकासशील राष्ट्र है। ■■



[illegible]



101
साइस
एक्सपेरिमेंट्स

—आइवर यूशिएल

नन्हे वैज्ञानिकों के लिए लिखी गई एक ऐसी पुस्तक—जो सरल व रोचक प्रयोगों द्वारा विज्ञान के जटिल सिद्धातो को समझने में निश्चित रूप से मदद देगी।

प्रयोगो की एक झलक —

* कैसे चल पाते हैं जल सतह पर कीट?
* नहाने के बाद क्यों लगती है ठड?
* कमरे मे बैठ नापो सितारा की दूरी।

इसके साथ ही वर्षामापी, सूक्ष्मदर्शी, डायनेमो आदि अनेक उपकरण बनाने की सचित्र विधियां।

मूल्य 20/ डाकखर्च 5/ पृष्ठ 120
English edition also available

अनुभवी फोटोग्राफर द्वारा लिखित
घर-बैठे फोटोग्राफी सिखाने वाला



प्रैक्टिकल फोटोग्राफी कोर्स

लेखक ए एच हाशमी

पोर्ट्रेट्स ग्रुप्स स्टिल लाइफ लैण्डस्केप स्पोर्ट्स तथा स्पीड फोटोग्राफी विवाह उत्सव जानवर प्राकृतिक दृश्यावलिया आदि सभी मौकों के फोटो खीचना सीखो।

• डेवलपिंग • कान्टैक्ट • एन्लार्जमेण्ट • रीटचिंग • डाक्यूमेण्ट कापिंग • फिनिशिंग • कलरिंग।

डिमाई साइज 214 पृष्ठ मूल्य 28/ डाकखर्च 6/

[illegible]



चिल्ड्रन्स ट्रिक्स एण्ड स्टंट्स

इस सचित्र पुस्तक मे तुम पाओगे

* ऐसी कुर्सी जिसे तुम नहीं उठा सकोगे।
* ऐसा गुब्बारा, जिसे तुम नहीं फाड सकोगे।
* अदृश्य मानव, जो तुम्हारी आखो के सामने से गायब हो जाएगा।
* अगूठी, जो हवा मे तैरेगी।

तुम्हारे दोस्तों को चकरा देने वाली—रहस्यमय आश्चर्यजनक—लेकिन करने में आसान 70 ऐसी ही अन्य मनोरजक ट्रिक्स।

मूल्य 15/ डाकखर्च 5/ पृष्ठ 120
Also available in English

क्विज टाइम

—आइवर यूशिएल

मूल्य 24/
डाकखर्च 6/
पृष्ठ 128



जन सामान्य तथा विद्यार्थियों के लिए समान रूप से उपयोगी प्रश्नोत्तर शैली में लिखी प्रस्तुत पुस्तक विज्ञान, इतिहास, भूगोल, साहित्य, खेलकूद तथा फिल्म जगत से जुडे आधारभूत 1001 प्रश्नो के सचित्र उत्तर प्रस्तुत करती है।

Also available in English

वेतनभोगी कर्मचारियों के लिए टैक्स-प्लानिंग

डिमाई साइज मूल्य 20 डाकखर्च 5

Master Computer Today For A Better Tomorrow

Computers are invading every facet of a person s life—the home the office the classroom or the play ground Whether in job or business, they are opening up bright new vistas of knowledge and happiness.



– Er V K Jain

- **Computer for Beginners**
- **Basic Computer Programming**

The twin-books are a must for those who are interested in computers their function and operation but are discouraged by their complexities. All is made easy through simple language and instructive illustrations.

The books are designed for mass education as per Computer Literacy Project of NCERT and also conform to course on computers recently undertaken by C B S E

Big Size 192 & 172 pages respectively
Price Rs 36/ each Postage Rs 6/ each

A Complete Guide to PCs



- Creates awareness about modern computer—Hardware & Software & how these can serve as productivity aids.
- Imparts working knowledge of Computer technology Software Packages like Word Star Lotus 1 2 3 dBASE III etc. to an ordinary man avoiding technical words.

Helps in assessing the operations that equire computer

Rs 48/ Postage Rs 6/

अपना कद बढाइये



मूल्य 20/
डाकखर्च 5/
Also available in English

प्रस्तुत है कद लम्बा करने का आजमाया हुआ वैज्ञानिक अनुसधान। इसमे यूरोप और अमरीका में टेस्ट किया हुआ ऐसा सचित्र कोर्स दिया गया है जिसकी मदद से आप केवल 15 मिनट प्रतिदिन अभ्यास द्वारा कुछ ही हफ्तों में अपनी हाइट 10 सेमी तक तो बढ़ा ही सकते हैं।

जूडो कराटे

(जुजुत्सु बॉक्सिग सहित)



मूल्य 20/ डाकखर्च 5/
पृष्ठ 128
Also available in English

हिन्दी म पहली बार प्रकाशित 300 स अधिक दाव पेंचो का सचित्र कोर्स। इसकी मदद स आप चाकू, लाठी भाला आदि के वार से अपना बचाव करके अपने से चार गना ताकतवर हमलावर को भी चुटकियों मे धराशायी कर सकत हैं।

आप भी सीखो करना बुनाई

आधुनिक बुनाई शिक्षा



पस्तक म 200 मे अधिक नई बनातियों से उनी वस्त्र तैयार करन की विधिया दी गई हैं। साथ मे उनकी धलाई व दाग धब्बे छडाने के विभिन्न तरीके भी दिये गये हैं। मूल्य 40/ डाकखर्च 5/

Skill in correspondence ensures
Brighter Career — Faster Promotion... Sure Success In Business...

Rapidex
Self Letter Drafting Course



Big size
Pages 354
Price Rs 48/
Postage Rs 6/

/hether you are an administrator or a upervisor office superintendent or a teno-typist—the skill in correspondence ; an art you must master because lmost every situation every occasion alls for a well-drafted letter And with his skill in hand none can stop you from etting ahead

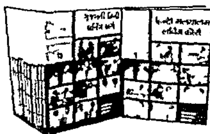
/hile other books teach you to copy eadymade letters given in them this ourse will teach you how to draft a letter f your own choice

FEATURES
- *Sentences and phrases in abundance*
- Tick mark the required ones.
- Arrange in proper order instantaneously
- Shape & mould the way you want to

.. And now make as many letters as you want on the same subject

DIVIDED UNDER 3 SECTIONS
It takes care of your personal and social letters commercial correspondence and applications for job

कोई भी भाषा सीखें



रैपिडैक्स
लैंग्युएज लर्निंग सीरीज
इतनी सरल व ग्राह्य सीरीज कि आप कुछ ही दिनों में काम चलाने लायक कोई भी भारतीय भाषा बोलने और समझने लगेंगे

12 भाषाओं की सीरीज़ की पुस्तकें

हिन्दी तेलुगू लर्निंग कोर्स
हिन्दी कन्नड़ लर्निंग कोर्स
हिन्दी तमिल लर्निंग कोर्स
हिन्दी बंगला लर्निंग कोर्स
हिन्दी गुजराती लर्निंग कोर्स
हिन्दी मलयालम लर्निंग कोर्स

इसी प्रकार प्रान्तीय भाषाओं से हिन्दी सीखने के लिए भी 6 पुस्तकें उपलब्ध

सभी पुस्तकें लगभग 250 पृष्ठों में
प्रत्येक पुस्तक का मूल्य 10/ डाकखर्च 6/ प्रत्येक

Books for Science Students

General Science
A series of five books

The series provides help and guidance on all the major branches of science—*Physics Chemistry Biology Geology & Astronomy*

Price 15/ each Postage 4/ each

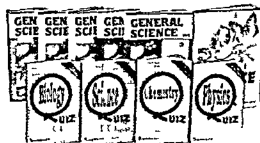
Quiz Series
(Work Books for Physics, Chemistry Biology & Science)

Each book in this series contains 1000 quiz type questions covering almost every branch of particular science with answers

Price 12 each Postage 4 each

Know Science
Know Science offers pupils in the 10 13 age range 1000 questions in the general field of science

Pric Rs 12/ Postage Rs 4/



[illegible]

ट्रिक फोटोग्राफी एड कलर प्रोसेसिग

—ए एच हाशमी

बोतल के भीतर आदमी, हथेली पर नाचती औरत, सेब मे से झाकते बच्चे या पत्ते पर प्रेमिका का फोटो उतारिए



ट्रिक फोटोग्राफी पर हिंदी में प्रथम पुस्तक—जिसमें ट्रिक और इफेक्ट की पूरी पूरी प्रैक्टिकल जानकारी चित्रों के साथ दी गई है इसके अलावा *कलर फोटोग्राफी व कलर प्रोसेसिंग की प्रैक्टिकल जानकारी भी इसमें है जिसकी मदद से आप निगेटिव या टासपेरैंसी की प्रोसेसिग कर सकते हैं और अच्छे कलर एन्लार्जमैन्ट भी बना सकते हैं।* डिमाई साइज पृष्ठ 248

मूल्य 32/ डाकखर्च 6/

[illegible]



मूल्य 24/ डाकखर्च 5/

मूल्य 40 डाकखर्च 6/

तान्त्रिक सिद्धिया

मत्र-अध्येताओ तान्त्रिको एव साधको के लिए ऐसी पथ-प्रदर्शक पुस्तक जिसमे दुष्कर तान्त्रिक क्रियाओ का सरल एव सचित्र विवरण है।

मत्र रहस्य

मत्रा के मूल स्वरूप मत्र चैतन्य मत्र कीलन उत्कीलन, मत्र ध्वनि मत्र विनियाग एव मत्रा के सफल प्रयागा के लिए सचित्र ग्रन्थ।

[illegible] Believe It or Not! [illegible]

ससार के 1500 अद्भुत आश्चर्य



पुस्तक में कुदरत के चमत्कारों अद्भुत ऐतिहासिक घटनाओं बादशाहों की अजीबो-गरीब सनकों साहस और वीरता क बेमिसाल कारनामो पृथ्वी समुद्र और आकाश के जीव जन्तुओं और वनस्पतियों की अनजानी विचित्रताओं का सचित्र वर्णन किया गया है।

मूल्य 36/ डाकखर्च 6/ पृष्ठ 224

- दुर्गा महिमा
- लक्ष्मी महिमा
- शिव महिमा
- गणेश महिमा
- विष्णु महिमा
- हनुमान महिमा



पुस्तकों में महिमाओं के अतिरिक्त पूजा के मन्त्र नैवेद्य आदि की विधिया भी हैं।

मूल्य 18/ डाकखर्च 5/

[illegible]



हमारे पूज्य तीर्थ

बड़े 208पृष्ठ
मूल्य 36/
डाकखर्च 6/

यह पुस्तक आपको तीर्थों की धार्मिक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि उपयोग म आन वाले साज-सामान आने जाने क मार्ग का निर्देश ठहरने आदि की वांछित जानकारी प्रदान करगी।

Out with all Stains

Spot Check



Straightforward tips to cope with all types of stains. A full section on fabrics with a comprehensive chart. Tackle stains on Wallcoverings, Carpets Pots Furniture Metals etc.

यह पुस्तक हिन्दी मे भी उपलब्ध है।

Price Rs 18/ Postage Rs 5/

[illegible]

होम ब्यूटी क्लीनिक



—परयेश हाडा

Also available in English

घर-बैठे ब्यूटी क्लीनिक जैसे मेकअप की विधिया सिखाने वाली एक एसी पुस्तक जिसमे त्वचा की देखभाल शरीर को सुडौल बनाने सबधी व्यायाम तथा आकर्षक हयर स्टायल्स आदि की सपूर्ण जानकारी दी गई है।

बडे 140 पृष्ठ मूल्य 28/ डाकखर्च 6/

[illegible]

गृह-उपयोगी नुक्ते (Home Hints)

Also available In English



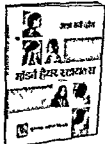
चीजों के लबे समय तक बिना सडे-गले भडारण की विधिया बोतलो, टी-पॉट आदि की सफाई सहित हजारो नुक्तों का एक बहुरगी सचित्र सकलन।

मूल्य 18/ डाकखर्च 5/

[illegible]

मॉडर्न हेयर स्टायल्स

-आशारानी व्होरा



मूल्य 24/ डाकखर्च 6/

इस पुस्तक की मदद से किसी भी प्रकार की हयर सैटिंग घर में ही कीजिए। बॉय कट बॉब कट राउण्ड कट, स्ट्रेट-कट पीजर कट स्टैप्स पोनी टेल रिंगलट्स शाल्डर कट शग-स्टायल या स्विच सज्जा—

[illegible]

लेडीज स्लीमिंग कोर्स



केवल **15** मिनट रोज के इस कोर्स की मदद से आप अपनी कमर और पेट पर चढ़ी फालतू चरबी शीघ्र ही घटा सकती हैं और अपनी कमर का नाप पाच दिन में सात-आठ सेंटीमीटर तक कम कर सकती हैं। ***Also available in English***

मूल्य 20/- डाकखर्च 5/

[illegible]

बेबी हेल्थ गाइड

-आशारानी व्होरा



यह गाइड बच्चों से सबधित सभी विपमा का एक अनूठा एनसाइक्लोपीडिया है, जिसमें उनके शारीरिक रोगों से लेकर उनके मनोविज्ञान तक के सभी पहलुओं को सविस्तार समझाया गया है।

फोटोग्राफ्स 140 रेखाचित्र 42 बडा साइज

मूल्य 40/ डाकखर्च 6/

[illegible]

51 महान आविष्कार
—राजेन्द्र कुमार राजीव



पुस्तक में आज के विज्ञान और आधुनिक सभ्यता का आधार समझे जाने वाले हजारो साल पहले के पहिए के आविष्कार से लेकर आधुनिक युग के राडार, कम्प्यूटर, रॉकेट आदि तक के आविष्कारों का सचित्र वर्णन किया गया है।

बडे 168 पृष्ठ मूल्य 30/ डाकखर्च 6/

जीव-जन्तुओं की आत्मकथाएं

हम जीव-जन्तु
लेखक—रवि लायटू
भूमिका—रामेश बेदी



जीव-जन्तुओं के ससार के 50 सदस्यों की रोचक आत्मकथाए, उनकी जबानी सुनिए—
* वे किस जात बिरादरी के हैं?
* उनकी दिनचर्या क्या है?
* वे क्या खाते-पीते हैं? आदि-आदि

बडे 116 पृष्ठ मूल्य 20/ डाकखर्च : 5/

[illegible]



बेबी रिकार्ड एलबम

Also a ailable in Engl h

इसम आप अपने बच्च क जन्म से अगल पाच वर्ष तक की सीढ़ी-दर सीढ़ी विकास (दत अकरण पहली बार बैठना व चलना आदि) जन्म सबधी विवरणो (जन्म तिथि जन्म का वजन, लबाई व कद्‌नी आदि) के रिकाड के साथ ही प्रत्यक अवसर क स्मरणीय फोटो भी सजा सकत हैं।

मूल्य 45/ डाकखर्च 6/-

[illegible]



इगलिश-हिन्दी मॉडर्न लैटरिग
लेखक ए एच हाशमी

- अक्षरा की बनावट का वर्गीकरण तथा क्रमिक बनावट स्ट्रोक्स लगान क तरीक पेन स्टील तथा फ्लट ब्रश द्वारा लेटरिंग।
- अक्षराकन क मूल सिद्धात। सभी तरह की अग्रजी हिन्दी लेटरिंग करन की विधिया तथा सकडा आकर्षक नमन।

172 पृष्ठ मूल्य 36/ डाकखर्च 6/

अपना मनपसन्द वाद्य बजाना सीखिए

- सितार सीखिए
- गिटार सीखिए
- वायलिन सीखिए
- हारमोनियम सीखिए
- मेडोलिन व बेंजो सीखिए
- तबला व कोंगो-बोंगो सीखिए



मूल्य 22/ डाकखर्च 5/ प्रत्येक

संगीताचार्य श्री रामावतार 'वीर' रचित

युवा पीढ़ी के चहेते वाद्य जिन्हें बिना शिक्षक के सरलता से सीखा जा सकता है और हमारे इन कोर्सों की मदद से आप कुछ ही दिनों में फिल्मी व धुनें निकालने लगेंगे।

 PUSTAK MAHAL

ORDER FORM

Please send me the following books by V P P My address is given below I promise to pay the amount of V.P P on its presentation. I have sent Rs. .... by M O./Draft No.............. Please adjust this amount in the value of books

1 ______

2 ______

3 ______

4 ______

5 ______

- Please note that it is uneconomical for us to send books by V.P.P Ask by V.P.P only when you fail to get locally
- Please do not refuse to accept the V.P.P Honour it and write to us if you have any complaint.
- The V.P.P charges given against each book is subsidised by 20% to 40% in actuals. Besides this we spend Rs. 3/- on each packet on its packing & forwarding

Name & Address

PIN